CID और आहट के लेखक
अजय कुमार(रावण)
समीक्षा
रोमांच और बाल मनोविज्ञान
से भरपूर
(संजीव राणा, IITK alumni)
कौवों
का
हमला

कौवों का हमला

अजय कुमार

Address:
A- 504, Sky height chs,
Evershine city, Vasai east,
Mumbai - 401208

email: screenwriterajay@gmail.com
Mobile no: 8551916207

प्रथम संस्करण: 2018
मूल्य: 150/-

भारत में मुद्रित

आभार

मेरे बेटे उन्नत, जिसकी जिद्द से ये कहानी शुरु हुई, मेरी बीवी जिसने मुझे लिखते वक्त साहस और धैर्य दिया। मेरी बेटी, आशी जो मेरे लिखने का समय खत्म होने का इन्तजार करती, ताकि हमलोग खेल सकें। लेकिन ये किताब लिखना जरूरी था क्योंकि ये उसका जन्मदिन का उपहार है। भगवान का शुक्र है की रौनक और आशुतोष ने इस किताब को एडिट करने के लिए बिना थके मेरा साथ दिया। मोहित शर्मा का मार्गदर्शन महत्वपूर्ण रहा। संदीप चक्रवर्ती और मनोज मिश्रा, दो दोस्त जिन्होंने इस किताब और मुझपर यकीन किया। आप सभी को कोटी कोटी धन्यवाद।

– अजय सिंह

अध्याय 1
मूलचंद का खाना

"जानवरों को परेशान नहीं करना चाहिए, वो बहुत प्यारे होते हैं"

उन्नत किताब में लिखी इस बात को बोलता हुआ सोचने लगा कि क्या ये बात सच है। वह टेबल पर रखी किताब से नजरें उठाकर खिड़की से बाहर देखने लगा। उसके दिमाग में चल रहा था।

"मच्छर भी तो जानवर है"

उसने खिड़की से बाहर नीचे सोसाइटी के पार्क में अपने दोस्तों को ढूँढा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। वह वापस सोचने लगा कि कैसे टीचर ने उसको ये सवाल करने पर डांटा था। उसके दोस्तों ने भी समझाया था कि मच्छर प्यारा नहीं होता है, इसलिए उसको मार सकते हैं। उन्नत इस बात से सहमत नहीं था और अपने सवाल को सही साबित करने के लिए दूसरे जानवर का नाम सोचने लगा, जिसपर लोग अत्याचार करते हैं और उसको याद आया।

वह बोला – "मूलचंद। वो भी जानवर है। सब उसको सड़क का कुत्ता बोलते हैं। उसको खाने को भी नहीं देते। मारने को दौड़ाते हैं सो अलग।"

वह पापा से यह सवाल पूछने के लिए उठा, मगर वापस बैठ गया क्योंकि मम्मी ने बोला था

"नाश्ता कर लिए हो, अब दो घंटे तक पढ़ाई करो"

उन्नत के लिए 2 घंटे का मतलब था, काफी देर तक पढ़ाई के कमरे से बाहर नहीं जाना। उन्नत ने वापस दोहराया

"जानवरों को परेशान नहीं करना चाहिए, वो बहुत प्यारे होते हैं"

इसके साथ ही उन्नत का मन पढ़ाई नहीं करने के लिए विद्रोह करने लगा। वह कुर्सी पर बैठे–बैठे उछल कूद करता, मन बहलाने के लिए एक खेल खेलना शुरु किया। उसने किताब को गौर से देखते हुए आँखों को थोड़ा बंद किया। किताब के शब्द एक से दो में बंट गए। वह आँखों को और ज्यादा मूंदने लगा, जितनी ज्यादा आँखें मूंदता जाता,

किताब के पन्नों से शब्द और तस्वीरें धुँधली हो जाती। इतनी धुँधली की पहचानना मुश्किल हो गया। उन्नत ने मुस्कुराते हुए दोहराया

"जानवरों को परेशान नहीं करना चाहिए। वो बहुत प्यारे होते हैं"

उसने आँखों को थोड़ा और बंद किया, जिससे किताब हवा में तैरती सफेद और काले रंग की धुँधली तस्वीर जैसी दिखने लगी। तभी किचन से "ठप्प" की आवाज आई। उन्नत ने अंदाज लगाया कि कोई किचन में दीवार से टकराया है।

"किचन में कौन है?" उसे लगा, शायद मम्मी ने पूजा खत्म कर ली।

उसने पैर से टटोलते हुए कोल्ड ड्रिंक की बोतल को टेबल के अन्दर की तरफ धकेला। मम्मी ने हिदायत दी थी

"एक बूँद भी पीने की मत सोचना"

उसने जल्दी से बैग को पैर से सरकाकर बोतल के सामने कर दिया। बोतल बैग के पीछे छिप गई। इस बीच वह आँख मींचे हुए किचन में होने वाली हरकतों को ध्यान से सुन रहा था। उसने सुना की किचन में कोई हल्के कदमों से चल रहा है। वह सोचा

"ये मम्मी के चलने की आवाज तो नहीं है"

उसने ध्यान दिया कि पूजा घर से मम्मी के मंत्र पाठ करने की हल्की हल्की आवाज आ रही है।

"मम्मी पूजा कर रही है और पापा इतना धीरे नहीं चलते। तो फिर अभी किचन में कौन है, बिल्ली तो नहीं आ गई?"

उसने ध्यान से सुना कि पैरों के गिरने और उठने पर हल्की सी चिप–चिप की आवाज हो रही है, जो फर्श पर नंगे पैर चलने से होती है। वह सोचा

"किचन में जो भी है, उसने चप्पल नहीं पहन रखा है"

पैरों की आवाज से उसने अंदाज लगाया कि किचन में जो भी है वह बाहर निकल रहा है। वह जानने के मकसद से, चेयर को पीछे झुकाते हुए, कमरे के आधे बंद दरवाजे से बाहर की तरफ झाँका। उसको आशी किचन से निकलती हुई दिखाई दी। उसने नाक सिकोड़ते हुए, हल्की खुली आँखों से आशी को देखा। वह धुंधली दिख

रही थी, छोटी सी रंगीन परछाई की तरह, दूर जाती हुई। उन्नत बोला

"ये मैडम कब जागी? आशी किचन से तुमने क्या लिया, चलो दिखाओ"

वो हड़बड़ाते हुए रुक गई। उसके हाथ में एक काले रंग की पॉलिथीन थी जिसे वह उन्नत को नहीं दिखाना चाहती थी। वह पॉलिथीन छिपाते हुए उन्नत की तरफ मुड़ी, जो उसको घूरकर देख रहा था। आशी बोली

"कुछ नहीं"

"झूठ बोल रही हो"

"मैं सच बोल रहा हूँ"

"तुम लड़की हो, बोलो बोल रही हूँ"

"हाँ मैं बोल रहा हूँ ना"

"ये नहीं सुधरेगी, चलो इधर आओ"

आशी का चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया। उसको बुरा लगा कि वह उन्नत से 3 साल छोटी क्यूँ है? वह भी अगर 7 साल की होती तो उन्नत दादागिरी नहीं कर पाता। आशी के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी। उसे हल्की आँखें बंद किया हुआ उन्नत काफी खूंखार लग रहा था। वह उन्नत से नजरें चुराते हुए, आँखे ऊपर नीचे और दायें बायें घुमाने लगी, तभी उन्नत गुर्राया

"चलो इधर"

आशी छोटे छोटे कदम बढ़ाते हुए कमरे के दरवाजे तक बढ़ी और वहाँ जाकर रुक गई। उन्नत ने आवाज भारी करके बोला

"हाथ आगे करो"

आशी ने यह सब कुछ बिना हाथ आगे किए हुए एक साँस में बोल दिया

"कल रात का चिकन है, मूलचंद के लिए"

वह साहस जुटाने की कोशिश कर रही थी लेकिन हिम्मत जवाब दे गई। आँखों में हल्के आँसू भर आए। उन्नत मूलचंद का नाम सुनकर खुश हो गया। उसको याद आने लगा कि कैसे मूलचंद उसे

और आशी को देखकर खुश हो जाता है, उनके ऊपर उछलकर गाल चाटने लगता है। उन्नत ख्यालों की दुनिया से बाहर निकला और उसको आशी की बात अच्छी लगी तो डांटने का मतलब ही नहीं था। आशी अभी भी डरी हुई उन्नत को देख रही थी। उन्नत ने सोचा कि डांट दूँ क्या, लड़की को ऐसे छोड़ दूंगा तो इसकी हिम्मत बढ़ जाएगी और मेरा खौफ खत्म हो जाएगा। वह बोला

"मम्मी से पूछा?"

उन्नत को पता था कि उसने नहीं पूछा है। आशी बोली

"हाँ"

"झूठ बोलोगी। मम्मी के पास ले चलूँ?"

उन्नत ने जिस तरह तौलते हुए अंदाज में आशी को देखा और ये सवाल पूछा आशी की जान अटक गई। उसने जल्दी से अपना झूठ मान लिया। उन्नत के दिमाग में एक आईडिया पनपने लगा कि वह मूलचंद को रात का बासी चिकन खिलाने का बहाना बनाकर घर से बाहर जा सकता है। आशी उसको इतनी देर चुप देखकर कल्पनायें करने लगी कि पता नहीं इस झूठ के लिए उन्नत कितनी डाँट लगाने वाला है, कहीं थप्पड़ भी ना मार दे। तभी उन्नत ने बोला

"झूठ बोलना बुरी बात है, सॉरी बोलो"

"सॉरी, अब जाऊँ?"

"रुको मैं भी चलता हूँ, मूलचंद तुम्हारे हाथ से नहीं खायेगा"

आशी उसको साथ लेकर नहीं जाना चाहती थी मगर अब बहुत देर हो चुकी थी। उन्नत ने आँखें पूरी खोल दी थी। उसने कुर्सी सीधी करते हुए किताब बंद किया, फिर जल्दी से कोल्ड ड्रिंक की बोतल उठाता हुआ, कुर्सी से खड़ा हो गया। आशी बोली

"भैया जल्दी चलो, मम्मी आ गई तो नहीं जाने देगी"

उन्नत ने ध्यान दिया कि पूजा घर से अभी भी मम्मी के मंत्र पढ़ने की आवाज आ रही है। वह बोला

"मम्मी को बिना बताये जाओगी, गलत बात"

"लेकिन मम्मी नहीं जाने देगी"

उन्नत उछलता कूदता हुआ कमरे से बाहर आया। कोल्ड ड्रिंक की बोतल को फ्रिज में रखने के बाद आशी के हाथ से पॉलिथीन छीन लिया। उसने थोड़ा जोर से बोला ताकि उसकी आवाज मम्मी के मंत्र उच्चारण से ना दबे

"मम्मी, हमलोग नीचे जा रहे हैं, मूलचंद को कल रात का बचा हुआ चिकन खिलाने"

तुरंत आवाज आयी

"कहीं जाने की जरूरत नहीं है, चुपचाप होमवर्क करो"

मम्मी वापस पूजा में लग गई। उन्नत का उत्साह थोड़ा कम हुआ लेकिन उसने हार नहीं मानी। आशी मासूम सा चेहरा बनाते हुए उन्नत को देख रही थी। उन्नत एक पल के लिए रुका, फिर खुफिया चेहरा बनाता हुआ जल्दी जल्दी हॉल की तरफ चल दिया। वहाँ जाकर उसने देखा कि पापा मोबाइल पर कुछ काम कर रहे हैं। बीच बीच में वह हंस भी देते। उन्नत उनके पास जाकर बोला

"पापा हम लोग नीचे जाएँ?"

"हम्मम्मम"

आशी ने ध्यान दिया कि पापा ने उन्नत की तरफ देखा भी नहीं, शायद उन्होंने सुना भी ना हो। उन्होंने हम्मम्मम बोला था, जिसका मतलब हाँ भी हो सकता है और ना भी। आशी समझ गई कि बाद में मम्मी पूछेगी तो पापा बोलेंगे

"मैंने कब बोला!"

फिर उन्नत याद दिलाएगा

"आप जब मोबाइल पर काम कर रहे थे"

"मुझे याद नहीं"

पापा तो बच जाएंगे मगर मम्मी हम बच्चों को नहीं छोड़ेगी। लेकिन आशी ये भी जानती थी कि उन्नत को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। वह पापा से हाँ सुनकर, "ये, ये" करता, हाथ उठाकर नाचता दरवाजे तक पहुँच गया। वह एक हाथ में काली पॉलिथीन संभालता हुआ, दूसरे हाथ से जूते को एड़ी के ऊपर चढ़ाने लगा। आशी ने

बुदबुदाते हुए खुद से बोला

"इसलिए मैं उन्नत के साथ नहीं जाता हूँ, खुद भी फँसेगा और मुझे भी फँसायेगा"

आशी अभी ये सोच ही रही थी कि उन्नत ने चुटकी बजाते हुए उसका ध्यान अपनी तरफ खींचा, हाथ को सवालिया अंदाज में पलटते हुए इशारा किया, "रुकी क्यों हो?", आशी दुविधा में पड़ी हुई थी कि जाए या नहीं। एक तरफ मूलचंद के साथ खेलने का लालच, दूसरी तरफ मम्मी से डाँट खाने का डर। उन्नत गुस्से में मुँह बनाते हुए उसको चलने का इशारा किया और वह डर कर दरवाजे की तरफ बढ़ने लगी, लेकिन उसकी नजर पापा पर थी ये उम्मीद करते हुए कि पापा उन लोगों को बाहर जाते देख लें। वो रोकेंगे नहीं, ये तो आशी को पूरा यकीन था, लेकिन उन्होंने मोबाइल से नजर नहीं उठायी। आशी दरवाजे पर पहुँचकर अपना जूता हाथ में उठा ली, बाहर जाकर पहनने के लिए, लेकिन उन्नत ने उसको रोककर पहले जूते की तरफ इशारा किया और फिर उसके छोटे छोटे पैरों की तरफ। आशी को समझ नहीं आया और वह सवालिया नजरों से उन्नत को देखने लगी। उन्नत ने कहा

"जूता पहनो"

"लिफ्ट में पहन लूंगा ना"

"नहीं, यहीं पहनो"

आशी को बहुत गुस्सा आया उन्नत की इस दादागिरी से, लेकिन अभी बहस का समय नहीं था। वह शू रैक के पास बैठकर अपना जूता पहनने लगी। उसने जल्दी में दाहिने पैर का जूता बाएं में और बाएं पैर का दाहिने में पहन लिया। तब तक उन्नत भागकर कुर्सी दरवाजे के पास खींच लाया। जल्दी से वह कुर्सी पर चढ़कर दरवाजे की ऊपर वाली चिटकनी को खींचते हुए दरवाजे को धक्का मारा। मगर चिटकनी नीचे नहीं आयी। वह फंस जाती थी और दरवाजे को बहुत ज्यादा जोर से धक्का देने के साथ नीचे खींचने पर ही खुलती थी। उसने दूसरी बार दरवाजे पर धक्का लगाया और साथ में चिटकनी

को नीचे खींचा। दरवाजा उम्मीद से ज्यादा आगे चला गया और चिटकनी खिसक कर नीचे। उन्नत को ताज्जुब हुआ कि उसके अन्दर इतनी ताकत कहाँ से आ गई। जवाब मिला, जब उसने नीचे देखा कि आशी दरवाजे से धक्का देने के बाद चिपक कर खड़ी है। उन्नत उसकी तारीफ किए बिना कुर्सी से नीचे उतर आया और बोला

"पापा ये वाली कुण्डी मत लगाया करो, खोलना बहुत मुश्किल होता है"

पापा ने इस बात पर भी रियेक्ट नहीं किया, वह मोबाइल में काफी व्यस्त थे। उन्नत ने आशी को बाहर करके दरवाजा बंद कर दिया।

***

आशी इंडिकेटर पर लाल रंग के अक्षर को 3 से 4 में बदलते हुए ध्यान से देख रही थी। फिर 4 बदल कर 5 बन गया। आशी यह देखती हुए बोली

"भैया, मम्मी बहुत डांटेगा"

"घर जाना है? लिफ्ट नहीं आया है, जा सकती हो"

"नहीं जाऊँगा, लेकिन मम्मी बहुत डांटेगा"

"पापा से पूछ लिया ना, तो मम्मी वाली बात कट हो गई"

"पापा को कुछ नहीं पता। मम्मी का नहीं जाने वाला ही आर्डर है सिर्फ"

"पापा ने हमम्म्म बोला ना और बाहर जाते हुए देखा भी था"

"नहीं देखा और ना उन्होंने कुछ सुना"

उन्नत भी सोचने लगा कि पापा ने उनको जाते हुए देखा था या नहीं। वह याद करने की कोशिश करने लगा कि जब वो दोनों घर से निकल रहे थे तब पापा किधर देख रहे थे। मगर उन्नत को ऐसा कुछ याद नहीं आया क्योंकि उसने पापा की तरफ देखा ही नहीं था, इस डर से की पापा उसको जाने नहीं देंगे। उसने सिर हिलाते, होठों को चबाते हुए फैसला किया की अब कुछ नहीं हो सकता। इसलिए इस बारे में सोच कर कोई फायदा नहीं। उसने आशी की तरफ देखा जो

लिफ्ट के इंडिकेटर की तरफ अभी भी देख रही थी। उस पर 7 लिखा हुआ था और लिफ्ट का दरवाजा खुल गया। आशी ने उन्नत की तरफ सवालिया नजरों से देखा कि रुकें या चलें। उन्नत जल्दी से लिफ्ट में घुसकर पीछे जाकर कोने में चिपक गया। वह ख्यालों में खो गया की नीचे जाकर क्या खेलेगा, क्रिकेट या फिर फुटबॉल या फिर चोर पुलिस। आशी भी उसके पीछे लिफ्ट में घुसकर उछलते हुए ग्राउण्ड फ्लोर का बटन दबाने की कोशिश में लग लगी मगर वह बटन तक पहुँच नहीं पा रही थी। उन्नत को सपने में खोये हुए जब थोड़ी देर लिफ्ट नहीं चलने का एहसास हुआ तो उसने बिना ख्यालों से निकले हुए लिफ्ट का बटन दबाने को हाथ बढ़ाया लेकिन आशी ने उसका हाथ रोक दिया। वह बोली

"मैं दबा रहा हूँ ना"

उन्नत ने जैसे हाथ बढ़ाया था वैसे ही वापस कर लिया। वह अभी आशी को रुलाना नहीं चाहता था। आशी ने उछलकर ग्राउण्ड वाला बटन दबा दिया, लिफ्ट झटके के साथ नीचे जाने लगी।

अध्याय 2
मछली की चोरी

उन्नत और आशी की बिल्डिंग वाली सोसाइटी के सामने कचड़ा गाड़ी आकर रुकी। गाड़ी के पीछे मूलचंद, हल्के भूरे रंग का तगड़ा छोटे कद का कुत्ता, तेजी से दौड़ता हुआ पहुँचा। वह अपने पैरों को रोकने की कोशिश करने लगा, पैरों के नाखून सड़क से घिस गए और वह ठप्प की आवाज के साथ कचड़ा गाड़ी से टकरा गया। वह पिछले 10 बिल्डिंग से कचड़ा गाड़ी का पीछा करने के कारण, जोर जोर से हॉफ रहा था। उसने इन सब के बावजूद भी गाड़ी के ऊपर कचरे के ढेर में फंसे ब्रेड के पैकेट से नजर हटने नहीं दी। मूलचंद ब्रेड के पैकेट तक पहुँचने के लिए उछला लेकिन आधे दूर से ही नीचे गिर गया। उसको कचड़ा उठाने वाले आदमी ने हाथ घुमाकर डराया। वह बोला

"चल भाग यहाँ से"

मूलचंद भूँक—भूँक कर, ब्रेड के पैकेट की तरफ इशारा कर रहा था, इस उम्मीद में की कचड़ा उठाने वाला आदमी समझ जाए और ब्रेड का पैकेट उसकी तरफ फेंक दे। मगर ऐसा नहीं हुआ। कचड़े वाले ने कचड़ा उठाने के बाद, गाड़ी पर जोर से हाथ मारकर इशारा किया और गाड़ी आगे बढ़ गई। मूलचंद वहीं रुक गया क्योंकि इस बिल्डिंग के आगे उसका इलाका नहीं था। उसको सुनाई दिया

"मूलचंद, मूलचंद"

ये दोनों अवाज सुनकर, मूलचंद का उदास लटका हुआ चेहरा चहक उठा। वह जल्दी से बिल्डिंग की तरफ मुड़ा, देखा की आशी और उन्नत बिल्डिंग गेट के अंदर खड़े "मूलचंद, मूलचंद" पुकार रहे हैं। मूलचंद पूरी तेजी से उनकी तरफ दौड़ा। आशी और उन्नत उसको ऐसे तेज दौड़ते देखकर चिल्लाये

"नहीं मूलचंद, आराम से"

मूलचंद ने नहीं सुना, उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था, उसने रफ्तार और बढ़ा दी। मूलचंद ने गेट के पहले खुद को रोकने की कोशिश भी नहीं करी और सीधा गेट से आकर भिड़ गया। आशी और उन्नत के बिल्कुल पास। वो दोनों तब तक गेट के पास बैठ गए थे और गेट से हाथ निकालकर दोनों भाई बहन उसका सिर सहलाने लगे। उन्नत बोला

"चोट लगी बाबू"

"बैड डॉग, तेज भागने को मना किया था ना"

मूलचंद गेट से मुँह घुसाता हुआ, कभी आशी के हाथ चाटता तो कभी उन्नत का चेहरा। दोनों बच्चे, मूलचंद को अपने गोद में लपेट लेना चाहते थे। मगर यह संभव नहीं था क्योंकि गेट के पास खड़े सिक्योरिटी गार्ड अंकल, मूलचंद को बिल्डिंग के अंदर घुसने नहीं देंगे, उन्नत बोला

"मूलचंद देखो, तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ"

उन्नत मूलचंद को चौंका देना चाहता था जब अचानक से आशी बोली

"चिकन पसंद है ना तुमको"

उन्नत का पॉलिथीन खोलने वाला हाथ रुक गया। वह बोला

"तुमने मूलचंद को बता दिया, मैं सरप्राइज देने वाला था उसको"

"सॉरी भैया"

उन्नत ने बुरा मानते हुए बुदबुदाना शुरु किया और जल्दी से गार्ड के कमरे की तरफ दौड़ा। वहाँ से प्लास्टिक का डब्बा उठा लाया, चिकन डालकर, मूलचंद के सामने कर दिया। मूलचंद फटाफट गेट के अन्दर मुँह घुसाकर डब्बे में रखे चिकन को खाने लगा। वह अपना लंबे, लाल, खुरदरे जीभ से चिकन को खींचकर मुँह में डाल लेता। उन्नत उसका खाता हुआ मुँह हाथ में लेकर सहलाने लगा। मूलचंद के जबड़े हिले जा रहे थे। आशी बोली

"भैया उसको आराम से खाने दो न"

उन्नत आशी को चिढ़ाने के लिए मूलचंद के जबड़ों को जोर से हिलाकर छोड़ दिया। आशी उन्नत पर गुस्साती हुई बचाने के अंदाज में मूलचंद के बिल्कुल करीब आ गई। आशी का पूरा ध्यान मूलचंद के चिकन खाने पर था और उसने देखा कि चिकन डब्बे के पेंदी में है और मूलचंद का मुँह वहाँ तक पहुँच नहीं पा रहा। उसने हाथ बढ़ाकर प्लास्टिक के डब्बे को उठाकर मूलचंद के मुँह की तरफ कर दिया। अब मूलचंद का मुँह आराम से डब्बे के अन्दर पहुँच पा रहा था। दोनों हाथों से डब्बे को पकड़े हुए, आशी उसके दांतों के बीच चिकन को कुचलते देख रही थी और मूलचंद को यूँ मजे में चिकन खाते देख, आशी के मुँह में भी पानी आ गया। वह हाथ बढ़ाकर एक चिकन का पीस उठाने लगी तब उन्नत ने उसके हाथ पर झट्ट से मारा और बोला

"नो, ये मूलचंद का है"

"मैं खा सकता हूँ, मूलचंद मेरा दोस्त है"

"नो"

"क्या है"

आशी नाराज हो गई, मगर उन्नत जानता था कि वह तुरंत मान जायेगी। मूलचंद के बालों को सहलाते हुए, उन्नत की नजरें अब सोसाइटी में अपने दोस्तों को खोजने में लग गई। उसने देखा कि गार्डन में बूढ़े दादा दादी गोला बनाकर एक्सरसाइज कर रहे हैं, कोई बच्चा नहीं है। उन्नत ने बिल्डिंग के दूसरे विंग की तरफ ढूँढते हुए नजरें घुमाई और देखा 2 आन्टी मॉर्निंग वाक कर रही थी। उन्होंने इशारे से जमीन पर बैठना बुरी बता बताते हुए उठने को बोला। उन्नत जल्दी से खड़ा हो गया क्योंकि ये आन्टी मम्मी की बहुत अच्छी दोस्त हैं और आशी को भी कंधे से पकड़कर खड़ा करने लगा। आशी एक हाथ में डब्बा पकड़े हुए मूलचंद को खिला रही थी और दूसरे हाथ से अपना कंधा छुड़ाने लगी। उन्नत ने धीरे से उसको समझाया

"आन्टी जाकर मम्मी से बतायेंगी, यही चाहिए तुम्हे"

आशी ने सिर घुमाकर देखा और आन्टी को देखते ही, हडबडाते हुए, डब्बा छोड़कर, खड़ी हो गई। आन्टी की तरफ देखते

हुए, कपड़ों से धूल झाड़ने लगी। आन्टी वहाँ से चली गई और दोनों की सांस में सांस लौटी। उन्नत वापस कार पार्किंग और दूसरे विंग में ताक झाँक करने लगा और उसने देखा की उसका कोई दोस्त नीचे नहीं है बल्कि बड़े उम्र वाले भैया लोग भी नहीं है। वह बोला

"लगता है, सब एग्जाम की तैयारी में लगे हैं, इतना पढ़ कैसे लेते हैं?"

आशी ने देखा मूलचंद वापस डब्बे में मुँह घुसाये चिकन खाने की कोशिश कर रहा है, जिससे डब्बा हिल रहा है जैसे गिर जायेगा। आशी ने गेट को पकड़ते हुए नीचे झुककर डब्बे को मूलचंद के मुँह के बिल्कुल करीब सटा दिया। उन्नत वहीं खड़ा बोरियत कम करने के लिए हाथ को दायें बायें घुमाने लगा लेकिन बोरियत कम नहीं हुई, फिर वह जमीन पर पत्थर ढूँढने लगा, पैर से किक मारने के लिए। आशी का हाथ डब्बा पकड़े—पकड़े दर्द करने लगा और उसने डब्बे को गेट से सटाकर मूलचंद के बिल्कुल पास रख दिया। उन्नत को बोली

"भैया मुझे गोदी आना है"

"गोदी नहीं"

"मैं थक गया हूँ ना"

"तो ऊपर घर जाओ"

उन्नत बिना आशी की तरफ ध्यान दिए, इधर उधर नजरें घुमाता हुआ बोल रहा था। आशी उसको एक टक देख रही थी कि कब उन्नत को दया आयेगी और उसको गोदी उठा लेगा। उन्नत के रवैये से उसको समझ आ गया कि यह संभव नहीं है। वह पास में ही खड़े स्कूटी पर जाकर बैठ गई और वहाँ से मूलचंद को चिकन खाते हुए देखने लगी। फिर उसने अपने घुटने पर हाथ को रखकर, पंजों से अपने गाल को सहारा दे दिया। उन्नत फिर से बोर होने लगा और अपने दोस्तों पर गुस्सा करने लगा कि वो खेलने क्यूँ नहीं आये, ऐसा क्या पढ़ाई कर रहे हैं और उसको एहसास हुआ

"अभी पापा को भी साथ लाया होता, तो हमलोग घूमने जा सकते थे"

उन्नत अब थोड़ा उदास होने लगा था कि फालतू में नीचे आया, यहाँ खेलने को भी नहीं मिला और ऊपर जाकर कहीं डांट ना खानी पड़ जाए। वह गेट से बाहर देखने लगा और उसको कल शाम की बात याद आने लगी जब वह पापा के साथ ड्रोन 472 सीरीज लेकर आया था, उसमें कैमरा भी बाँध सकते हैं। दुकानदार ने बताया था कि ड्रोन का बैलेंस बहुत अच्छा है लेकिन वह अभी तक उसको चला नहीं पाया था। उन्नत सोचने लगा कि वह ड्रोन लेकर आया क्यूँ नहीं वरना कितना मजा आता फिर उसको याद आया कि ड्रोन तो पूजा वाले कमरे में रखा है जहाँ मम्मी पूजा कर रही है। वह बोरियत भरी नजरों से सड़क पर गुजरने वाली उन 2 कारों को देखने लगा, उनके आगे बने "ब्रांड के चिन्ह" को देखकर समझ गया कि दोनों महंगी गाड़ियां है। तभी वह तेज आवाज से चौकन्ना हो गया। देखा सामने से तेज आवाज करती एक बाइक आयी और तेजी से दूसरी तरफ चली गई। थोड़े देर में एक साइकिल वाला गुजरा जो साइकिल के पीछे पानी का बोतल बांधे था तभी सामने से उसको आइसक्रीम वाला गुजरता हुआ दिखाई दिया जो उन्नत को देखते ही जोर जोर से बोलने लगा

"आइसक्रीम, आइसक्रीम!"

उन्नत करीब करीब हमेशा उससे आइसक्रीम खरीदता था लेकिन उसका आज मन नहीं था, तभी आशी बोली

"भैया मूलचंद को घर ले जाएंगे?"

"और मम्मी?"

उन्नत ने देखा, मूलचंद पूरा चिकन खा गया था। वह बोला

"मम्मी से पूछना भी मत, डांट खाओगी"

उन्नत पॉलिथीन को डस्टबिन में फेंक कर, डब्बे को गार्ड अंकल के कमरे के पास रख दिया और वापस गेट पर आकर बाहर देखने लगा। साथ में, मूलचंद के मुँह के अन्दर हाथ डाल रहा था। उसको ऐसा करते देख, आशी स्कूटी से उतरकर मूलचंद के पास आ गई और उसका सिर सहलाने लगी। वह नहीं चाहती थी कि मूलचंद उन्नत का ज्यादा अच्छा दोस्त बन जाए। उन्नत बिल्डिंग से थोड़ी दूर

पर इलेक्ट्रिक ट्रांसफार्मर के बगल वाले गुलमोहर के पेड़ को देख रहा था। पेड़ कौवों से भरा हुआ था। 50 से भी ज्यादा। वह सोचा

"ये कौवे बहुत शांत हैं"

उन्नत ने कभी कौवों को शांत बैठे हुए नहीं देखा था। उसको शक हुआ और वह गेट से चेहरे को सटाता हुआ तौलती हुई नजरों से पेड़ पर बैठे कौवों को देखने लगा। कौवे धीरे–धीरे एक डाल से दूसरे डाल पर उछलकर नीचे की तरफ बढ़ रहे थे। उन्नत को लग गया कि कौवे कोई बदमाशी करने वाले हैं। मगर क्या? उन्नत अपनी ठुड्डी पर ऊँगली टैप करने लगा। आशी उसको ऐसा करते देखकर बोली

"भैया क्या सोच रहे हो?"

उन्नत ने पेड़ से नजर हटाकर सड़क पर दौड़ाई, देखा मछलीवाली आन्टी सिर पर मछलियों का टोकरा लिए जा रही है। उन्नत को अब समझ आया कि मामला क्या है। वह बोला

"मछलीवाली कौवों वाले पेड़ के नीचे से गुजरने वाली है" उन्नत को अपनी बात का यकीन होने लगा की "कौवे, मछलियों पर हमला करेंगे"

उन्नत चिल्लाने लगा

"मछली वाली आन्टी, आन्टी, मछली वाली आन्टी"

मछलीवाली आन्टी काफी दूर थी। उसने उन्नत की आवाज नहीं सुनी। मूलचंद ने भौंकना शुरु कर दिया। आशी हडबडा कर कभी उन्नत की तरफ देखती और कभी गेट के बाहर। उसने देखा, उन्नत गेट से निकलने के लिये दौड़ा, दूसरी तरफ से मूलचंद भी उन्नत के साथ साथ दौड़ने लगा और उन्नत गेट से बाहर निकलने वाला था, जब वहाँ गार्ड अंकल दौड़कर पहुँच गए। वो मोबाइल पर बात करते हुए, उन्नत को बोले

"बाहर नहीं बेटा"

"कौवे आन्टी की सारी मछलियाँ खा जायेंगे"

"नहीं बेटा, मैं आपको बाहर जाने नहीं दे सकता"

"मैं बस, वो। सामने। मछलीवाली आन्टी के पास जा रहा हूँ।"

गार्ड अंकल जो मोबाइल पर बात करने में व्यस्त थे। उन्नत की बात पर ध्यान नहीं दिया और गेट से टिककर मोबाइल पर बात करने लगे। उन्नत मछलीवाली आन्टी को जानता था। उसको पता था मछलियाँ लुटने पर आन्टी को बहुत दुःख होगा। उसने पेड़ की तरफ देखा, कौवे पंख हिलाने लगे थे। वह बोला

"ये तो हमला करने वाले हैं"

उन्नत सोचने लगा कि वह मछलीवाली आन्टी को बचाने के लिए क्या कर सकता है तभी बगल में आशी चिल्लाने लगी

"आन्टी, कौवे मछली चुराने वाले हैं"

उन्नत ने सोचा

"आशी की धीमी आवाज गार्ड अंकल तक को सुनाई नहीं दे रही होगी, आन्टी को क्या सुनाई देगी"

उन्नत खुश हुआ कि आशी रुकी नहीं बल्कि लगातार चिल्लाती रही। उन्नत को एक आईडिया आया। वह बैठ गया और मूलचंद का सिर पकड़कर पहले मछलीवाली आन्टी की तरफ घुमाकर दिखाया फिर पेड़ पर बैठे कौवों की तरफ। उसके कान में कुछ बोला

"समझ गए ना, जाओ जल्दी"

मूलचंद मछलीवाली आन्टी की तरफ भागने लगा। आशी जानना चाहती थी कि उन्नत ने मूलचंद को क्या समझाया है। मछलीवाली आन्टी पेड़ के नीचे पहुँची और कौवों ने उसकी तरफ उड़ना शुरू किया। एक साथ 50 से भी ज्यादा कौवे। आशी और उन्नत एक तरफ मूलचंद को मछलीवाली आन्टी के पास पहुँचते हुए देख रहे थे और दूसरी तरफ कौवों को। दोनों यही सोच रहे थे

"अब क्या होगा, मूलचंद आन्टी की मछलियाँ बचा पाएगा, क्या?"

उन्नत के पास इसका कोई जवाब नहीं था। मूलचंद ने दौड़ते हुए तेजी से नीचे बढ़ रहे कौवों की तरफ भूँकना शुरू किया। मूलचंद की आवाज काफी जोरदार थी। मछलीवाली आन्टी मूलचंद को यूँ अपनी तरफ तेजी से भौंककर दौड़ते हुए देखकर डर गई। वह

चिल्लाने लगी तभी उसकी नजर, ऊपर से बढ़ रहे कौवों पर गई। उसकी चीख उसके गले में ही अटक गई। समझ नहीं पा रही थी कि टोकरा वहीं छोड़ कर भागे या क्या करे। मूलचंद कौवों को डराने के लिए, जोर जोर से भूँकने लगा लेकिन कौवे नहीं डरे। उन्होंने भी काँव–काँव करके मूलचंद को डराया और टोकड़े को छूने ही वाले थे।

उन्नत ने देखा कि गार्ड अंकल भी फोन कट करके उसके बगल में खड़े हो गए हैं। उसने सोचा कि गार्ड अंकल अब आन्टी की मदद करेंगे लेकिन वह तो दाँत चिआरते हुए मोबाइल पर ये नजारा रिकॉर्ड करने लगे। आशी मूलचंद के लिए बहुत परेशान थी तभी उसने देखा कि मूलचंद ने एक लम्बी छलाँग मारी। वह जमीन से उड़कर टोकरे की तरफ बढ़ता हुआ कौवों के सामने आ गया। कौवे मूलचंद में फंसते हुए उसके साथ एक काले गेंद की तरह उछलकर जमीन पर गिरे। मछलीवाली आन्टी को जैसे होश आया और मौका देखकर वह जल्दी से भाग खड़ी हुई। उन्नत और आशी ने देखा कि मूलचंद जमीन पर गिरा हुआ कौवों से जूझ रहा है। आशी बोली

"भैया, इतने सारे कौवे और मूलचंद अकेला"

उन्नत को भी मूलचंद की फिक्र थी, उसने पहले ही जमीन से पत्थर उठा लिया था। वह बोला

"मूलचंद जल्दी भागो वहाँ से"

"हाँ, मूलचंद जल्दी, भागो"

उन्नत ने पत्थर फेंक कर कौवों को मारना शुरू कर दिया। कौवे मूलचंद के ऊपर से बिखरने लगे। आशी भी उन्नत के हाथ से पत्थर लेकर कौवों को मारने लगी। वह बोली

"हमारे पास आ जाओ, मूलचंद। जल्दी"

"तुम पत्थर बर्बाद मत करो, एक भी निशाना नहीं लग रहा"

उन्नत को डर था कि पत्थर मूलचंद को ना लग जाये। मूलचंद कौवों को अपने ऊपर से धक्का देता हुआ उठा, वह उन्नत और आशी की तरफ भागने की कोशिश करने लगा तभी कौवों ने उसपर फिर से हमला किया और उसको जमीन पर गिरा दिया। ये देखकर दोनों भाई

बहन जल्दी जल्दी पत्थर फेंकने लगे। गार्ड अंकल को भी जोश आ गया और उन्होंने लाठी हवा में लहराते हुए, चिल्लाते, "भागो–भागो यहाँ से", मूलचंद की तरफ दौड़े। वह कौवों पर लाठी चलाने लगे और उनकी लाठी कुछ कौवों को लगी। एक कौवा जिसका नाम उन्नत ने कलूटा रखा था क्योंकि वह सबसे काला कौवा था, उसका सिर फूट गया। कौवों के सरदार ने कुछ कौवों के साथ गार्ड अंकल पर झपट्टा मारा। मूलचंद जो जमीन पर गिरा हुआ लगातार भौंककर कौवों को डरा रहा था, वह उठ खड़ा हुआ, जिससे कौवे तितर बितर हो गए। मूलचंद भागकर उन्नत और आशी की तरफ दौड़ने लगा। उन्नत और आशी खुश होकर एक साथ बोले

"वैरी गुड मूलचंद" ... "जल्दी आ जाओ। जल्दी"

उन्नत ने जल्दी से मेन गेट को धक्का देकर खोल दिया ताकि मूलचंद सीधा अन्दर आ जाये। इधर आशी ने कौवों पर पत्थर मारने की रफ्तार तेज कर दी, एक कौवे को पत्थर लगा और वह जमीन पर गिर कर छटपटाने लगा। अगला पत्थर गार्ड अंकल को लगा और उनका सिर फूट गया। आशी को यकीन नहीं हुआ अपने निशाने पर। वह बोली

"सॉरी अंकल"

"पत्थर मारना बंद करो"

गार्ड अंकल ने बोला लेकिन उन्नत और आशी का ध्यान नहीं गया। वैसे भी, अभी आशी को सिर्फ मूलचंद दिखाई दे रहा था, जिसके पीछे कौवे पड़े थे। मूलचंद भूँकता हुआ, उन्नत और आशी के पास पहुँचा और उन्होंने उसको गेट से अंदर ले लिया। उन्नत बोला

"बहुत बढ़िया, मूलचंद"

मूलचंद उन्नत और आशी के पैरों के पास आकर छिप गया। उन्नत ने मूलचंद को गोद में उठाया और आशी का हाथ पकड़कर कार पार्किंग की तरफ दौड़ने लगा। उन्नत ने कहा

"आशी तुम कौवों की तरफ पत्थर फेंकती रहो"

आशी उन्नत के तेज कदमों के बराबर दौड़ने की कोशिश कर

रही थी, लेकिन उसका पैर सीधा नहीं पड़ रहा था। क्योंकि उसने जूते उल्टे पैरों में पहन रखे थे इसलिये उसके पैर लड़खड़ा गए। आशी का बैलेंस बिगड़ा और वो गिर गई। उसको सामने से कौवे उड़कर आते हुए दिखाई दे रहे थे। उसने हडबडा कर कौवों की तरफ पत्थर फेंकना शुरु कर दिया। एक पत्थर आशी के पैर के पास गिरा और दूसरा दाहिने की दीवार तक पहुँचा। एक भी पत्थर कौवों को नहीं लगा। कौवे उड़ते हुए आशी के पास पहुँचने ही वाले थे तभी उन्नत ने एक हाथ से कौवों को भगाते हुए, आशी को सहारा देकर उठाया। आशी जैसे उठने को हुई, उसको अपने पैरों में दर्द महसूस होने लगा। मूलचंद जो लगातार कौवों पर भौंक रहा था, उसने मौके की नजाकत को समझते हुए अपने भौंकने की आवाज और बढ़ा दी जिससे कौवों की रफ्तार धीमी पड़ गई मगर कौवे रुके नहीं।

उन्नत को पास में इलेक्ट्रिक रूम दिखाई दिया, जिसका दरवाजा भी खुला हुआ था। वह आशी को उठाते हुए, इलेक्ट्रिक रूम में घुस गया और उसके पीछे पीछे मूलचंद। कौवे बहुत नजदीक आ गए थे और वो कमरे में घुस ही जाते की तभी उन्नत ने एक झटके में आशी को जमीन पर रखा और पीठ से दरवाजे को धक्का देकर बंद कर दिया। आशी बोली

"मूलचंद तुम ठीक हो न?"

उन्नत ने देखा कि आशी मूलचंद को पकड़े हुए उसके शरीर पर लगी चोटों को देख रही है। उन्नत भी दरवाजे से लग कर बैठते हुए देखा कि मूलचंद के शरीर पर कई जगह छोटे छोटे घाव हो गए हैं जिनसे खून बह रहा है। उन्नत ने देखा आशी डर से कांप रही है। वह बोला

"आशी तुम्हे पैर में चोट लगी?"

"हाँ"

"दर्द हो रहा है?"

"नहीं, लेकिन कौवे ने जब सिर पर चोंच मारा तब बहुत तेज दर्द हुआ था"

"अब कौवे नहीं आ पायेंगे"

कौवे लोहे के दरवाजे पर चोंच मार रहे थे। पंखों के फड़फड़ाहट और काँव–काँव के बीच टन–टन की आवाज साफ सुनाई दे रही थी, आशी का कांपना बढ़ गया और मूलचंद ने लगातार भौंकना शुरु कर दिया। उन्नत बहादुर बनने का दिखावा कर रहा था जबकी वह भी बहुत डर गया था।

इलेक्ट्रिक रूम में बहुत देर बैठे बैठे उन्नत और आशी को गर्मी लगने लगी और वो बेचौन होने लगे। मूलचंद आशी से चिपका हुआ था, उन्नत ने देखा कि आशी ने जूते उल्टे पैरों में पहन रखे हैं। वह बोला

"इसलिए कौवे तुम तक पहुँच गए, वरना उनकी ये मजाल"

उन्नत उसके जूते उतार कर दाहिने पैर में दाहिने पैर का जूता और बाएं पैर में बाएं पैर का जूता पहना दिया। आशी कुछ बोलना चाहती थी मगर डर से उससे बोला नहीं जा रहा था। उसने सिर्फ हल्का मुस्कुरा दिया और फिर मूलचंद को गले लगाकर लाड़ करती हुई उसकी पीठ सहलाने लगी। उन्नत ने आशी और मूलचंद को डरा हुआ देखकर हँसाने की कोशिश किया। वह मूलचंद की पीठ थपथपाते हुए बोला

"मूलचंद बहुत बहादुर है। मछलीवाली आन्टी को बचाने के लिए मूलचंद को मिलते हैं 3 स्टार्स"

"ये, ये। मूलचंद तुम्हे 3 स्टार मिले है। वॉऊ"

आशी मूलचंद के पैर पकड़ कर सेलिब्रेशन स्टाइल में हवा में हिलाने लगी। उन्नत को कौवों की आवाज थोड़ी कम होती सुनाई दी। वह दरवाजे के गैप से बाहर देखने लगा। कौवे दरवाजे से थोड़े दूर कार पार्किंग लॉट के बाहर मंडरा रहे थे। गार्ड अंकल, कौवों को डंडा घुमा–घुमाकर डरा रहे थे तभी उनके साथ 3 और गार्ड अंकल आ गए। सभी डंडे से कौवों को डराने लगे, पीछे से आशी बोली

"उन्नत भैया, क्या हुआ?"

"कौवे अभी बाहर ही घूम रहे हैं"

आशी भी दरवाजे के गैप से बाहर देखती है जहाँ गार्ड अंकल कौवों को भगाने में लगे हुए थे। वह बोली

"भैया तुम भी वही सोच रहे हो"

"मूलचंद को घर ले जाने का?"

"हाँ"

"तुम तो हमेशा यही सोचती हो"

"इसको चोट लगा है, इलाज करना पड़ेगा"

उन्नत भी यही सोच रहा था और उसने देखा कि धीरे–धीरे कौवे उड़कर वहाँ से चले गए। दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए गार्ड अंकल ने बच्चों को बाहर आने के लिये कहा। उन्नत ने एक बार फिर तसल्ली किया और उसे कौवे नहीं दिखे। उन्नत ने आशी का हाथ पकड़ा और दोनों को कुछ नहीं बोलने का इशारा करते हुए, धीरे से दरवाजा खोला। उसने सोचा

"बाहर की तरफ जाने का कोई फायदा नहीं है वरना कौवे फिर उनको देखकर पीछे पड़ सकते हैं"

उन्नत वहीं दीवार से चिपक कर चलता हुआ, साइकिल रखने वाली जगह पर पहुँचा। वहाँ छोटी सी दीवार थी जिसको कूदकर वह अन्दर लिफ्ट के पास पहुँच जाया करता था। आशी बोली

"मम्मी बहुत गुस्सा होगी या मान जायेगी? मूलचंद को देखकर उन्होंने कुत्ता बोला तो मुझे बहुत गुस्सा आएगा"

क्योंकि उन्नत का ध्यान आशी के सवालों से ज्यादा कौवों पर था कि कहीं वो इधर भी ना पहुँच जाए। इसलिए उसने आशी के सवालों पर दिमाग लगाये बिना उसको दोनों हाथों से उठाकर दीवार पर बिठा दिया। वह बोला

"कूद जाओ, धीरे से"

आशी कूदकर दूसरी तरफ पहुँच गई, उन्नत ने फिर दीवार के ऊपर से मूलचंद को उसकी तरफ पहुँचा दिया। आशी बहुत मुश्किल से मूलचंद को अपने गोद में संभालने लगी तब उन्नत खुद भी दीवार पर कूदकर चढ़ा और उछलकर दूसरी तरफ पहुँच गया। उन्नत मूलचंद

को आशी के गोद से लेने के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन आशी ने देने से मना कर दिया। वह मूलचंद को गोद में संभालते हुए धीरे धीरे लिफ्ट की तरफ बढ़ने लगी। उन्नत जल्दी से लिफ्ट तक पहुँच गया और शुक्र था कि लिफ्ट नीचे ही थी। उन्नत लिफ्ट का दरवाजा खोलकर आशी को जल्दी आने का इशारा करने लगा। वह मूलचंद को गर्दन से पकड़कर, मुश्किल से उठाते हुए, थोड़ा तेज दौड़ी लेकिन मूलचंद का पैर उसके पैरों में उलझ रहा था। वह वापस धीरे–धीरे चलने लगी। उन्नत को ऐसा लग रहा था जैसे आशी को बहुत साल लग जायेंगे लिफ्ट तक पहुँचने में।

अध्याय 3
प्रवेश वर्जित

लिफ्ट उन्नत के फ्लोर पर रुकी। मम्मी दरवाजे पर लगी भगवान की मूर्ती की पूजा कर रही थी। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, लिफ्ट से दोनों बच्चे मूलचंद को लिए हुए बाहर निकल रहे है। मम्मी जल्दी–जल्दी मंत्र उच्चारण खत्म करने लगी। उन्नत उनके मंत्र उच्चारण के आवाज में बदलाव से समझ गया कि मम्मी काफी ज्यादा गुस्सा है। उन्नत आशी का हाथ पकड़कर जल्दी से घर के अंदर मम्मी के साइड से घुसने लगा। मम्मी ने मंत्र पढ़ते हुए हाथ दिखा कर उनको बाहर ही रुकने को कहा। उन्नत रुक गया लेकिन आशी, मम्मी से नजर बचा कर, नीचे देखती हुई, मूलचंद को लेकर जल्दी से घर में घुसने लगी। मम्मी ने उसे टी शर्ट पकड़कर पीछे खींच लिया। आशी मूलचंद को अपने गोद में पकड़े हुए दरवाजे के बाहर खड़ी हो गई। मम्मी बोली

"मोबाइल बंद करिये"

मम्मी ने पापा को बोला मगर उन्होंने मोबाइल बंद नहीं किया। उन्नत और आशी दोनों को ऐसा लगा कि पापा ने नहीं सुना। मम्मी ने जल्दी जल्दी पूजा खत्म की और वो दोबारा पापा को मोबाइल बंद करने के लिए बोलना चाहती थी। मगर उससे पहले, लिफ्ट आकर फिर रुकी। मछलीवाली आन्टी और गार्ड अंकल बाहर निकले। गार्ड अंकल बच्चों और मूलचंद को गुस्से से देखते हुए रुमाल से अपने सिर से बहते खून को रोक रहे थे। उन्नत उनको देखकर डर गया कि अब तो पक्का पिटाई होगी। मम्मी ने पूछा

"ये सिर से खून कैसे बह रहा है"

"इनके कारण, सम्भालिये, बहुत बदमाश हो गए हैं"

मम्मी, उन्नत और आशी को गुस्सा कर देखी, उनका गुस्सा बढ़ गया जब उन्होंने मूलचंद के शरीर पर ढेर सारे चोट और उनसे

बहता हुआ खून देखा। वो जल्दी से कमरे में घुसी और पापा के हाथ से मोबाइल छीनकर टेबल पर रख दी। पापा ऐसे मोबाइल बंद करने पर गुस्सा होते हुए उठे और सामने दरवाजे पर सबको देखकर समझ गये कि मामला नाजुक है। वो बोले

"क्या हुआ भाई? सब कहाँ से जंग करके आ रहे हैं?"

"ये दोनों पत्थर चला रहे थे"

पापा ने देखा की बच्चे मासूम चेहरा बनाए उनकी तरफ देख रहे हैं, इस उम्मीद में की बचा लो लेकिन मम्मी चाहती थी की पापा बच्चों की खबर लें, वह बोले

"हर दिन कोई ना कोई तुम लोगों की शिकायत लेकर आ ही जाता है"

"पापा लेकिन"

मम्मी बोली

"चुप! और कितनी बार मना किया है कुत्ता नहीं लाना है"

वह दोनों को पीटने के लिए आगे बढ़ी, पापा बोले

"मारना मत, बच्चे हैं"

"ये दोनों बहुत शैतान हो गए हैं, क्यों पत्थर फेंक रहे थे? कहाँ से सीखा?"

मम्मी ने उन्नत का कान पकड़कर मरोड़ दिया और वह चिल्लाने लगा। आन्टी बीच में बोल पड़ी

"इन बच्चों ने बहुत अच्छा काम किया है। इनको इनाम मिलना चाहिए, सजा नहीं"

"आन्टी, पत्थर मारा है इन्होंने और ये देखिये मना करने के बाद भी सड़क का ये जख्मी कुत्ता घर ले आयी है"

आशी और उन्नत को अच्छा नहीं लगा, वो टोकने ही वाले थे, जब आन्टी ने मम्मी को मूलचंद के जख्मी होने की पूरी बात बतायी। मम्मी को यकीन नहीं हुआ लेकिन पापा बहुत खुश हुए और बच्चों को शाबाशी देने के बाद, घर के अन्दर से रुई और एंटीसेप्टिक ले आये। वह बोले

”शाबाश बच्चों, क्या भईया जी, शिकायत करने आ गए। बच्चों ने मदद करने के लिए पत्थर चलाया था ना। आप पर नहीं। आपने भी तो इनकी मदद की। की या नहीं?“

”लेकिन इनका रोज का यही हाल है। मेरी आँख फूट जाती तो या सिर फट कर दो टुकड़े हो जाता तो“

पापा ने गार्ड अंकल को चुप कराया

”हुआ तो नहीं, अभी तो ये हल्का–सा छिला है“

पापा गार्ड अंकल के चोट पर एंटीसेप्टिक लगाते उससे पहले ही उन्नत और आशी रुई लेकर मूलचंद के घाव पर एंटीसेप्टिक लगाने लगे। उन्नत बोला

”मम्मी क्या हम मूलचंद को घर में रख सकते हैं?“

”प्लीज मम्मा“

”नहीं। सुसु पॉटी करके पूरा घर गन्दा कर देगा“

आशी बोली

”मम्मा ये मुझसे भी तेज है, सुसु पॉटी बाथरूम में करेगा“

”हाँ मम्मी, आपने नहीं देखा कि कैसे आशी गिर गई तो मूलचंद ने भौंक–भौंक कर कौवों को रोक लिया“

इतना सुनना था कि मम्मी ने आशी को पकड़ लिया और उसको ऊपर से नीचे देखी। आशी डर गई की अब उसकी पिटाई होगी, उसको उन्नत पर गुस्सा भी आया कि मम्मी को फालतू ये बात बताने की क्या जरूरत थी। मम्मी बोली

”कहाँ चोट आयी है?“

आशी, सिर ना में हिलाकर, बताना चाहती थी कि सब सही है लेकिन मम्मी ने उसको गोल घुमाकर ऊपर से नीचे जाँच कर तसल्ली करी। आन्टी जो एक पॉलिथीन लेकर आयी थी खोलकर उसमें से दो मछली निकाली और मूलचंद को देने लगी। मूलचंद की खुशी का ठिकाना नहीं था, वह मछली खाने के लिए उछलने लगा। आन्टी बोली

”ये मूलचंद के लिए लेकर आयी थी। जानवर अच्छा है, आप घर पर रख लो“

"यहाँ खुद के रहने की जगह नहीं है, कुत्ता कहाँ रखूं, और आप ये मछली इसको नीचे ही खिला दीजियेगा"

उन्नत ने बोला

"मम्मी इसको कौवे नहीं छोड़ेंगे"

"कुछ नहीं होगा, अब कौवे भी चले गए होंगे, कौन सा इसका इंतजार कर रहे होंगे"

"ठीक है मम्मा, लेकिन इसको यहाँ मछली तो खा लेने दो"

मम्मी इस बात के लिए मान गई और उन्नत ने जल्दी से दरवाजे पर लगा अखबार उठाकर मूलचंद के सामने रख दिया। पापा बोलना चाहते थे की ये आज का अखबार है लेकिन तब तक मछलीवाली आन्टी ने अखबार पर मछलियाँ रख दी। मूलचंद फटाफट मछलियाँ खाने लगा और आशी उसके घाव पर मलहम लगाने लगी। उन्नत ने देखा कि मम्मी ध्यान से मूलचंद को फटाफट मछलियाँ खाते देख रही है और उनका गुस्सा भी खत्म हो गया है। आन्टी बोली

"उन्नत, आशी और मूलचंद तुम लोगों ने मुझे आज जैसे बचाया, उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद"

उन्नत और आशी को मछलीवाली आन्टी की बात अच्छी लगी और दोनों सोच रहे थे कि अच्छा काम किया तब भी मम्मी मूलचंद को घर में रुकने नहीं दे रही है। वो दोनों मूलचंद के सारे जख्मों पर मलहम लगा चुके थे। इधर मछलीवाली आन्टी ने मम्मी से मांग कर पानी पी। गार्ड अंकल ने अपने सिर पर एक बैंडेज चिपका कर शिकायत करना चालू किए

"आप बच्चों को इतना छूट मत दीजिये"

"बस करो, लगता है तुम बड़े ही पैदा हुए थे"

आन्टी ने गार्ड अंकल को हड़काया और मम्मी बोली

"नहीं इनको समझाना जरूरी है, वरना हाथ से निकल जायेंगे"

आन्टी ने गार्ड अंकल को इशारे से चलने को कहा और वो दोनों जाने ही वाले थे जब मम्मी बोली

"इस कुत्ते को भी ले जाइये"

आशी और उन्नत का दिल बैठ गया और उनकी पकड़ मूलचंद पर बढ़ गई। वो उसको छोड़ना नहीं चाहते थे। मम्मी ने उनको ऐसा करते हुए देखा। वह बोली

"चलो हटो उसके पास से और कमरे में जाओ"

दोनों की आँखों में आँसू भर गए और उन दोनों ने पापा की तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखा। आशी बोली

"पापा मूलचंद को घर में रखना है"

"पापा कौवों ने मूलचंद पर फिर से हमला किया तो"

"नहीं। जिद्द नहीं करते। भैया आप इसको ले जाओ"

उन्नत मम्मी की तरफ मुड़ता हुआ बोला

"प्लीज मम्मी"

"नहीं"

"ठीक है मम्मी, मैं मूलचंद को नीचे छोड़ आऊँ?"

वह मासूम सा चेहरा बनाये, मम्मी की तरफ देखता हुआ, प्रार्थना कर रहा था कि वो हाँ ही कहे। पापा बोले

"जाने दो, बच्चे का मन रह जायेगा"

"ठीक है। दौड़कर जाओ और भागते हुए आओ"

***

उन्नत मूलचंद को लेकर बिल्डिंग के नीचे गया मगर उसको बाहर सड़क पर नहीं छोड़ा। वह मूलचंद को लेकर बिल्डिंग के छोटे वाले गार्डन में बैठाते हुए बोला

"तुम यहीं रहना, बाहर मत जाना और कोई आये तो भूँक कर डरा मत देना। मैं थोड़ी देर में आऊँगा फिर खेलेंगे"

मूलचंद उन्नत को देखता हुआ हर बात पर सिर हिला रहा था जैसे सही में सब बात समझ रहा हो। वह उन्नत से लिपटने लगा और उसको जाने नहीं देना चाहता था। उन्नत देख रहा था कि मूलचंद के आँखों में आँसू भरे हुए हैं। वह बोला

"तुम्हे छोड़ कर जाना मुझे भी पसंद नहीं है। जल्दी पढ़ाई खत्म करके फटाफट तुम्हारे साथ खेलने आता हूँ। अब रो मत, चलो मैं जाता

हूँ"

उन्नत अपने आँसू पोछते हुए, मूलचंद के सिर को सहलाया और उसके सिर पर पुच्ची देकर घर के लिए दौड़ गया।

***

कौवे पेड़ पर बैठकर काँव–काँव कर रहे थे और उनका सरदार, उन्नत के अनुसार 40–45 साल के खूसट, खिजाब लगाये अंकल टाइप दिखने वाला, कर्कश आवाज में बोला

"काँव–काँव"

कलूटा अपने सिर से बह रहे खून को अपने पंजे से साफ कर रहा था और दूसरा कौवा जिसका नाम उन्नत ने काकोर रखा था क्योंकि उसकी आँखें कुछ ज्यादा ही बाहर निकली हुई थी, वह अपने सिर को सहला रहा था। कलूटा बोला

"काँव–काँव, (लाठी से सिर फोड़ दिया)"

"काँव–काँव, (बच्चों ने पत्थर फेंक कर मेरा सिर फोड़ दिया)"

"काँव–काँव, (भाई पत्थर की चोट से बड़ी लाठी की मार है, दर्द से दिमाग ही काम नहीं कर रहा)"

सरदार बोला

"काँव–काँव, (बदला लेंगे भाईलोग) काँव–काँव, (आप लोग परेशान मत हो)"

"काँव–काँव, (सरदार, मिलेंगे तब तो बदला लेंगे) काँव–काँव, (और उससे कौन सा मेरा घाव भर जायेगा)"

"काँव–काँव, (जब उनके शरीर में चोंच गड़ाओगे) काँव–काँव। (तब सुकून मिलेगा)"

"काँव–काँव, (सरदार, बहुत दर्द हो रहा है)"

कलूटा अपने सिर को काकोर के शरीर से रगड़ने लगा। सरदार बोला

"काँव–काँव, (बच्चे और कुत्ते दोनों बिल्डिंग के अंदर हैं) काँव–काँव, (इनको अब समझ आएगा हमसे पंगा लेने का मतलब)"

कौवों के सरदार का गुस्सा उबल रहा था और उसने जोर से

काँव–काँव करके एलान किया

"काँव–काँव, (कोई कौवा इस बिल्डिंग के सामने से नहीं हटेगा। सुबह शाम नजर रखो जब तक कुत्ता और बच्चे हमें नहीं मिल जाते) काँव–काँव"

सारे कौवों ने जोर जोर से काँव–काँव करके अपनी सहमती जताई। सरदार कौवे ने अपने पंख फैला कर उनको आशीर्वाद दिया और उड़कर चला गया। इधर कौवे बिल्डिंग पर नजर जमा कर बैठ गए। तुरंत ही कलूटा बोला

"काँव–काँव, (ये कुत्ता पालतू तो नहीं है। सड़क पर ही घूमता रहता है। इतनी देर हो गई, दिख क्यूँ नहीं रहा)"

"काँव–काँव, (छिपकर बैठा होगा)"

"काँव–काँव, (ऐसे तो इन्तजार नहीं होता, क्यूँ ना इस सिक्योरिटी वाले का काम तमाम कर दें। बहुत लाठियां चला रहा था)"

"काँव–काँव, (हाँ बदला तो इससे भी लेना है।)"

"काँव–काँव, (कुछ कौवे आओ मेरे साथ। एक दम अचानक से हमला करना कि संभल ना पाए)"

5 कौवे सामने आ गए।

***

उन्नत अपने पढ़ाई के कमरे में सिर पर हाथ रखकर बैठा हुआ था। मम्मी ने हिदायत दी थी

"तुम कमरे से तब तक बाहर नहीं निकलोगे, जब तक कि पूरा होमवर्क नहीं कर लेते"

यही बात उसके दिमाग में घूम रही थी और वह डरता हुआ टेबल पर अपने सारे होमवर्क वाली कॉपियों को निहार रहा था। वो जोर से साँस छोड़ते हुए बोला

"पूरा होमवर्क करने में महीना भर लग जायेगा, इतना काम एक दिन में कैसे संभव है"

उसने मुड़कर देखा तो पापा वहीं पास में सोफे पर लेटे हुए उपन्यास पढ़ रहे थे। उन्नत ने बहुत उम्मीद के साथ उनको बोला

"पापा?"

"चुपचाप होमवर्क करो उन्नत"

"पर इतना सारा होमवर्क है"

पापा ने कुछ नहीं बोला और तभी दरवाजे पर नॉक होने लगा। उन्नत ने झुककर देखा, उसको दरवाजे और फर्श के बीच से आशी के पैरों की छोटी छोटी उंगलियाँ दिख रही थी।

"अभी जाओ आशी"

"भैया दरवाजा खोलो, मुझे आना है। पापा दरवाजा खोलो"

"नहीं, मैं होमवर्क कर रहा हूँ ना"

पापा ने अपने गले से लटक रहे इयरफोन को कानों में लगा लिया। उन्नत ने ध्यान से देखा कि इयरफोन मोबाइल से जुड़ा हुआ नहीं है। उन्होंने उपन्यास का अगला पन्ना पलटा। उन्नत बोला

"आशी बाहर रहो, मैं थोड़ी देर में आता हूँ"

आशी ने नॉक करना नहीं छोड़ा और तभी चिल्लाना शुरु कर दी। उन्नत चौकन्ना हो गया कि ये आशी को क्या हुआ और उसकी आवाज आयी

"नहीं मम्मी। मुझे अंदर जाना है। भैया और पापा के साथ खेलना है"

"नहीं। तुम बाहर बैठकर टीवी देखो। अन्दर नहीं जाना है"

उन्नत को समझ आ गया कि मम्मी आशी को उठाकर जबरदस्ती ले जा रही है। मम्मी के खौफ से उन्नत भी जल्दी से टेबल की तरफ मुड़कर पढ़ने लगा। बाहर आशी चिल्लाती हुई मम्मी से रिक्वेस्ट कर रही थी, जिसका असर मम्मी पर नहीं हुआ। फिर थोड़ी देर में आशी की आवाज आनी बंद हो गई। उन्नत पापा की तरफ कुछ बोलने के लिए मुड़ा लेकिन उसके बोलने से पहले पापा बोले

"मम्मी को बुला दूँ?"

इतना बोल कर पापा ने 2 पन्ने एक साथ फटाफट पलट दिए। उन्नत को समझ नहीं आया कि ऐसा पापा ने गुस्से में किया या फिर यूं ही। लेकिन वह नहीं चाहता था कि मम्मी कमरे में आ जाये। वह

चुपचाप बैठ गया और सोचा की थोड़ी देर खिड़की से बाहर देख लूँ फिर पढ़ाई करूंगा। नीचे थोड़ी दूर में सड़क दिखाई दे रही थी। जिसपर काफी सारे मोटरबाइक, कार, ट्रक और ट्रैक्टर। वह गौर से इनको आते जाते हुए देखने लगा।

ग्रॉसरी स्टोर के ऊपर वाले पेड़ पर उसकी नजर रुक गई। वहाँ कौवे बैठे दिखाई दे रहे थे। वह कौवों को देखकर चौंक गया। कौवे कभी इस पेड़ पर नहीं बैठते थे। उन्नत ने टेबल का ड्रावर खोलकर दूरबीन निकाला। दूरबीन से निशाना लगाकर कौवों को देखने लगा। उसने देखा कौवे बिल्डिंग की तरफ उड़कर आ रहे हैं और उनमें सबसे आगे कलूटा है जिसका सिर फूटा हुआ है। वह बोला

"ये तो कलूटा है"

उन्नत का जासूसी दिमाग चलने लगा। वह समझ गया की मामला गड़बड़ है, वह बोल पड़ा

"ये कौवे बिल्डिंग की तरफ क्यूँ आ रहे हैं?"

"होमवर्क करो"

"कर रहा हूँ। बस ये देख लो पापा"

"होमवर्क रिलेटेड है?"

"नहीं, लेकिन अर्जेंट है"

"जल्दी बोलो"

"कौवे क्या हमपर दोबारा हमला कर सकते हैं?"

"नहीं। क्यूँ?"

"पक्का? आप ये देखो कौवे क्या कर रहे हैं"

पापा ने सुना, थोड़ी देर सोचा और उपन्यास साइड चेयर पर रखकर उसके पास पहुँचे। उन्होंने उससे दूरबीन ले लिया और बोले

"किधर?"

उन्नत ने खिड़की से बाहर दाहिने तरफ वाले पेड़ की तरफ इशारा किया। पापा उस तरफ दूरबीन घुमाकर देखने लगे। उन्नत बोला

"क्या बोलते हो पापा?"

"कौवे बैठे है, तो?"

"और उनमे से कुछ बिल्डिंग की तरफ आये हैं, बदला लेने"

"बदला! किससे बदला?"

"मुझसे, आशी और मूलचंद से"

"उन्नत कहानी मत बनाओ, वो मेरा काम है"

पापा ने उन्नत को दूरबीन वापस दी और बोले

"होमवर्क कर लो ज्यादा काम आएअअअअअ"

उनकी बात बीच में ही रुक गई, जब नीचे कैंपस से हल्की हल्की चिल्लाने की आवाज आने लगी

"मार डाला। मार डाला"

आवाज हल्की थी, लेकिन 7वी मंजिल तक आयी थी। इसका मतलब कोई बहुत तेज चिल्लाया था। उन्नत और पापा, खिड़की से चिपक कर नीचे की तरफ देखने लगे, जहाँ सड़क से लोग मेन गेट की तरफ दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे। खिड़की से मेन गेट नहीं दिखता था तो पता नहीं चला कि वहाँ क्या हो गया है। उन्नत बोला

"ये तो गार्ड अंकल की आवाज थी"

"अच्छा! देखकर आता हूँ कि क्या हुआ है"

"मैं भी चलता हूँ"

"नहीं। नो। बिल्कुल नहीं"

उन्नत ने दुखी वाला मुँह बना लिया, गुस्से में दोनों हाथ बाँध कर बोला

"सब मुझे ही बोर करते हैं"

"मम्मी गुस्सा होगी। समझो उन्नत"

पापा जल्दी से दरवाजा खोलकर, बाहर हॉल की तरफ चले गए। उन्नत, मम्मी के डर से, कमरे के बाहर नहीं निकला। उसने सुना कि आशी बोली

"मैं भी जाऊंगा पापा"

उसने शायद उनके पैरों को पकड़ लिया था, तभी पापा बोले

"आशी पैर छोड़ो, ले चल रहा हूँ न"

उन्नत को ये बिल्कुल पसंद नहीं आया कि आशी पापा के साथ बाहर जा रही है और वह यहाँ कमरे में बैठा हुआ है। उसको तब और जलन होने लगी जब पापा ने आशी को गोद में उठा लिया और आशी के खुशी से चहकने की आवाज आने लगी। उन्नत ने मम्मी को पापा से पूछते हुए सुना

"आवाज सुनी ना आपने"

"हाँ, वही देखने जा रहा हूँ आकर बताता हूँ"

"अच्छा धनिया भी लेते आना"

"ओके"

उन्नत अपने कमरे के दरवाजे के पास से छिपकर देखा, कैसे पापा आशी को गोद में लिए हुए पॉकेट में पर्स रखते, लिफ्ट के पास पहुँच गए। उन्नत को उम्मीद थी कि अब उसको पापा साथ चलने को बुला लेंगे लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। लिफ्ट आ गई थी और पापा आशी को लेकर लिफ्ट के अन्दर चले गये।

उन्नत उदास कुर्सी पर आकर बैठ गया और सोचने लगा की लिफ्ट में क्या हुआ होगा

"आशी उछल उछलकर लिफ्ट का बटन दबाने की कोशिश कर रही होगी। वह हमेशा ऐसा करके सबका दिल जीतना चाहती है, फिर पापा हँसते हुए उसको उठाकर लिफ्ट के बटन के पास पहुँचा देंगे फिर मैडम जी ग्राउंड वाला बटन दबाकर बोलेंगी। मैं जीत गया। मैं जीत गया"

अध्याय 4
गृह प्रवेश

उन्नत कुर्सी पर बैठा हुआ, दूरबीन से पेड़ पर बैठे कौवों पर नजर रखे हुए था। उसने देखा कि कलूटा कौवों के साथ वापस पेड़ पर लौट आया। वह बोला

"इन कौवों का गार्ड अंकल की चीख से कुछ तो रिश्ता है!"

यह संभावना उसको बेचौन करने लगी तभी उन्नत को ध्यान आया कि जाते वक्त आशी के हाथ में वाल्की–टॉकी का हैंडसेट था। उन्नत ने अपना वाला हैंडसेट कमरे से खोज कर निकाला। उसने आशी के हैंडसेट पर फोन लगाया। आशी ने फोन उठा लिया। वह बोली

"भैया, मैं आशी बोल रहा हूँ। ओवर एंड आउट"

"आशी तुम नीचे पहुँच गई? ओवर एंड आउट"

"हाँ पहुँच गया, ओवर एंड आउट"

"कौवों ने क्या किया? ओवर एंड आउट"

"कौवे गार्ड अंकल का खाना ले कर उड़ गए। उनपर हमला भी किया, ओवर एंड आउट"

"क्या? ओवर एंड आउट"

"सच्ची! ये कौवे बहुत खतरनाक हैं, ओवर एंड आउट"

"पापा से बात करवाओ, ओवर एंड आउट"

"वो अंकल लोगों से बात कर रहे हैं, ओवर एंड आउट"

"जरूरी बात है आशी। मूलचंद के बारे में, ओवर एंड आउट"

आशी मूलचंद का नाम सुनकर, जल्दी से पापा के पास पहुँचकर, उनको हैंडसेट दे दी

"पापा, उन्नत आपसे बात करना चाहता है"

"बोलो उन्नत, अरे बोलो न"

"पापा, आपने ओवर एंड आउट नहीं बोला, ओवर एंड आउट"

"उन्नत बोलो क्या बात है, ओवर एंड आउट"

"कौवे मूलचंद पर भी हमला कर सकते हैं, पापा उसको अकेले छोड़ना सही नहीं है ओवर एंड आउट"

"मूलचंद को तुमने बिल्डिंग के बाहर छोड़ा है ना? ...... ओवर एंड आउट"

"सॉरी पापा, नो। वो छोटे वाले गार्डन में है। आप प्लीज उसको ऊपर ले आईये, ओवर एंड आउट"

"मम्मा बहुत गुस्सा होगी, ओवर एंड आउट। रुको। अच्छा ठीक है, क्या वो कमरे में चुपचाप रह सकता है? ओवर एंड आउट"

"हाँ मैं उसको समझा दूँगा, ओवर एंड आउट"

"ठीक है, ओवर एंड आउट"

उन्नत ने वॉकी–टॉकी डिस्कनेक्ट कर दिया और बेचैन कमरे में घूमने लगा। करीब 15 मिनट बीते होंगे, उसका वॉकी–टॉकी फिर बजने लगा। वह हैंडसेट उठाकर बोला

"हाँ, ओवर एंड आउट"

"मैं पापा बोल रहा हूँ। ओवर एंड आउट"

"हाँ पापा, बोलिये। ओवर एंड आउट"

"हमलोग दरवाजे के बाहर हैं। मम्मी कहाँ है? ओवर एंड आउट"

"बाहर वाले कमरे में, ओवर एंड आउट"

"तुम मम्मी को अंदर वाले कमरे में भेज कर दरवाजा खोलो। ओवर एंड आउट"

"ठीक है। ओवर एंड आउट"

उन्नत ने हैंडसेट रख दिया और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वो उछलते कूदते कमरे से बाहर निकला और ड्राइंग रूम में पहुँचते ही, शरीफ बच्चा बनता हुआ, उछलना कूदना बंद करके शांती से धीरे धीरे चलता हुआ मम्मी को खोजने लगा। वह हॉल में नहीं दिखी

"मम्मी, मम्मी?"

"हाँ, उन्नत"

"कहाँ हो, आप"

मम्मी हॉल के पर्दे को हटाती हाथ में धुले कपड़े लिए अन्दर झाँकी और बोली

"बोलो"

"मम्मी, पेंसिल चाहिए"

"पेंसिल इतनी जल्दी खत्म कर दिया"

"हाँ"

"कितनी पेंसिल खत्म करते हो, खा जाते हो क्या?"

"आपको पता है न कितना ज्यादा होमवर्क मिला है। लिखते लिखते, मेरे हाथ दर्द कर रहे हैं"

उन्नत ने अपना हाथ आगे कर दिया, उँगलियों को दिखाते हुए। वह बोला

"देखिये यहाँ का चमड़ा टाइट हो गया है"

उसका इतना कहना था कि मम्मी का दिल पसीज गया। उन्नत खुश हुआ कि ये तरीका मम्मी पर 25वी बार काम कर गया। मम्मी कपड़े फैलाना बंद करके उन्नत के पास आयी और उसकी ऊँगलियां छूते हुए प्यार से देखी। उसके सिर पर एक पुच्ची दी और बोली

"वैरी गुड"

उन्नत का सिर सहलाते हुए समझाने लगी

"बस 10 दिन में एग्जाम खत्म, उसके बाद घूमने चलेंगे"

"यस मम्मी, पेंसिल?"

"मैं लाती हूँ"

मम्मी अलमीरा से स्टेशनरी बॉक्स से पेंसिल लेने चली गई। उन्नत को इसी वक्त का इंतजार था। उसने फौरन दरवाजा खोल दिया। बाहर आशी और पापा खड़े थे। पापा के हाथ में मूलचंद था। उन्नत उसको देखकर खुश हो गया और उसने पापा को इशारे से समझा दिया कि मम्मी अंदर वाले कमरे में गई है

"मैदान साफ है"

पापा जल्दी से दबे पाँव हॉल में घुसे। उन्नत ने मूलचंद को अपने गोद में ले लिया, वह चुप था, शायद आशी ने पहले ही चुप रहने का समझा दिया था। उन्नत उसको लेकर अपने कमरे में भाग गया। खिलौनों के बॉक्स के अंदर मूलचंद को डालता हुआ, उसके पास एक प्लास्टिक का बॉल चबाने के लिए रख दिया। वह बोला

"मूलचंद हल्ला मत करना, बिल्कुल भी नहीं"

जैसे मूलचंद सब कुछ समझ रहा हो, उसने हाँ में सिर हिलाया तभी मम्मी कमरे में पेंसिल लेकर पहुँच गई। वह बोली

"उन्नत ये लो पेंसिल। तुम वहाँ खिलौने के पास क्या कर रहे हो?

उन्नत हडबडाते हुए उठा और उसका दिल जोर से धड़कने लगा कि मम्मी ने उसकी चोरी पकड़ ली। वह बोला

"वव–वो, देख रहा हूँ। आप पेंसिल दो मुझे पढ़ाई करनी है"

उसने ज्यादा नहीं बोलना ही सही समझा। मम्मी उन्नत को शक की नजरों से देखते हुए, उसको पेंसिल पकड़ा दी। वह उनसे नजरें नहीं मिला रहा था और जल्दी से पेंसिल लेकर, पढ़ने वाली चेयर पर बैठ गया। पापा भी कमरे तक पहुँच गये। वो डरे हुए थे की कहीं मम्मी को मूलचंद के घर में होने का पता ना चल जाये वरना उनको भी डांट पड़ेगी।

"बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को दो"

उन्नत और पापा, दोनों मम्मी के बोलने का इंतजार कर रहे थे क्योंकि तभी समझ में आता कि मम्मी को मूलचंद के बारे में पता चला या नहीं। मम्मी चुपचाप उन्नत को देख रही थी और फिर बोली

"हाँ किचन में पोहा रखा है वैसे नीचे हल्ला किस बात का हो रहा था?"

उन्नत और पापा ने राहत की सांस ली की चलो मम्मी को पता नहीं चला। तभी वहाँ आशी पहुँच गई और बोली

"मम्मी गार्ड अंकल का खाना कौवे ले गए। उनको चोंच भी मारा। बहुत दर्द हो रहा था उनको"

"क्या?"

मम्मी ताज्जुब में पड़ गई। वह बोली

"कौवों का ऐसे पीछे पड़ना सही नहीं"

ये बोलते हुए मम्मी पापा के साथ चली गई। उन्नत को मम्मी की बात में दिलचस्पी थी, वह कौवों वाली बात और जानना चाहता था। इसलिए वह भी उनके पीछे–पीछे पानी पीने के बहाने किचन में चला गया। वह बोला

"मम्मी बहुत प्यास लगी है, गला सूखकर चिपक रहा है"

"तो पानी पी लो, रामायण क्यों सुना रहे हो। हाँ, जी नीचे क्या हुआ था?"

पापा एक चम्मच पोहा मुँह में डाल रहे थे और मम्मी बोली

"बता देते फिर खा लेते बिना मतलब के जल्दी करते हो"

पापा ने जल्दी जल्दी पोहा चबाने के बाद, जो हुआ था सब कुछ बता दिया। उन्नत पानी पीता हुआ सारी बातें सुन रहा था और उसको दुख हुआ कि पापा ने कुछ नया नहीं बताया। ये सब तो उसको पहले ही आशी वॉकी–टॉकी पर बता चुकी थी। मम्मी बोली

"कौवे बहुत खतरनाक होते हैं। किसी के पीछे पड़ जाते हैं तो छोड़ते नहीं"

"नहीं यार, कौवे ना हो गए इंडियन आर्मी हो गए"

"अरे मैंने देखा है। पड़ोस वाले गुप्ता अंकल याद हैं न"

पापा ने सिर हिलाया और साथ में उन्नत ने भी, फिर उसको एहसास हुआ कि वह तो पानी पीने आया हुआ है, इसलिए वह जल्दी जल्दी पानी पीने लगा ताकि उसकी बात सुनने में दिलचस्पी कम दिखे। मम्मी बोली

"उन्होंने कौवों का घोसला तोड़ दिया था, 3 अंडे थे फूट गये"

"क्यूँ?"

"वो मुझे याद नहीं"

"तो फिर क्या हुआ?"

"पूरे हफ्ते कौवे उनकी छत्त पर मंडराते रहे। उन लोगों का घर

से निकलना मुश्किल हो गया था"

"अच्छा। फिर वो कहावत गलत नहीं है– झूठ बोले, कौवा काटे।"

"और क्या? उन्नत बाबू और आशी मैडम ने पंगा लिया है न। इनको तो जमकर चोंच मारे। यही चाहती हूँ मैं"

उन्नत, ये सुनकर डर गया और भागकर अपने कमरे में चला गया। आशी जो फ्रिज में खाने का सामान खोज रही थी उसको याद आने लगा जब कौवे उसको चोंच मार रहे थे। उसने दिमाग से ये बात हटाने की कोशिश की तो गार्ड अंकल का नुंचा हुआ चेहरा घूमने लगा।

कमरे में पहुँचकर, उन्नत को इलेक्ट्रिक रूम के दरवाजे पर, कौवों का चोंच मारना याद आ रहा था। दोनों भाई बहन के दिमाग में कौवों का खौफ बैठ गया था। आशी ने मम्मी से बोला

"मैं घर से बाहर नहीं जाऊँगा"

आशी डरकर दौड़ती हुई, उन्नत के कमरे में चली गई। उन्नत ने सुना कि मम्मी पापा धीरे धीरे हंस रहे हैं। वो समझ गया कि मम्मी पापा ने उनको उल्लू बनाने के लिए, ये सारी बातें बोली हैं। उन्नत का डर थोड़ा कम हुआ लेकिन वह फिर सोचने लगा कि इस बार मामला अलग है, कौवे सही में खतरनाक हो गए है। तभी उन्नत का ध्यान गया कि आशी कमरे में घुस आयी है और वह मूलचंद के तरफ बढ़ रही है। उन्नत जल्दी से उठकर, उसके और मूलचंद के बीच खड़ा हो गया। वह बोला

"तुम कमरे से बाहर जाओ"

"नहीं मैं नहीं जाऊँगा"

उन्नत गुस्से में आशी का हाथ पकड़कर खींचते हुए उसे कमरे से बाहर कर दिया। वह कमरे का दरवाजा बंद करने लगा तभी आशी ने दरवाजे के बीच हेअर बैंड डाल दिया। वह बोली

"मुझे अंदर आने दो भैया"

"नहीं मुझे होमवर्क करना है"

उधर मम्मी इस झगड़े को सुनकर परेशान हो गई। उन्होंने

पापा को बोला

"इन दोनों को चुप कराओ, हर वक्त लड़ते रहते हैं"

पापा जहाँ बैठे थे, पोहा खाते हुए, वहीं से बोले।

"उन्नत, आशी को कमरे में बैठने दो"

"पापा मेरा बहुत सारा होमवर्क है, ये परेशान करेगी"

"मैं परेशान नहीं करूँगा"

"तुम करोगी, हमेशा झूठ बोलती हो"

"तुम झूठ बोलते हो, मैं सच बोलता हूँ"

"मम्मी को मूलचंद का बता दूँ"

"नहीं"

"मैं बता दूँगा"

"तुम झूठ बोल रही हो"

"मैं सच बोल रहा हूँ, बता दूँ?"

"लेकिन तुम मूलचंद के पास नहीं जाओगी"

आशी ने कुछ नहीं बोला और उन्नत को दरवाजे से धक्का देकर हटाती हुई, कमरे में घुसी। वो मूलचंद वाले खिलौने के टोकरे के तरफ बढ़ी। उन्नत बोला

"नहीं, मूलचंद के साथ नहीं खेलना है। वो भौंकने लगेगा"

"मैं सिर्फ उसके पास बैठूंगा"

"नहीं, ना तुम उसके पास जाओगी और ना मैं"

तब तक, मूलचंद खिलौने के डब्बे से झाँककर, दोनों भाई बहन को देखने लगा। उन्नत ने होठों पर उँगली रखकर उसको चुप रहने का इशारा किया। वह भी उसके साथ खेलना चाहता था लेकिन खुद को काबू में करता हुआ हाथ हिलाकर मूलचंद को अंदर डब्बे में जाने का इशारा कर दिया। मूलचंद वापस खिसक कर डब्बे के अन्दर चला गया। उन्नत बोला

"आशी और हाँ सुनो, इस कमरे का दरवाजा कभी खुला मत छोड़ना। मम्मी को तो यहाँ आने भी मत देना"

"मम्मा को आने नहीं देना है, ये मुझे पता है"

आशी गुस्सा हो गई और जाकर सोफे पर बैठ गई। पापा का उपन्यास उलट पुलट करते हुए बोली

"आप भी मूलचंद के साथ नहीं खेलोगे और मैं यहीं बैठकर देखूँगा, आपको पढ़ाई करते हुए"

"ठीक है"

"मूलचंद को हमलोग यहाँ खेलने के लिए लाये हैं न?"

"नहीं, कौवों से बचाने के लिए"

"कौवे इसपर भी हमला करेंगे?"

"हाँ, जैसे गार्ड अंकल पर किया"

"ओह"

आशी फिर वहाँ चुप चाप बैठ गई। बस कभी कभी आँखों के कोने से मूलचंद को देख लेती। उन्नत कुर्सी पर बैठकर किताबों को देखने लगा लेकिन उसका पढ़ने का अभी भी मन नहीं कर रहा था। वह सोचा एक बार मूलचंद को देख लेता हूँ, फिर नीचे झुककर खिलौने के डब्बे के अन्दर मूलचंद को देखने लगा। दोनों भाई बहन अपनी–अपनी जगह पर बैठे मूलचंद को देख रहे थे और उनको यकीन नहीं हो रहा था कि मूलचंद उनके घर में है। उनके लिए उसके साथ नहीं खेलने से बड़ी कोई सजा नहीं हो सकती थी और दोनों परेशान हो गए। दोनों उपाय सोचने लगे और आशी ने बोला

"भैया कुछ उपाय निकालो कि हमलोग मूलचंद के साथ खेल सकें"

उन्नत सोचने लगा और उसको एक आईडिया आया। वह उठकर दरवाजे की तरफ बढ़ा और वहाँ दरवाजा खोलकर पापा से पूछा

"पापा मैं पढ़ते हुए गाना सुन लूँ?"

"सुन लो, ध्यान के लिए म्यूजिक बहुत बढ़िया है"

उन्नत ने कमरे में रखा हुआ साउंड सिस्टम चालू कर दिया और कमरा गाने की आवाज से भर गया। उन्नत ने दरवाजा पहले ही लॉक कर दिया था ताकि उसको बाहर से मम्मी ना खोल सके। वह

बोला

"गाने में मूलचंद की आवाज का पता ही नहीं चलेगा"

फिर उन्नत और आशी ने जल्दी से मूलचंद को खिलौने के डब्बे से बाहर निकाला। कभी आशी उसको अपने गोद में लेती तो कभी उन्नत अपने गोद में। फिर उन्नत बॉल फेंक कर मूलचंद को लाने के लिए बोला और मूलचंद बॉल लेने के लिए बढ़ा, फिर इधर उधर सूंघने में लग गया। वह गेंद की तरफ जाने के बजाये, सोफे के नीचे मुँह घुसा कर कुछ खोजने लगा। उन्नत को बहुत गुस्सा आया कि मूलचंद उसकी बात क्यों नहीं समझ रहा। वह मूलचंद को डांटने वाला था जब वह उन दोनों के चारो तरफ चक्कर लगाने लगा। आशी मूलचंद को ज्यादा छेड़ नहीं रही थी कि कहीं वो भूँक ना दे, तभी मम्मी की आवाज आयी, वह बहुत देर से दरवाजे पर नॉक कर रही थी। वह बोली

"उन्नत? आशी चलो बाहर। ये बार–बार दरवाजा क्यों बंद कर लेते हो तुम लोग?"

उन्नत को अचानक गाने के बीच में मम्मी की आवाज सुनाई दी, गाने में मम्मी की आवाज दब गई थी। उन्नत ने देखा दरवाजा हिल रहा है और मम्मी की आवाज अब उसको गाने से भी ज्यादा साफ सुनाई देने लगी। मम्मी बोल रही थी

"उन्नत, उन्नत, उन्नत"

मम्मी की आवाज अब आशी को भी सुनाई देने लगी। उन्नत ने मुँह पर ऊँगली रखते हुए चुप रहने का इशारा किया। मूलचंद भी चुप हो गया और आशी ने उसको उठाकर जल्दी से खिलौने के डब्बे में डाल दिया। उन्नत दरवाजे के पास गया और पास में रखे रिमोट को उठाकर म्यूजिक सिस्टम बंद कर दिया। फिर वह जल्दी से पीछे हटता हुआ, पढ़ाई वाले टेबल के पास पहुँच गया और बोला

"हाँ मम्मी, आया"

ताकि मम्मी को लगे कि वह पीछे टेबल पर पढ़ाई कर रहा है। उन्नत ने देखा की आशी चुप रहने का इशारा करती खिलौने के डब्बे के पास खड़ी है और मूलचंद चुप है। मम्मी बोली

"खाने के लिए आ जाओ"

मम्मी इतना बोल कर चली गई। उन्नत और आशी ने मूलचंद को बोला

"हम जल्दी आएंगे।"

आशी और उन्नत पढ़ाई वाले कमरे से बाहर निकल आये और उन्नत ने आशी को बोला

"दरवाजा सही से बंद कर दो"

अध्याय 5
दरवाजा मत खोलना

पापा मम्मी की हेल्प करते हुए किचन से खाने के डब्बे लाकर, हॉल में जमीन पर बिछे मैट पर रख रहे थे। उन्नत और आशी भी मदद करने के लिए, पानी की बोतल और पीने के लिए गिलास लेकर, पहुँच गए। पापा प्लेट लेकर आये और मैट पर रखकर उन्नत के पास बैठ गए। उसकी तरफ झुकते हुए उसके कान में बोले

"मूलचंद के साथ खेल कर मजा आया?"

"मम्मी सुन लेगी, पकड़े जायेंगे"

"वो तो पकड़े ही जाओगे। बहुत देर तो कुत्ता चुप नहीं रह सकता"

"कुत्ता?"

उन्नत ने थोड़ा जोर से बोला और दोनों को डर लगा कि कहीं मम्मी ने सुन तो नहीं लिया। मम्मी ने पापा की तरफ प्लेट बढ़ाने के बाद दूसरी प्लेट आशी के सामने और फिर तीसरी प्लेट उन्नत के सामने रख दी। उन्नत को शांति मिली जब मम्मी ने बोला

"उन्नत किचन से दाल निकालने वाला कल्छुल ले आओ"

उन्नत को जाने का मन नहीं था और उसने बोला

"आशी तुम ले आओ"

मम्मी को गुस्सा आ गया

"उन्नत, जाओ जल्दी"

मम्मी के यूं जोर से बोलने के कारण, उन्नत जो पापा से बात करना चाहता था वह डरता हुआ जल्दी से उठ खड़ा हुआ। वह दौड़कर किचन में चला गया और बर्तन की टोकरी से कल्छुल निकाल लाया। उसने कल्छुल मम्मी को दिया और पापा के पास बैठ गया, जिन्होंने खाना शुरू कर दिया था। उन्नत ने अपने प्लेट से एक रोटी का टुकडा तोड़ लिया लेकिन उसका ध्यान पापा पर ही था और वह

धीरे से बोला

"आप मम्मी को मना लो न"

"मुश्किल काम है"

"कर दो न प्लीज"

"इनाम में क्या मिलेगा"

"3 किस्सी, चॉकलेट वाली स्पेशल"

"ओके, क्या मनवाना है"

"पापा!"

पापा ने उसको इशारे से बताया कि गुस्सा ना हो, उन्हें उसकी बात समझ आ गई है, फिर वो मम्मी की तरफ मुड़कर बोले

"पता नहीं, उस बेचारे मूलचंद का क्या हुआ होगा"

"कौन? और तुम ये दाल के बिना क्यों खा रहे हो?"

मम्मी ने कल्छुल से दाल निकालकर पापा के प्लेट में डाल दी। पापा का मुँह छोटा हो गया और आशी पापा को यूं सकपकाते हुए देखकर हँसने लगी। मम्मी बोली

"वो सड़क का कुत्ता, उसका नाम मूलचंद किसने रखा?"

"उन्नत भैया ने"

"आशी मैंने नहीं, तुमने उसका नाम रखा था, मैंने टॉमी बोला था"

दोनों झगड़ा करने को तैयार हो रहे थे और मम्मी का गुस्सा बढ़ने ही वाला था, जिसे देखकर पापा बोले

"तुम लोग खाना खाओ, कोई कुछ नहीं बोलेगा"

दोनों भाई बहन खाना खाने लगे। उन्नत ने फिर इशारे से पापा को देखा और मम्मी से बात करने के लिए उकसाने लगा। पापा ने उसको इशारे से समझाया कि वह बात कर रहे हैं ना, थोड़ा समय तो दो। उन्नत वापस प्लेट की तरफ पलटकर, फटाफट खाना खाने लगा। पापा फिर मम्मी से बोले

"वो तुम बोल रही थी, कौवे पीछा नहीं छोड़ते। गार्ड को भी देखो नोंच लिया। मूलचंद का तो पता नहीं क्या हाल करेंगे"

मम्मी को एहसास हुआ कि बच्चे खाना छोड़ कर उनकी बात

सुन रहे हैं। वह बोली

"हाँ, छोड़ेंगे तो नहीं"

"हमें मूलचंद को घर में रख लेना चाहिए था, क्यों?"

"हाँ, रख तो लेना चाहिए था, कौवे खतरनाक हो गए हैं"

उन्नत और आशी मम्मी की हाँ सुनकर खुश हो गए। उन्हें मन हो रहा था वहीं खड़े होकर नाचने लगे लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। बस दोनों के चेहरे पर लम्बी सी मुस्कान फैल गई। मम्मी को बच्चों की खुशी का मतलब समझ आ रहा था, पर इतनी खुशी। वह ताज्जुब से पापा की तरफ देखने लगी जो बच्चों के जितने ही खुश थे। मम्मी बोली

"तुम लोग ऐसे मुस्कुरा क्यों कर रहे हो?"

"कुछ नहीं"

"मम्मा! तो आप मूलचंद को कुछ दिन घर में रखने को तैयार हो?"

"मम्मी प्लीज, कौवे उसको कितनी चोंच मारेंगे। वो रोयेगा"

मम्मी ने दोनों की तरफ देखा और हाँ में सिर हिलाते हुए बोली

"ठीक है, अभी तुम लोग खाना जल्दी खत्म करो"

बच्चे खुश हो गए और जल्दी जल्दी खाना खाने लगे तभी उन्नत के कमरे का दरवाजा खुला, जिसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। मूलचंद दरवाजे से बाहर निकलता हुआ, उन्नत के पास पहुँच गया। मम्मी मूलचंद को यूं सामने देखकर चौंक गई। उन्नत, आशी और पापा की घिग्घी बंद गई। उन्नत ने बोला

"आशी तुमने दरवाजा सही से बंद नहीं किया"

आशी को उन्नत की बात पर ध्यान नहीं गया और वह बोली

"खाने के लिए आ गए मूलचंद, भूख लगी है"

मम्मी बोली

"ये यहाँ कहाँ से आ गया?"

उन्नत और आशी मम्मी का नाराज चेहरा देखकर पापा की तरफ देखने लगे। पापा संभलते हुए बोले

"उन्नत ये मूलचंद जादूगर है। तुमने अभी पूछा नहीं और ये महाराज प्रकट हो गए"

"मैं पूछ रही हूँ, ये घर में आया कैसे, और कब"

"जब मैं नीचे गया था सिक्यूरिटी गार्ड की आवाज सुनकर–र–र"

"आप उन्नत के कहने पर इसको घर ले आये है, हैं ना?"

"अब तो तुम भी इसको घर में रखने के लिये मान गई हो"

"सारी मम्मी, मैंने आपको कौवों वाली बात पापा को बताते हुए सुना था। तो मैं मूलचंद के लिए डर गया था"

"अच्छा तो तुम पढ़ाई नहीं, हमारी बात सुन रहे थे"

"उस समय मैं किचन में पानी पी रहा था"

पापा ने हाँ में सिर हिलाकर उसको सपोर्ट किया और मम्मी का गुस्से वाला चेहरा देखकर उन्नत को अफसोस होने लगा कि उसने ये बात क्यूँ बोल दी, अच्छा–खासा पापा मम्मी को समझा रहे थे। पापा बोले

"अब गुस्सा मत करो, खाना खा लेते हैं। तुम भी चाहती थी, मूलचंद घर में आ जाये। देखो वो आ गया।"

"तुम बच्चों को बिगाड़ दोगे"

मम्मी गुस्सा होकर खाने लगी और बच्चे तो पहले ही डरकर खाना खा रहे थे। मूलचंद धीरे से उन्नत के पास जाकर बैठ गया। मम्मी ने जल्दी से खाना खत्म किया और उठकर चली गई, ये बोलते हुए

"फ्लोर गन्दा नहीं रहना चाहिए। और सारे बर्तन किचन में सही जगह होने चाहिए"

चारो मम्मी को जाते हुए देख रहे थे। यहाँ तक की मूलचंद को भी डर लग रहा था कि मम्मी कब मुड़कर भड़क जाए। लेकिन मम्मी बिना रुके अपने कमरे में चली गई और दरवाजा बंद कर लिया। उन्नत बोला

"पापा मम्मी मान जाएगी न"

"हाँ, पर तुम लोग शैतानी मत करना वरना पिटाई खाओगे"

बच्चों ने हाँ में सिर हिलाया, मगर उनका ध्यान मूलचंद पर था। पापा भी जल्दी खाना खाकर सोफे पर बैठ गए, टीवी चेक करने लगे की उस पर कौन–कौन सी फिल्म आ रही है। इधर उन्नत और आशी ने अपने प्लेट से खाना निकालकर मूलचंद के सामने रख दिया। उसको खिलाने लगे। आशी बोली

"खा लो बाबू"

मूलचंद चावल और दाल नहीं खा रहा था और आशी को ध्यान आया। वो बोली

"दूध पीना है?"

आशी भागकर किचन में गई, दूध का पैकेट और एक कटोरा ले आयी। उसने दूध डालकर, कटोरा मूलचंद के सामने रख दिया। मूलचंद, मजे से कटोरे में मुँह डालकर, दूध पीने लगा। आशी और उन्नत ने एक दूसरे को बोला

"देखते हैं, कौन पहले खाना खत्म करता है"

आशी और उन्नत जल्दी–जल्दी अपना खाना खत्म करने में लग गये। पापा ने थोड़ी देर में घूमकर देखा तो मैट पर दूध फैला हुआ है, अगल बगल आशी और उन्नत ने चावल और दाल गिरा रखे हैं। इतनी तबाही जैसे वहाँ सुनामी आयी हो। यह सब देखकर पापा को गुस्सा आ गया। वह बोले

"बदमाशी की हद होती है। तुम लोग जल्दी बाथरूम जाओ और जाकर नहाओ, अभी!"

उन्नत और आशी डरकर प्लेट उठाकर सिंक में रखने जाने लगे जब उनको पापा ने रोक दिया, और बोले

"बर्तन मैं रख दूंगा, तुम लोग बाथरूम जाओ। नहाओ फटाफट"

"कपड़े और टॉवल?"

"मैं देता हूँ"

उन्नत और आशी दौड़ते हुए बाथरूम की तरफ चले गए और

मूलचंद भी उनके पैरों के बीच घूमता, दौड़ता हुआ पहुँच गया। उन्नत ने बाथरूम में पहुँचते ही 200 लीटर के लाल ड्रम के ढ़क्कन को उठाकर देखा, ड्रम पानी से लबालब भरा हुआ था। उन्नत बिना कपड़े उतारे हुए पहले खुद ड्रम में कूद गया फिर आशी और मूलचंद को अन्दर खींच लिया। आज ये लाल ड्रम छोटा लग रहा था। तीनों एक दूसरे को धक्का देते हुए, पानी में छपक–छपक कर नहाने लगे। बाथरूम से छपाक–छपाक की आवाज सुनकर, पापा जो मम्मी के बताये अनुसार किचन में बर्तन रख रहे थे, वो डर गए कि बच्चों की इस शैतानी से कहीं मम्मी का गुस्सा ना बढ़ जाये। वह जल्दी से बाथरूम पहुँचे। ड्रम के अंदर तीनों को घुसा हुआ देखकर उनकी चीख निकल गई। वह उन्नत पर बहुत गुस्सा हुए मगर जोर से नहीं चिल्लाये क्योंकि मम्मी सुन लेती तो आज ज्वालामुखी फूट जाता। वह बोले

"तुम हमेशा मस्ती में क्यों लग जाते हो? 2 मिनट में बाहर निकलो"

"और नहाना है पापा"

"हो गया नहाना। बस। मैं कपड़े और टॉवल लेकर आता हूँ"

पापा कपड़े और टॉवल लाने के लिए बेडरूम वाले दरवाजे का नॉब घुमाने लगे लेकिन वो नहीं घूमा क्योंकि मम्मी ने गुस्से में दरवाजा अंदर से बंद कर लिया था। पापा ने नॉक नहीं किया और वापस बाथरूम के दरवाजे पर आये। उन्होंने देखा कि उन्नत और आशी ड्रम से बाहर नहीं निकले हैं, वो इस इंतजार में हैं कि कब पापा वहाँ से जाए तो वो फिर से खेलना शुरु कर दें। पापा उनको गुस्से से देखते हुए बोले

"तुम लोग अभी तक बाहर नहीं निकले? उन्नत अपने कमरे से बेडशीट लेकर आओ, मूलचंद को बाथरूम में ही पोछ दो और तुम बेडशीट लपेट कर कमरे में बैठो"

"क्या मम्मी दरवाजा नहीं खोल रही?"

"नहीं, और तुम दोनों दरवाजा खुलवाने भी नहीं जाओगे"

यह बोलकर पापा ने आशी को पानी से निकाल लिया। वह

उनके गोद से निकलकर भाग जाना चाहती थी मगर पापा ने उसको गुस्से वाली नजरों से देखा और वह मुँह बिचकाती हुई उनके कंधे पर सर पटकने लगी। पापा उसको लेकर बाहर हॉल में चले गए। उन्नत पहले खुद लाल ड्रम से बाहर निकला और फिर उसने मूलचंद को पानी से बाहर निकाला। वह बोला

"मजा आया बच्चू, अभी और मजा आएगा"

मूलचंद के शरीर से और उन्नत के कपड़ों से खूब सारा पानी टपक रहा था। वह मूलचंद को पकड़कर बाथरूम के दरवाजे पर ही खड़ा रहा जिससे घर में पानी ना फैले। शरीर से थोड़ा पानी गिरना कम हुआ तो वह अपने कमरे में गया और बिस्तर पर बिछे बेडशीट को उठाकर बाथरूम में ले आया। पापा के बताये अनुसार, उसने बाथरूम के अंदर ही मूलचंद को बेडशीट से पोछ दिया। जब वो बेडशीट अपने चारो तरफ लुंगी की तरह लपेट रहा था तभी मूलचंद बेडशीट को मुँह से दबाकर खींचने लगा। उन्नत और मूलचंद के बीच बेडशीट को लेकर खींचा तानी होने लगी। उन्नत बोला

"मूलचंद पापा ने क्या कहा सुना न तुमने। मस्ती नहीं"

उन्नत ने जोर से खींचा और मूलचंद के मुँह से बेडशीट का सिरा निकल आया।

"मूलचंद तुम बाहर जाओ"

मूलचंद ने उन्नत की तरफ देखा और बाथरूम से बाहर नहीं गया। उन्नत ने उसकी तरफ आँखें तरेरते हुए बाहर जाने का इशारा किया। मूलचंद धीरे से दरवाजे से बाहर चला गया और उन्नत अपने चारो तरफ बेडशीट लपेट कर भीगे कपड़े उतारने लगा। वह बेडशीट को बांधता हुआ बाहर निकल ही रहा था कि मम्मी ने कमरे का दरवाजा खोला और बाहर निकली। वह उन्नत के एक दम सामने खड़ी थी और उसको लगा कि मम्मी अब पक्का उसको डांटेंगी। मम्मी बोली

"अंदर जाओ और कपड़े पहनो उन्नत"

उन्नत को ताज्जुब हुआ कि मम्मी गुस्सा नहीं है और उसको पापा की बात याद थी "मम्मी बहुत गुस्सा है, जो कहे मान लेना वरना

बहुत पिट जाओगे" वह जल्दी से मम्मी के बगल से होता हुआ कमरे में घुस गया। उसने दरवाजे को वापस बंद कर दिया जिससे मूलचंद कमरे के अंदर ना घुस जाए।

***

उन्नत बिल्डिंग के बाहर चक्कर लगाते हुए कौवों को देख रहा था, करीब 500 से भी ज्यादा कौवे थे।

"लगता है कौवों ने अपने दोस्तों को भी बुला लिया है"

2 कौवे उड़ते हुए पहुँचे और उन्नत के कमरे वाले छज्जे पर बैठ गये। वह चौकन्ना हो गया और देखा मूलचंद उछलकर खिड़की पर जाने की कोशिश कर रहा है। उन्नत ने जल्दी से खिड़की का पर्दा खींच दिया ताकि कौवे उन्हें देख ना सकें। वह बोला

"मूलचंद पीछे आ जाओ"

मूलचंद पीछे चला गया आशी के पास, जो सोफे पर बैठकर मोबाइल में गेम खेल रही थी। उन्नत बोला

"आशी तुम पर्दा मत हटाना"

उन्नत हल्का सा पर्दा हटाकर बाहर झाँकते हुए बोला। आशी मोबाइल रखकर उसके पास आ गई और पर्दे से बाहर झाँकने को हुई। उन्नत ने उसको रोक कर बोला

"अभी कहा था न, पर्दा मत हटाना"

"तुम भी तो देख रहे हो?"

"भैया बोलो"

"भैया"

उन्नत उसको अपने पास चिपका कर हल्का सा पर्दा हटाकर दिखाया, छज्जे पर 4 कौवे चक्कर लगा रहे थे। वह बोली

"कौवे यहाँ क्या कर रहे हैं?"

उन्नत ने बिना कोई जवाब दिये, धीरे से पर्दा छोड़ा और आशी को लेकर मूलचंद के पास बैठ गया। मूलचंद जो कौवों पर भूँकने वाला था उन्नत ने उसके मुँह को दबाकर बंद कर दिया। आशी बोली

"भैया कौवे हमें खोज रहे हैं?"

"हाँ, लेकिन पर्दे के पार उन्हें कुछ नहीं दिखेगा"

तभी दोनों ने देखा कि कौवे छज्जे से उड़कर चले गए। उन्नत और आशी ने राहत की सांस ली। उन्नत बोला

"आशी हमें घर के सभी खिड़की—दरवाजे बंद रखने हैं"

आशी ने हाँ में सिर हिलाया और फिर उन्नत बोला

"देखना कि हमें कौवे देख ना ले। उनको हमारे घर का पता नहीं चलना चाहिए"

उन्नत और आशी होशियारी से छिपते हुए, ताकि कौवे देख ना ले, एक—एक कमरे में गए। उन्होंने घर के सभी कमरों की खिड़कियों पर शीशा लगाकर पर्दा खींच दिया। फिर दोनों मूलचंद के साथ खेलने लगे। कब दोपहर से शाम हो गई, उनको पता ही नहीं चला। जब मम्मी सो कर उठी और अचानक से उनके कमरे के बाहर से गुजरी। उन्होंने कमरे में झाँक कर देखा तो उन्नत और आशी दोनों मूलचंद के साथ खेल रहे हैं।

"शाबाश उन्नत, यही सब एग्जाम में लिखना। मैं भी नहीं बोलूंगी"

उन्नत इस बात का मतलब समझता था। मम्मी ने नहीं बोलने का बोला है मतलब वह बोलेंगी। वह जल्दी से टेबल पर पढ़ने चला गया। खुद का ध्यान ना भटके इसके लिए उसने आशी से बोला

"आशी मूलचंद को लेकर बाहर जाओ और हॉल का पर्दा मत खोलना"

"ओके"

आशी मूलचंद को लेकर बाहर हॉल में खेलने चली गई। उन्नत ने सारे होमवर्क को देखा और फिर पूरे होमवर्क को 3 भाग में बांटकर बोला

"ये वाला हिस्सा मैं अभी खत्म करके उठूँगा"

उन्नत तीन में से एक हिस्सा कम्पलीट करने में लग गया। तभी पापा कमरे में आये और दरवाजा बंद करके पास वाले सोफे पर बैठ गए। उन्होंने पेपर पर कुछ लिखना शुरू कर दिया। उन्नत

फटाफट अपना होमवर्क खत्म कर रहा था और पापा उसको ऐसे होमवर्क करता देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने मोबाइल में उन्नत के होमवर्क करने का वीडियो रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया। वह बोले

"मम्मी देखेगी तब समझ आएगा कि उन्नत कितना पढ़ाई करता है"

***

दिन रात बिल्डिंग कौवों की काँव–काँव से गूँज रहा था। मम्मी, हॉल में, सोफा पर उलट पलट करती, अपने कान ढ़ककर सोने की कोशिश करते हुए बोली

"कब बंद होगा ये काँव काँव, सर दर्द हो रहा है"

पास में, उन्नत और आशी कैरम बोर्ड खेल रहे थे। मूलचंद आशी के गोद में था। उन्नत बोला

"मम्मी, कौवे किचन की खिड़की से घुसने की कोशिश कर रहे थे"

"क्या सच में?"

"अपना चांस चलो"

उन्नत ने स्ट्राइकर आशी की तरफ सरका दिया और उठकर मम्मी के पास चला गया। वह बोला

"हाँ और आज रात को मैं पानी पीने उठा तो देखा, उन्हें किचन की खिड़की से घुसते हुए"

"अच्छा तो खिड़की पर वो अखबार तुमने ही लगाया है?

"हाँ और आपने सुबह पूजा करने के बाद बेडरूम की खिड़की का शीशा खुला छोड़ दिया था, उधर से कौवे घुस सकते थे, मैंने खिड़की का शीशा बंद कर दिया"

"कितना बहादुर हो गया है लड्डू"

"मुझे लगता है, कौवों को पता चल गया है की हम यहाँ रहते हैं"

मम्मी भी यकीन करती हुई ये सब सुन रही थी, तभी दरवाजे

की घंटी बजी। आशी भागकर दरवाजे पर गई तो देखा सामने पापा खड़े हैं। वह ऑफिस से लौट कर आये थे, उनका सिर और शर्ट कौवों की सफेद पॉटी से भरा था। आशी उनसे ये कैसे हुआ और क्या हुआ वाले सवाल दागने लगी। पापा उसको अपने से दूर करते हुए बोले

"रुक जाओ आशी, बाथरूम से आकर बताता हूँ"

मम्मी और उन्नत भी बोलते बोलते चुप रह गये। वो जल्दी से बाथरूम गए और खुद को साफ किए। मम्मी ने उनको तौलिया दिया, जिससे वो खुद को पोछते हुए, हाल में आकर, सोफा पर बैठ गए। वह बोले

"पूरे कपड़े खराब कर दिए"

उन्नत और आशी भी आकर, पापा के पास बैठ गए थे और मूलचंद भी पास में ही लेट गया। आशी बोली

"पापा कौवों ने आप पर पॉटी किया है, हम उसका बदला लेंगे"

"अच्छा बिटिया रानी कैसे बदला लेगी"

"हम कौवों पर पॉटी करेंगे"

पापा और मम्मी उसकी बात सुनकर हँसने लगे। उन्नत को इतने जोरो की हँसी आई कि वह जमीन पर लोटकर, जोर से हँसने लगा। मम्मी बोली

"उन्नत? ऐसे नहीं हँसते"

लेकिन, उन्नत की हँसी रुक नहीं रही थी। वह मुँह में हँसी दबाता हुआ, पेट पकड़कर, वहाँ से चला गया। उन्नत ने जाते–जाते सुना कि मम्मी पापा से बोल रही है

"पूरे सोसाइटी वाले परेशान हैं कि कब इन कौवों से छुटकारा मिलेगा"

"हाँ, सब बोल रहे हैं कि उन्नत और आशी ने ही ये मुसीबत खड़ी की है"

"उन्होंने कैसे किया, क्या मछलीवाली को बचा कर उन्होंने गलती की"

"बिल्कुल नहीं"

"कौवों की काँव काँव ने परेशान कर रखा है और एक ये मूलचंद, सोची थी, कुछ घंटे मूलचंद को घर में रखना है लेकिन २ दिन हो गए"

उन्नत का हँसना बंद हो गया। वह नहीं चाहता था कि कौवे कभी बिल्डिंग के सामने से जाए। उसे मूलचंद से दूर होना पड़े। उसके आँखों में आँसू भर गए और वह रोता हुआ, पढ़ने वाले कमरे में चला गया।

***

मूलचंद के आने के बाद, बच्चों ने पापा से सोते समय कहानी सुनने की जिद्द करना बंद कर दिया था। ये बात पापा को अच्छी नहीं लग रही थी तो उन्नत और आशी को कहानी सुनाने का मन बनाकर कमरे में आये। बच्चों को खुशखबरी दी की वो कहानी सुनाने वाले हैं, उन्नत बोला

"आज हम मूलचंद के साथ खेलेंगे, कहानी नहीं सुनेंगे"

"पापा की कहानी सुनने से मना किया"

"पापा बुरा मत मानो। हम मूलचंद के साथ खेल रहे हैं न"

पापा ने देखा कि आशी मूलचंद की पूँछ खींचकर सीधा करती और जैसे ही छोड़ती वह वापस घूमकर टेढ़ी हो जाती। उन्नत कूदकर उसके पास पहुँच गया। वह बोला

"आशी तुम दिन भर खेली हो न, अब मुझे खेलने दो"

आशी मूलचंद से दूर नहीं होना चाहती थी और उन्नत पापा से शिकायत करते हुए बोला

"आशी पूरे टाइम मूलचंद के साथ खेली है। मैंने होमवर्क भी किया। ये पढ़ती भी नहीं है और ना ही स्कूल जाती है"

"अभी छोटी है न"

"पापा, आशी को अब स्कूल भेजो। मैं अब स्कूल नहीं जाऊँगा। मेरा पढ़ाई हो गया"

"ठीक है। बस ये एग्जाम दे दो। उसके बाद स्कूल नहीं"

पापा 2 साल से उन्नत को यही बोलकर दिलासा दे रहे थे।

उन्नत ने मूलचंद को आशी के हाँथ से छीन कर अपनी गोद में बिठा लिया। आशी गुस्सा होकर जोर से चिल्लाने लगी और उन्नत के ऊपर चढ़ कर उससे लड़ने लगी। पापा झगड़े में नहीं पड़ना चाहते थे और चले गए

"इनका झगड़ा कभी खत्म नहीं हो सकता"

उन्नत आशी को अपने से दूर हटाता हुआ, मूलचंद को गोद में लेकर बिस्तर पर बैठ गया। मूलचंद खिड़की की तरफ देखकर भौं–भौं करने लगा। आशी भी उसके यूं भौंकने से अपनी लड़ाई भूलकर खिड़की की तरफ देखने लगी। उन्नत बिस्तर से उठ गया और पर्दे को हल्का सरका कर बाहर देखा तो खिड़की के बाहर छज्जे पर कौवे घूम रहे थे। उन्नत ने कमरे की बत्ती बुझा दी और आकर बिस्तर पर बैठ गया, वह बोला

"ये यहाँ से जा क्यों नहीं रहे?"

तभी मम्मी दूध लेकर आयी और बोली

"बच्चों जल्दी दूध पीकर सो जाओ, आशी तुम भी सोने चलो"

"मम्मी मैं यहीं भैया के पास सोउंगा"

तभी मम्मी ने देखा मूलचंद भी उनके साथ बिस्तर पर बैठा हुआ है, मम्मी ने बोला

"इसको नीचे उतारो"

"नहीं, मूलचंद भी हमारे साथ सोयेगा"

मम्मी को आशी का यूं बात काटना बिल्कुल पसंद नहीं आया, वह बोली

"अगर ऐसा है, तो मैं अभी इसको नीचे छोड़ कर आती हूँ"

दोनों बच्चों ने एक दूसरे को देखा और फिर आशी बोली

"लेकिन मम्मा, मैं तो यहाँ सो सकता हूँ"

"ठीक है लेकिन मूलचंद बिस्तर पर नहीं सोना चाहिए, वो नीचे अपने बिस्तर पर सोयेगा"

दोनों बच्चों ने नीचे फर्श पर बिछे मैट की तरफ देखा, मम्मी ने मूलचंद को उठाकर उसपर सुला दिया। फिर बच्चे भी दूध पीकर लेट

गए। मम्मी ने जाते जाते हिदायत दी

"मूलचंद नीचे ही सोना चाहिए"

उन्नत और आशी को छज्जे पर घूम रहे कौवों से डर लग रहा था, दोनों जल्दी से कम्बल के अन्दर चेहरा छिपा लिये। उन्हें डर से नींद नहीं आ रही थी, तभी चुपके से मूलचंद आया और कम्बल में घुसकर उनसे लिपट गया। दोनों ने मूलचंद को गले लगाकर आँखें बंद कर ली।

***

सुबह, मम्मी उन्नत और आशी को उठाने के लिए आवाज देती हुई उनके कमरे में पहुँची तो देखा की उन्नत और आशी कम्बल के अंदर पूरा ढँक कर सो रहे हैं। मम्मी ने जगाने के लिए उनके ऊपर से कम्बल हटाया तो सामने मूलचंद को उन्नत और आशी के ऊपर चढ़कर सोया देखकर चिल्लाने लगी। उन्नत और आशी, मम्मी की चीख सुनकर फौरन जग गए। उन्नत बोला

"मूलचंद हमारे पास आकर सो गया था"

मम्मी बहुत गुस्सा थी और बोली

"तुम लोग बहुत बिगड़ गए हो और झूठ बोलना भी शुरु कर दिया है। जब तक मैं सब्जी लेकर आती हूँ, तुम दोनों तैयार मिलने चाहिए"

उन्नत और आशी, जल्दी से बिस्तर पर खड़े हो गए और मूलचंद जैसे सब समझ रहा हो बिस्तर से उतरकर नीचे मैट पर खड़ा हो गया। मम्मी उन सबको गुस्से से घूरने के बाद घर से बाहर चली गई। उन्नत और आशी बाहर हॉल में मूलचंद को लेकर पहुँचे और उन्नत ने देखा कि पापा नहीं है। उसको समझ आ गया कि पापा मॉर्निंग वाक पर गए होंगे। वह धम्म से सोफे पर बैठ गया। उन्नत को अभी भी नींद आ रही थी और वह सोफे पर लेट गया। लेटा–लेटा वह अपने सपनों को याद करने लगा। कुछ सपने याद आये लेकिन आधे अधूरे, जिसका सिर पैर समझ नहीं आ रहा था। उसने दूसरे बढ़िया वाले सपने को याद करने की कोशिश करी, लेकिन वह तो बिल्कुल भी

याद नहीं आ रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि बस अभी तो वो सपना देखा था, कितना मजा आ रहा था, मगर अब वो सपना याद क्यूँ नहीं आ रहा। आशी जल्दी से उठी और भागने लगी।

"कहाँ जा रही हो?"

"सूसू करने"

आशी तेजी से भागते हुए बाथरूम की तरफ चली गई और मूलचंद भी उसके पीछे पीछे अन्दर घुस गया। आशी उसको बोली

"जाओ मैं आ रहा हूँ ना"

लेकिन मूलचन्द उसकी बात नहीं सुन रहा था। उन्नत बोला

"आशी मूलचंद को भी सूसू पॉटी करवा देना"

"ये खुद कर लेगा, मैं नहीं करवाउंगा"

"हमेशा बोलती है, मूलचंद को बहुत प्यार करता हूँ और एक काम तो करवा नहीं पाती"

उन्नत ने देखा कि सोफे पर कम्बल रखा हुआ है, शायद पापा रात को यहीं सोये थे। उसने कम्बल खींचकर खुद को ढँक लिया और उसको नींद आ गई। मम्मी से बाहर जाते वक्त घर का दरवाजा खुला छूट गया था। दरवाजे पर काकोर कुछ कौवों के साथ चलते हुए आया और घर के अंदर घुस गया। उन्नत कम्बल ओढ़कर सोफे पर सोया हुआ था जिससे कौवे उसको देख नहीं पाए। हॉल से होते हुए, काकोर और कौवे, किचन के अंदर तलाशी लिए, फिर वो उन्नत के कमरे में पहुँचे जहाँ कोई भी नहीं था। उन्होंने हॉल वाले बाथरूम में देखा लेकिन वहाँ भी कोई नहीं मिला फिर काकोर कौवों के साथ, मम्मी वाले कमरे की तरफ जाने लगा। उन्नत, एक डरावना सपना देखकर बड़बड़ाता हुआ झटके में जगा और वह कम्बल के अंदर से बाहर झाँकने लगा। उसने टीवी के काले स्क्रीन पर कौवों को गैलरी में घूमते हुए देखा। उसको यकीन नहीं हुआ और वह जल्दी से सोफा के किनारे आकर, गैलरी में देखने लगा, सामने काकोर और कौवे जमीन पर चलते हुए मम्मी के कमरे में घुस गए। वह बोला

"आशी और मूलचंद तो उस कमरे के बाथरूम में हैं"

उन्नत कम्बल में सरकते हुए उठ बैठा, उसको खतरे का आभास हो गया था। वह जल्दी जल्दी सोचने लगा कि उसको क्या करना है। उसने देखा कौवे बाथरूम में जाने की बजाये अन्दर कमरे में चले गए। तभी आशी और मूलचंद बाथरूम से बाहर निकले। उन्नत उनको इशारे से बताना चाह रहा था कि आशी जल्दी कमरे से बाहर निकल आये और अपने पीछे दरवाजा बंद कर दे। मगर आशी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था, वह अपना पैंट खींचकर ऊपर चढ़ाती हुई जम्हाई ली, तभी मूलचंद कौवों को देखकर भौं–भौं करने लगा। आशी कौवों को ऐसे कमरे में देखकर डर गई। कौवे जो कमरे में घुसकर इधर उधर खोज रहे थे, उनको आशी और मूलचंद दिख गए। वो पंख फैलाकर फड़फड़ाते हुए हवा में उड़ने लगे और आशी की तरफ बढ़े। आशी चिल्लायी

"कौवे, कौवे"

उन्नत सोफा से कूदकर कमरे की तरफ दौड़ा। उसको आशी और मूलचंद पर कौवे उड़कर पहुँचते हुए दिखाई दिए, तभी कमरे का दरवाजा बंद हो गया। उन्नत दरवाजे पर पहुँचकर खोलने की कोशिश करने लगा मगर दरवाजा अन्दर से बंद हो गया था। उन्नत को आशी पर बहुत गुस्सा आया, उसने आशी को कितनी बार कहा था कि मस्ती मस्ती में दरवाजे का लॉक ना लगाया करे और आज उस कारण मुसीबत हो गई। उन्नत दूसरे तरीके से कमरे में जाने का मन बना चुका था, उसने सोचा

"अभी सिर्फ कुछ कौवे ही आये हैं। बाकी कौवे भी आने वाले होंगे"

उसने दौड़कर पहले घर का मेन दरवाजा बंद कर दिया। मम्मी के कमरे से आशी के चिल्लाने और मूलचंद के भूँकने की आवाज आ रही थी। उन्नत जल्दी से अपने पढ़ाई वाले कमरे की तरफ दौड़ा। बस यही एक रास्ता था, मम्मी मना करते हुए बोली थी

"वहाँ एयर कंडीशनर का एग्जॉस्ट है तुम्हे करंट लग सकता है"

वह पढ़ाई वाले कमरे में घुसा और जल्दी से खिड़की का पर्दा हटाकर शीशे को सरकाकर खोल दिया। सामने छज्जा था, वह कूदकर बाहर छज्जे पर चला गया। यह छज्जा उन्नत के पढ़ाई वाले कमरे की खिड़की से मम्मी के कमरे की खिड़की तक जाता था, जहाँ आशी और मूलचंद कौवों के साथ बंद थे। छज्जे के बाहर लोहे का जाल लगा हुआ था, बाहर कौवे उड़ते दिख रहे थे और पलक झपकते उसके पास पहुँच जाते। उन्नत अपने कमरे की खिड़की के शीशे को धक्का देता हुआ वापस बंद कर दिया।

उन्नत, छज्जे पर, घुटनों के बल, जल्दी जल्दी चलता हुआ, मम्मी वाले कमरे की खिड़की की तरफ बढ़ने लगा। थोड़ी दूर पर एयरकंडीशनर का एग्जॉस्ट लगा हुआ था, जिसके नीचे से वह गुजरा। उसे करंट का डर नहीं था क्योंकि अभी बिजली नहीं थी, लेकिन वह सिर बचाते हुए बढ़ रहा था की कहीं ऊपर टकरा ना जाये। वह एग्जॉस्ट के नीचे से होता हुआ दूसरी तरफ पहुँच गया। मम्मी के कमरे की खिड़की पास में थी और वह जैसे ही उठने को हुआ, उसका सिर जोर से एग्जॉस्ट के लोहे से टकराया और दिमाग झनझना गया। वह अपने सिर को दबाते हुए जल्दी से उठा और मम्मी वाले कमरे की खिड़की के पास पहुँचा। उसने खिड़की से अंदर कमरे में देखा, आशी और मूलचंद बिस्तर पर खड़े हैं, 3 कौवे आशी के सिर के पास घूमते हुए चोंच मार रहे हैं तो 2 उसके कंधे के पास। वह डायनासोर वाले खिलौने से कौवों को उड़ाने के लिए मारती लेकिन कौवों ने पंजे उसके शरीर में गड़ा रखे थे और नहीं उड़े। आशी दर्द से चिल्ला रही थी। मूलचंद के शरीर पर भी 2 कौवे बैठे हुए, उसके ताजा जख्मों पर चोंच मार रहे थे। वह भौं–भौं करके उनको डराने की कोशिश कर रहा था लेकिन कौवे नहीं डरे।

उसने देखा खिड़की अन्दर से बंद नहीं है।

***

बिल्डिंग के पार्क में, पापा बिल्डिंग में रहने वाले शर्मा जी के साथ बैठे गप्पे लड़ा रहे थे। पापा बोले

"इन कौवों ने जीना हराम कर दिया है"

"कल मेरे बेटे का सिर नोंच लिया"

"नगर निगम वालों ने क्या कहा?"

"उनके बस की नहीं है, गोली और धुँआ से कौवे नहीं भागते, हमने जो बताया उससे देखिये कैसे भागेंगे"

"पूरा यकीन है!"

शर्मा जी ने ताज्जुब से देखा लेकिन पापा सिर उठाकर बिल्डिंग के आसपास उड़ते कौवों को देख रहे थे। कौवों में भगदड़ मची हुई थी। वह बोले

"भगवान करे आपका तरीका काम कर जाये और इनसे छुटकारा मिले"

पापा ने मम्मी को सब्जी लेकर लौटते हुए देखा। वह बोले

"मैडम जी, रुको, साथ में चलते हैं!"

"आपकी मंडली खत्म हो गई क्या?"

पापा कुछ बोलते उससे पहले शर्मा जी बोल पड़े

"गुड मोर्निंग भाभी जी, मंडली निकम्मों की होती है, अपनी कमेटी है"

"आप लोग देश दुनिया की समस्या निपटाओ, हमें घर में बहुत काम है"

"काम तो हमें भी है, क्यों भाई साहब"

पापा बस इस बात पर हँस दिए तभी शर्मा जी ने उनके कंधे पर हाथ रखा कि बेटा तुम यहाँ से जा नहीं पाओगे। पापा को घर जाने का मन होने लगा था, उन्हें समझ आ गया कि वो फंस जायेंगे अगर चतुराई से काम नहीं लिया तो। इधर मम्मी पापा की फंसी हुई हालत समझ गई थी। उनकी हँसी छूट रही थी। शर्मा जी बोले

"सिंह साहब, मम्मियों की गलतफहमी बढ़ रही है"

पापा ने शर्मा जी की बात पर सिर हिलाया और प्यारा सा चेहरा बनाकर मम्मी की तरफ देखा। जैसे कह रहे हो कि इस शर्मा से बचा लो। मम्मी बोली

"आपने उन्नत का होमवर्क करवा दिया?"

"ओह मैं तो भूल ही गया, शर्मा जी मैं निकलता हूँ, शाम को मिलते हैं"

"शाम को क्यूँ, मैं यहीं बैठा हूँ, होमवर्क करवा कर आ जाओ या मैं भी चलता हूँ साथ एक चाय पी लेंगे और चर्चा भी हो जायेगी"

पापा को थोड़ी राहत मिली थी वो फिर से हवा होने लगी और उनकी बेचौनी बढ़ गई। वो बोले

"शर्मा जी, मैं चाय भिजवा देता हूँ। वैसे भी अभी आपको ये कौवे भगाने का इंतजाम करना है"

शर्मा जी को ख्याल आया और उन्होंने अफसोस किया की वो भूल कैसे गए। वो बोले

"चाय रहने दीजियेगा फिर, मोटापा बढ़ रहा है"

"ठीक है"

पापा अपनी खुशी दबाते हुए मम्मी के पास गए और उनके हाथ से सब्जियों की पॉलिथीन लेकर साथ चल दिए। मम्मी बोली

"शर्मा जी से गुस्साते हो तो फिर मिलते ही क्यूँ हो"

"आदमी अच्छा है लेकिन कभी कभी च्युइंग गम बन जाता है, देखना शाम को सलाह देंगे, 'भाभी जी को कहिये बच्चों का होमवर्क करवायें', मर्द के और भी काम हैं"

"हाँ जैसे आपलोग बाहर युद्ध लड़ रहे हैं"

पापा ने बात को झगड़े की तरफ मुड़ते देखकर, बात बदल दिया

"बच्चे सोये हुए हैं क्या?"

मम्मी ने इस बात का जवाब नहीं दिया और पूछी

"ये शर्मा जी कौवों को भगाने का कैसा इंतजाम कर रहे हैं?"

"बोल रहे थे घोड़े के बाल बाजरे के दाने में बाँध कर कौवों को खिलाना है। बाल उनके गले में फंस जाएगा और वो अपने ही पंजों से खुद का गला नोच नोच कर मर जायेंगे"

"ओह्हह! ये अतरंगी बात उनको कहाँ पता चली?"

"बोल रहे थे, रात भर सोचकर ये तरीका निकला है"

"शर्माजी से कहो कि रात में फालतू सोचना सही नहीं"

"तुम बोल देना! बच्चे जग गए या सोये हुए हैं?"

"जगा कर आयी थी, पता नहीं जगे हैं या सोये हैं। एक तो ये कुत्ता जबसे आया है, मैनरलेस हो गए है"

"लेकिन, मुझे लगता है, मूलचंद के आने से बच्चे सुधर गए हैं। उन्नत बिना बोले हुए, अपना होमवर्क करता रहता है"

"ये तो है, लेकिन आज दोनों उसको बिस्तर में लेकर सोये हुए थे"

"ये कौनसा अजूबा है। कुत्ते को लेकर लोग बिस्तर में सोते ही हैं"

"हाँ पर मेरे बच्चे कुत्तों के साथ नहीं सोयेंगे"

"तुमने देखा, आशी कितनी जल्दी खाना खत्म कर लेती है"

"वो तो ठीक है। लेकिन मुझे घर में कुत्ते कभी से पसंद नहीं है। कल पता है क्या हुआ?"

"क्या?"

"मैं किचन से बाहर निकल रही थी तो मूलचंद पैरों के बीच आ गया और घूमने लगा। मैं डर गई और गिरते गिरते बची"

"ओह, ध्यान से चला करो और कुछ भी कहो बच्चों में मूलचंद के कारण सुधार देखकर मन करता है कि हमेशा के लिए मूलचंद को घर में रख लूं"

"सोचना भी मत, आशी मूलचंद को अपने प्लेट में खिला रही थी, और तो और जमीन पर पानी गिराकर चाट रही थी। मैंने उसको डांटा तो बोलती है मूलचंद ऐसे ही पानी पीता है"

"अच्छा?"

"यही तो दिक्कत है, घर में कुत्ता रखने का। बच्चे भी जानवर बन जायेंगे। दीपू याद है"

"कौन दीपू"

"मेरे फूफा का बेटा"

"अच्छा हाँ, जिसका एक आँख नहीं है"

"वही, उसका आँख घर के पालतू नेवले ने नोंच लिया था"

"ओह, पालतू नेवला", मन में सोचा, "ये नेवला कौन पालता है"

"सोचो नेवला था, कुत्ता तो पूरा गर्दन ही नोंच लेगा"

"ये तो है"

पापा को बच्चों की चिंता होने लगी कि कहीं मूलचंद ने भी कुछ गड़बड़ ना कर दी हो। पापा तेज कदमों से चलने लगे और बोले

"कुत्ते को जल्दी घर से निकालना होगा"

"मूलचंद"

"ओह यस"

पापा को मम्मी की इस बात पर हैरत हुई। उन्होंने सोचा कि उन्नत को बताउंगा तो वह यकीन नहीं करेगा। मम्मी और पापा लिफ्ट तक पहुँचे तो देखा लिफ्ट के इंडिकेटर की बत्ती बुझी हुई है। मम्मी बोली

"उफफ, ये लिफ्ट को भी आज ही खराब होना था"

दोनों सीढ़ियाँ चढ़ने लगे और उन्होंने सुना कि ऊपर वाले फ्लोर से कौवों के काँव– काँव करने की आवाज आ रही है। पापा ने बाहर झाँक कर देखा तो कौवे चक्कर लगा रहे हैं। मम्मी बोली

"आखिर कब तक ये कौवे यहाँ घूमते रहेंगे, आजकल सपने में भी कॉव–कॉव सुनाई देता है"

***

मम्मी और पापा हाँफते हुए अपने फ्लोर पर पहुँचे, फ्लोर कौवों से भरा हुआ था। वो दोनों चौंक गए और मम्मी बोली

"ऐसा लग रहा है कौवे हमला करने वाले हैं"

सारे कमरे बंद थे, फ्लोर पर उनके सिवा कोई नहीं रहता था। फ्लोर कौवों की "काँव काँव" और उनके पंख के फड़फड़ानें की आवाज से भरा हुआ था। मम्मी पापा भी घर के दरवाजे पर कौवों को घूमते हुए देख डर गए। उन्होंने सू सू बोलकर कौवों को भगाना शुरु किया ही था कि कौवे उनको देखकर वहाँ से उड़ गए। मम्मी खुश थी कि दरवाजा

अन्दर से बंद है। वह बोली

"अच्छा हुआ बच्चों ने दरवाजा बंद कर लिया है, मैं दरवाजा खोलकर गई थी"

पापा ने घंटी बजायी और घर के अन्दर घंटी बजने की आवाज हुई। थोड़ी देर उन्होंने इंतजार किया लेकिन दरवाजा नहीं खुला।

***

वो तो अच्छा था कि उन्नत ने कमरे में घुसते ही खिड़की बंद कर दी थी। कलूटा और सरदार, खिड़की पर, बाहर की तरफ से, शीशा तोड़ डालने की हद तक चोंच मार रहे थे। कमरा कौवों के काँव–काँव से भरा हुआ था। काकोर और 3 कौवे, कम्बल में छिपे आशी और मूलचंद को, चोंच गड़ाने की जुगाड़ कर रहे थे लेकिन सफल नहीं हो पा रहे थे। उन्नत ने कमरे में घुसते ही बिस्तर पर रखे कम्बल से आशी और मूलचंद को ढँक दिया था। यह बोलते हुए

"आशी जब तक मैं न कहूँ, बाहर मत निकलना"

कौवे उन्नत की तरफ बढ़े लेकिन वह जल्दी से बिस्तर के नीचे घुस गया जहाँ कौवे नहीं घुस पाए। उन्नत ने नीचे रखे बैडमिंटन का रैकेट दोनों हाथों में एक–एक उठा लिया। वह रैकेट लहराता हुआ बिस्तर के नीचे से सरकता हुआ बाहर निकला और फिर कौवों को मारना शुरु कर दिया। कौवे उड़कर उसके वार से बच जाते थे। उसको समझ नहीं आ रहा था कि वह इन कौवों को कमरे से बाहर कैसे निकालेगा तभी उन्नत को घर की घंटी दोबारा बजने की आवाज सुनाई दी। कौवों को रैकेट से मारते हुए उसने आशी को बोला

"आशी बाहर का दरवाजा खोलो, मम्मी पापा शायद आये हैं"

आशी कम्बल से निकलने वाली थी जब उन्नत को ध्यान आया और वह बोला

"नहीं आशी कम्बल ओढ़ कर ही जाओ"

"और मूलचंद?"

"उसको यहीं रहने दो, वो मेरे साथ आएगा"

"मुझे डर लग रहा है, इसे मेरे साथ जाने दो भैया"

"ठीक है"

उन्नत अभी बहस नहीं करना चाहता था। आशी कम्बल में मूलचंद को लपेटे हुए दरवाजे की तरफ बढ़ने लगी। घर में घंटी की आवाज लगातार गूँज रही थी।

दरवाजे के बाहर, मम्मी पापा परेशान हो रहे थे।

3 कौवे आशी के ऊपर भिड़े हुए थे और जैसे ही कहीं से कम्बल खिसकता तो वो चोंच मारने लगते। काकोर और बाकी कौवों को उन्नत ने रैकेट से मार कर पीछे किया। वह आशी के पास आ गया और एक रैकेट से मार–मारकर आशी के ऊपर जूझ रहे कौवों को हटाने लगा।

दरवाजे के बाहर, मम्मी का गुस्से से दिमाग खराब हो रहा था। वह बोली

"जरूर ये बच्चे कुछ नयी बदमाशी कर रहे होंगे"

पापा को उम्मीद थी कि बच्चे शायद सो गए होंगे। पापा ने कई बार लगातार घंटी बजा दी जिससे मम्मी को लगे कि वो बच्चों पर बहुत नाराज हैं लेकिन दरवाजा नहीं खुला। पापा ने दरवाजे से कान लगाकर सुना, उन्हें कौवों की आवाज सुनाई दी और वो बोले

"ये अंदर से कौवों की आवाज आ रही है, क्या?"

मम्मी भी पापा के पास आकर दरवाजे से कान लगाकर सुनने लगी

"बाहर वाले कौवों की आवाज है, घर में कौवे कैसे घुसेंगे?"

"ये कुछ भी कर सकते हैं"

आशी मम्मी के कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर आयी, मूलचंद कम्बल से बाहर निकल आया और कौवों पर झपट गया। एक कौवा आशी को छोड़ कर मूलचंद को चोंच मारने लगा। आशी को मौका मिल गया और जल्दी से दौड़ते हुए घर के दरवाजे तक पहुँच गई। 2 कौवे उसके चेहरे के सामने आ गए और उसके गाल पर चोंच गड़ाने लगे। इधर उन्नत बैडमिंटन से कौवों को मारता हुआ हॉल में पहुँच गया और काकोर ने उसके कान पर जोर से नोंच लिया और

दूसरे कौवे ने उसके सिर के बालों का गुच्छा खींचकर उखाड़ दिया। वह जोर से चिल्लाया और रैकेट से कौवों को मार कर दूर भगाया। उसने सामने देखा कि आशी के चेहरे पर कौवे चिपके हैं। उन्नत अपने ऊपर हमला कर रहे कौवों को रैकेट से मारता हुआ आशी के तरफ बढ़ने लगा। इसी बीच आशी ने चेहरे को दोनों हाथों से छिपाते हुए दरवाजा खोल दिया। उन्नत बोला

"पापा, दरवाजा पूरा खोलो"

पापा मम्मी गुस्सा करते हुए अन्दर घुसे, सामने का नजारा देखकर उनके होश उड़ गये। जिस तरह कौवे उन्नत और आशी के ऊपर चोंच मार रहे थे, उसे देखकर मम्मी पापा भी हरकत में आ गए। पापा ने हाथ में पकड़े हुए पेपर और सब्जी के झोले से आशी के उपर हमला कर रहे कौवों को मारना शुरू कर दिया। साथ ही मम्मी ने देखा जूते स्टैंड के बगल में झाड़ू रखा हुआ था, मम्मी को दरवाजे के पास झाड़ू रखना पसंद नहीं था लेकिन अभी उनके पास डांटने का समय नहीं था। मम्मी झाड़ू से उन्नत के ऊपर उड़ रहे कौवों को मारने लगी। उन्नत बोला

"पापा दरवाजा पूरा खोलो"

पापा ने देखा कि उन्नत कौवों को रैकेट से मार मारकर दरवाजे की तरफ लाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने दरवाजा जो आधा खुला हुआ था, उसको पूरा खोल दिया। उन्नत ने सोचा कि घंटी बजी है इसका मतलब बिजली आ गई है और पंखा चल सकता है। उसने देखा मम्मी पंखे के स्विच के पास थी। वह बोला

"मम्मी जल्दी पंखा चलाओ, जल्दी"

आशी तब तक मम्मी के पास जाकर चिपक गई, वह बहुत डरी हुई थी। मम्मी उसको संभालने लगी और उन्होंने उन्नत की बात नहीं सुनी। उन्नत ने दोबारा थोड़ा जोर से बोला जो इस बार मम्मी ने सुन लिया और उनको उन्नत का जोर से बोलना और आर्डर देना बिल्कुल पसंद नहीं आया मगर अभी बुरा मानने का समय नहीं था। उन्होंने जल्दी से फैन का बटन दबा दिया। फैन चलने से कमरे में हवा बहने

लगी जिससे कौवों को दिशाभ्रम होने लगा, वो सही से उड़ नहीं पा रहे थे और दीवारों से टकराने लगे। मूलचंद भी उछल–उछलकर उनको भौंक कर डराने लगा। उन्नत और पापा को मौका मिल गया, दोनों कौवों को मार–मारकर दरवाजे से बाहर धकेलने लगे। एक कौवा पंखे से टकराकर आशी के पैरों के पास गिरा और उसने फुटबॉल की तरह जोर से किक मारकर उसे घर से बाहर कर दिया। उन्नत ने जल्दी से दरवाजे को धक्का देकर बंद कर दिया।

उन्नत दरवाजे से लगकर हाँफता हुआ खड़ा हो गया, उसने देखा की मम्मी, पापा और आशी के चेहरे उड़े हुए हैं जैसे अभी कोई डरावना सपना देखकर उठे हों।

अध्याय 6
भागो कौवे आये

परिवार वालों ने अपने अपने जख्मों पर मरहम पट्टी कर ली लेकिन इस हमले से वो अभी तक नहीं उबर पाये थे। सबके होश उड़े हुए थे। कौवे घर के दरवाजे और खिड़की के बाहर घूम रहे थे। कौवों के काँव–काँव की आवाज से घर गूँज रहा था और खिड़की के पर्दे पर उनकी परछाई दिख रही थी। पापा बोले

"यहाँ रहना खतरनाक है"

"हम कुछ दिन यहाँ नहीं रहेंगे, कौवों से पीछा छूट जाएगा। गुप्ता अंकल ने यही किया था"

उन्नत मम्मी पापा की इस बात पर खुश होने लगा और चाहता था कि मम्मी हाँ कह दे। मम्मी बोली

"शर्मा जी अपना आईडिया कब इस्तमाल करेंगे?"

"अभी घोड़े के बाल ढूँढ रहे हैं"

"तो क्या करें, होटल चलें?"

उन्नत इस बात पर बहुत खुश हुआ। वह बोला

"मम्मी उस रिसोर्ट में चलें जहाँ स्लाइड्स थे बहुत सारे"

"सुरुची, हाँ वो ठीक जगह है"

"बढ़िया है, इसी बहाने छुट्टी हो जायेगी, बहुत दिन से बाहर रुके भी नहीं"

उन्नत खुशी से नाचने लगा और सामान पैक करने चला गया।

कमरे में, आशी मूलचंद के साथ बैठी थी, वो भी ये बात सुनकर खुशी से नाचने लगी और अपना सामान जमा करने में लग गई। आशी ने अपने सारे गुड़िया और खिलौनों को अपने पिंक बैग में भर दिया। उन्नत ने अपना बैग खोला और उसमें जासूसी का सामान रख दिया, पूजा के कमरे से ड्रोन उठाकर बैग में डाल दिया फिर दोनों बच्चे बैग कंधे पर लटकाये, बाहर हाल में पहुँचे। मम्मी पापा से बोली

"यहाँ घर से कैसे निकलेंगे?"

उन्नत ने पापा और मम्मी के बीच में बोलना चाहा जब उन्होंने उसको मना कर दिया। पापा बोले

"मैं कुछ सोचता हूँ। देखो बच्चों ने सामान बाँध भी लिया, तुम भी सामान ले लो। थोड़ी देर में निकलते हैं"

मम्मी अपने कमरे की तरफ चली गई।

***

उन्नत और आशी बहुत खुश थे, मूलचंद को रिसोर्ट के वाटर राइड्स और झूलों के बारे में बता रहे थे। जहाँ वो बहुत मस्ती करेंगे। मम्मी बैग पकड़े आ गई, वो ग्रीन जम्प सूट पहने थी और पापा टीशर्ट जीन्स पहने कंधे पर लैपटॉप बैग लटकाये थे। आशी बोली

"पापा मम्मी, आप दोनों अच्छे लग रहे हो"

"थैंक यू आशी, तुम भी बहुत सुन्दर लग रही हो"

आशी एक अच्छा सा पोज देकर फ्लाइंग किस देने लगी। पापा भी फ्लाइंग किस देते हुए अपने शूज पहनकर, कार की चाभी उठा लिये। वह बोले

"चले बच्चों?"

उन्नत और आशी पहले ही तैयार थे। मम्मी उन्नत और आशी के सिर पर कैप रखते हुए बोली

"ये मूलचंद कहाँ रहेगा?"

उन्नत चौंक गया, अभी तक उसको यही लग रहा था की मूलचंद उनके साथ जाने वाला है, वह बोला

"मम्मी ये अकेला कैसे रहेगा?"

"लेकिन हम इसको कहाँ लेकर जायेंगे"

आशी बोली

"पापा मम्मा ये हमारे साथ भी तो जा सकता है?"

"कार में जगह भी बहुत है"

"रिसोर्ट वाले मूलचंद को अलाऊ नहीं करेंगे"

"साथ ले लो, बात करने से हो जायेगा"

ये बोलकर पापा दरवाजे के की–होल से बाहर देखने लगे। लिफ्ट के पास कौवे भरे हुए थे, वो बोले

"बाहर लिफ्ट तक कौवे बैठे हुए हैं"

मम्मी बोली

"आपको गूगल में देखना चाहिये ना कि कौवा भगाने का क्या तरीका है"

"गूगल पर कुछ नहीं मिला"

"ऐसे कैसे गूगल अंकल धोखा दे सकते हैं?"

फिर सभी सामान पकड़े सोचने लगे कि घर से बाहर कैसे निकला जाए। आशी ने पटाखे जला कर फेंकने का आईडिया दिया जिसपर किसी ने ध्यान नहीं दिया सिवाए उन्नत के, उसे ये आईडिया अच्छा लगा लेकिन आशी का था इसलिए सपोर्ट नहीं किया। मम्मी बोली

"एयर गन से कौवों को डरा सकते हैं"

पापा बोले

"लेकिन उसके लिए दरवाजा खोलकर कौवों पर निशाना लगाना होगा और जितने कौवे हैं उसमें एयरगन की एक गोली से कौवों का तो कुछ नहीं होगा बल्कि वो घर में घुस जायेंगे"

"हाँ मम्मी, ये बहुत खतरनाक होगा"

मम्मी को समझ आ गया की उनका आईडिया काम नहीं करेगा और वो बोली

"ये कौवे खाना खाने के लिए भी नहीं जाते क्या?"

मम्मी की इस बात पर उन्नत, पापा और आशी ने सोचने जैसा चेहरा बनाया लेकिन उनको भी इस बात का जवाब नहीं पता था। उन्नत काफी सोचने के बाद, आशी के पटाखे फोड़ने वाले आईडिया को अपने आईडिया की तरह पेश किया, जो मम्मी और पापा को पसंद नहीं आया। पापा बोले

"बिल्डिंग में सब डर जाएंगे"

"हमारे टावर में 3 फॅमिली तो रहती है पापा"

पापा और मम्मी को भी ध्यान आया कि उनके टावर में सिर्फ 3 फ्लैट में ही लोग रहते हैं, बाकी घर खाली हैं। पापा बोले

"ठीक है, मैं सबको बता देता हूँ"

"पापा तब तक मैं दिवाली के बम लेकर आता हूँ"

उन्नत किचन में भागता हुआ गया, स्लैब पर चढ़कर पानी टंकी के पास रखे, पटाखों की थैली को उतार लाया और साथ में 3 अगरबत्तियाँ भी जला ली। फिर वह वापस मम्मी पापा के पास आ गया तब तक पापा विंग में रहने वाले सभी लोगों को कॉल करके बता चुके थे कि बम की आवाज से डरे नहीं। उन्नत ने पापा को एक अगरबत्ती और 2 बम दिए। आशी भी अगरबत्ती और बम लेना चाहती थी लेकिन उन्नत ने उसको बोला

"हाथ जल जाएंगे आशी"

शुक्र था कि आशी बहुत जिद्द नहीं की। उन्नत ने मम्मी की तरफ एक अगरबत्ती और बम पास किया लेकिन मम्मी ने लेने से मना कर दिया। मम्मी ने घर की चाभी और कपड़ों का बैग उठा लिया था। सभी तैयार थे। उन्नत ने तीसरी अगरबत्ती को दीवार से रगड़ कर बुझा दिया।

पापा ने धीरे से दरवाजा खोला। सबकी सांसें अटक गई कि कहीं कौवे घर के अन्दर मौका देखकर घुस ना जाए। आशी बोली

"पापा आराम से"

पापा ने बम के सुतली को अगरबत्ती की लौ से चिपका दिया। सुतली में आग फड़फड़ाते हुए बम के पास पहुँचने वाली थी तभी पापा ने जलते बम को दरवाजे के बाहर कौवों की तरफ फेंक दिया। बाहर बम फटा और इनके कान गूंजने लगे। उन्नत की–होल से बाहर देख रहा था। वह चिल्लाया

"कौवे भाग रहे हैं"

पापा जल्दी से दरवाजा खोलकर बाहर गए और लिफ्ट का बटन दबा दिया तब तक उन्नत ने दरवाजे को पकड़ लिया। कौवे जो बिखर गए थे वो संभलते हुए पापा की तरफ बढ़े। उन्नत बोला

"पापा जल्दी अंदर आ जाओ"

पापा दौड़कर दरवाजे से अंदर घुसे और उन्नत ने दरवाजा बंद कर दिया। उन्नत की होल से बाहर देखने लगा कि कौवे पहले की तरह वापस आ गए हैं। पापा ने पूछा

"लिफ्ट आ गई क्या?"

"नहीं, 2 फ्लोर नीचे है"

पापा बोले

"फटाफट सब लिफ्ट में चले जायेंगे, ओके?"

सबने हाँ कहकर जवाब दिया कि वो तैयार है। पापा ने दूसरे बम की सुतली को अगरबत्ती से जला दिया और बम को बाहर फेंका। बम जोर के धमाके से फटा और तब तक लिफ्ट भी पहुँच गई थी। पापा बोले

"चलो चलो"

उन्नत दरवाजे के पास ही था उसने दरवाजा खोल दिया और सभी भागकर खुले हुए लिफ्ट के दरवाजे से अन्दर घुस गए। अब उन्नत की बारी थी और पापा जब तक घर का दरवाजा बंद कर रहे थे तब तक उन्नत ने अपने हाथ में रखे बम को जला कर कौवों की तरफ फेंक दिया। धमाके से कौवे जो वापस जमा होने लगे थे बिखर गए। आशी लिफ्ट के दरवाजे के बीच पैर लगाकर बंद होने से रोके हुए थी। पापा ने भी घर का दरवाजा बंद कर दिया और लिफ्ट की तरफ भागते हुए उन्नत को बोले।

"उन्नत आ जाओ"

उन्नत दूसरा बम जला कर तैयार खड़ा था, उसने लिफ्ट की तरफ भागते हुए, कौवों की तरफ बम फेंक दिया। बम एक धमाके से फटा और तब तक उनका पूरा परिवार लिफ्ट के अंदर घुस चुका था। उन्होंने कौवों को हवा में भागते हुए देखा, लिफ्ट का दरवाजा बंद हो गया। लिफ्ट नीचे जाने लगी। उन्नत बोला

"कार पार्किंग तक कैसे जायेंगे?"

पापा बोले

"हाँ बाहर भी काफी कौवे होंगे"

सभी सोचने लगे और लिफ्ट नीचे पहुँच गई, दरवाजा खुल गया। पापा लिफ्ट से बाहर देखने लगे और उनके पीछे सभी झाँक रहे थे। बाहर कौवे काँव काँव करते हुए उड़ रहे थे। उन्नत बोला

"ये यहाँ हमसे पहले पहुँच गये"

मूलचंद ने भूँकने के लिए मुँह खोलना चाहा मगर आशी ने उसका मुँह बंद कर दिया और समझायी

"भूंकोगे तो उन्हें पता चल जाएगा कि हम यहाँ हैं"

"हाँ मूलचंद, एक दम शांत रहो, अभी हमें यहाँ से निकलना है"

उन्नत ने भी अपनी तरफ से मूलचंद को समझा दिया। उन्नत बोला

"अपने विंग के दरवाजे से तो नहीं निकल सकते"

"आप सिक्यूरिटी गार्ड को फोन करिए, वो आकर हटाएगा"

"उसका नंबर मेरे पास कहाँ है"

उन्नत आईडिया सोचने लगा और उसको ध्यान आया

"मम्मी पापा मैं जाकर गार्ड अंकल को बुला सकता हूँ"

"कैसे? कौवों से कटवाना है"

उन्नत ने बायीं ओर वाली दीवार की तरफ इशारा करते हुए बोला

"ये साइकिल स्टैंड की तरफ जाता है"

"पता है"

"तो मैं यहाँ से कूदकर गार्ड अंकल को बुला लाऊं"

मम्मी और पापा ने उसकी तरफ देखा और फिर उस दीवार को। पापा बोले

"बहुत ऊँची नहीं है!"

मम्मी बोली

"ठीक है उन्नत"

उन्नत ने कार की चाभी ली और जल्दी से दौड़ा, दीवार कूदकर दूसरी तरफ चला गया। उसके बाद वह साइकिल स्टैंड में

कौवों की नजर से बचता हुआ, तेज भागते हुए, एक पिलर के पास जाकर खड़ा हो गया। बाहर जाने पर, उसको कौवे देख लेते। उसने सीटी बजाकर गार्ड अंकल का ध्यान अपनी तरफ खींचा। उन्नत ने उनको इशारे से बुलाया। वह हैरान होते हुए उसके पास पहुँच गये। उन्नत बोला

"पापा को फोन करिये"

उनके पास नंबर था और उन्होंने फोन लगाया। वह फोन पर बोले

"साहब कौवों ने तबाह कर दिया है, आप लोग कौवों के कारण भाग रहे हो!"

उन्नत सोचने लगा की गार्ड अंकल ने शायद पटाखों की आवाज नहीं सुनी वरना उनको पता होता कि हमलोग कितनी मुसीबत में है। गार्ड अंकल फोन हटाते हुए बोले

"तुम पापा पास जाओ"

उन्नत उनको कार की चाभी देता हुआ जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते से लौटने लगा। वह हर कदम पर नजरें घुमाकर कौवों को खोजता, कोई कौवा नहीं दिखा। उसके पीछे गार्ड अंकल दौड़ते हुए, कार पार्किंग की तरफ चले गये। उन्नत मन ही मन खुश था और बोला

"कौओं अब हमें पकड़ो"

उन्नत वापस विंग में मम्मी पापा के पास आ गया तभी विंग के सामने कार आकर रुकी। कौवे थोड़ा फैल गये, पापा ने फोन पर गार्ड अंकल को कार का दरवाजा खुला रखने के लिये समझा दिया था। पापा बोले

"दरवाजा खुला है, सभी फटाफट कार में घुस जायेंगे, ठीक है?"

सबने हाँ में सिर हिलाया और अपना अपना सामान संभाले विंग से बाहर निकलने लगे। बाहर कौवों का काँव–काँव बढ़ रहा था और उनको किसी भी वक्त देख सकते थे। कार के दोनों दरवाजे खुले थे। विंग के गेट से कार, अभी भी 10 कदम दूर थी। सभी दौड़ते हुए

कार के अन्दर एक झटके से घुसना चाहते थे लेकिन घुस नहीं पाये। वो दरवाजे में अटक गये। कुछ कौवे उनकी तरफ बढ़े और उनको चोंच मारने ही वाले थे कि सब कार के अन्दर घुस गये और दरवाजा बंद कर दिया। उन्नत और आशी कौवों को जीभ दिखा रहे थे। उन्नत बोला

"अब कौवों क्या करोगे?"

"मैं जीत गया, उन्नत जीत गया, कौवे हार गए"

घरवालों के चेहरे पर खुशी आ गई और पापा ने गार्ड को थैंक यू बोला मगर वह नीचे उतरने में झिझक रहे थे। वह बोले

"साहब, आप मुझे बिल्डिंग के गेट पर उतार दीजिये"

पापा ने कार चलाना शुरु किया और कार झट्ट से आगे बढ़ गई।

***

कौवे नजर रखे हुए थे। कार के बिल्डिंग से बाहर निकलते ही वो कार के पीछे पड़ गये। पापा को मौका मिल गया कार को तेज चलाने का और उन्होंने फिर कार को तेजी से घुमाते हुए, एक गली से दूसरे गली में मोड़ते हुए, कौवों को चकमा दे दिया। सबको यकीन हो गया कि उन्होंने कौवों को धोखा दे दिया है। पापा ने कार को रिसोर्ट की तरफ घुमा दिया। उन्नत आगे बैठा हुआ था और उसने कार के नेविगेटर में रिसोर्ट डेस्टिनेशन के तौर पर फिक्स कर दिया। वह बोला

"पापा आप इतनी बार वहाँ जा चुके हैं, फिर भी आपको रास्ता याद नहीं है"

"तुम्हे याद है?"

"पर मैं तो बच्चा हूँ"

"और मैं बूढ़ा"

उन्नत पीछे वाली सीट की तरफ मुड़कर मूलचंद के साथ खेलता हुआ पापा से बात कर रहा था। उन्नत का ध्यान मम्मी की तरफ गया जो फोन पर अपने साथ हुए हादसे के बारे में, उन्नत की टीचर को बता रही थी। मम्मी बोली

"2 दिन में आ जाएंगे, हाँ मैंने उन्नत की बुक्स ले ली है, मैं पढ़ा

दूंगी"

उन्नत मूलचंद को सहलाते हुए रुक गया, मम्मी और आशी के बीच रखे बैग को देखकर उसे समझ आ गया कि इसके अंदर जरूर मैथ्स और इंग्लिश की किताबें होगी। उसका टेंशन बढ़ने लगा और फिर वह टेंशन को भूलते हुए, मूलचंद को गुदगुदी करने लगा। मूलचंद आशी की गोद में उछलता कूदता हुआ बचने की कोशिश कर रहा था। आशी भी मूलचंद के गोद में यूँ घूमने से खुश भी होती और कई बार चिल्ला पड़ती जब मूलचंद के नाखून उसके हाथ या पैर पर खुरच जाते।

अध्याय 7
स्कूल की सीनिअर

घंटे भर चलने के बाद, कार रिसोर्ट के सामने आकर रुकी। कार के रुकते ही उन्नत और आशी जल्दी कार से उतर गए। आशी के गोद से मूलचंद कूदकर बाहर घूमने लगा। उन्नत और आशी मूलचंद का चेहरा घुमाकर रिसोर्ट दिखाने लगे। उन्नत बोला

"अब यहाँ कौवों का डर नहीं है, हम दोनों फ्लाइंग डिस्क खेलेंगे"

"मैं मूलचंद को बॉल उठाकर लाना सिखाऊंगी"

"हाँ, इतना बड़ा हो गया है लेकिन इसको कुछ नहीं आता है"

"भैया ये बहुत तेज है"

उन्नत को इस रिसोर्ट का पार्क बहुत पसंद था, तरह–तरह के झूले, स्लाइड्स, काफी सारे पंछी और जानवर थे। उन्नत ने पूछा

"पापा हम लोग पार्क में खेलने जाएं"

पापा ने जवाब नहीं दिया और उन्नत ने मुड़कर देखा तो वो अभी कार के पास ही थे। तभी वहाँ दौड़ते हुए सिक्यूरिटी गार्ड अंकल आए। वह ताज्जुब से मूलचंद को देखते हुए बोले

"यहाँ कुत्ते अलाउड नहीं है"

मम्मी बोली

"क्या हुआ भैया"

"रिसोर्ट का नियम मैडम, यहाँ कुत्ते नहीं रुक सकते"

"हमें भी पता है लेकिन इसको बाहर नहीं छोड़ सकते। कहाँ जाएगा ये?"

"भैया ये कुत्ता हमारे साथ ही रहेगा और कोई रास्ता नहीं है"

"सर, लेकिन कुत्ते से दूसरे कस्टमर्स को दिक्कत होगी"

मम्मी बोली

"तो क्या हम यहाँ से चले जाए या इस कुत्ते को कौवों से मरने

के लिए बाहर छोड़ दें"

"कौवों से मरने?"

गार्ड अंकल को समझ नहीं आया और वह उन सभी को ताज्जुब से देखने लगे तभी वहाँ रिसोर्ट के मैनेजर अंकल आ गए। वह बोले

"आपलोग, बहुत दिनों बाद"

"हाँ, लेकिन ये कह रहे हैं कि हम रुक ही नहीं सकते"

"मैडम मैंने ऐसा कब कहा, कुत्ता नहीं रुक सकता ये बोल रहा हूँ"

"ठीक है पीटर, परेशानी की कोई बात नहीं है। तुम इनका सामान अंदर रखवाओ"

मैनेजर अंकल का इतना कहना था कि पापा ने कार की डिक्की का बटन दबाया और डिक्की सू की आवाज के साथ खुल गई। गार्ड अंकल सलाम करके सामान निकालने चले गए। उन्नत ने फिर पूछा

"पापा हमलोग पार्क में खेलने जा सकते हैं?"

पापा ने मैनेजर अंकल की तरफ सवालिया नजरों से देखा। मैनेजर ने मुस्कुराते हुए उन्नत की तरफ हाथ मिलाने के लिए बढ़ाया। उन्नत ने हाथ मिलाते हुए बोला

"हेलो अंकल"

"हेलो बेटा, कैसे हो?"

"बढ़िया अंकल"

मैनेजर अंकल ने आशी की तरफ भी हाथ बढ़ाया लेकिन वह आगे आने की बजाये पीछे चली गई। मैनेजर अंकल बोले

"लगता है, मुझसे गुस्सा है"

"नहीं अंकल, वो शर्माती है"

मैनेजर अंकल हँसने लगे, उन्नत को जवाब का इन्तजार था कि "क्या वो लोग खेलने जा सकते हैं?", मैनेजर अंकल ने पापा से कहा

"बच्चे खेलने जा सकते हैं"

"ओके, थैंक यू"

उन्नत मैनेजर अंकल की बात सुनकर खुश हो गया। वह बोला

"क्या मूलचंद यहाँ रुक सकता है?"

"हाँ"

"थैंक्स अंकल"

उन्नत खुश होता हुआ मूलचंद के पास गया। आशी को साथ लेता हुआ, वह पार्क की तरफ दौड़कर जाने लगा। उसने जाते जाते सुना की पापा से मैनेजर अंकल पूछे

"कौन सा ब्रीड है?"

"देसी"

उन्नत और आशी मूलचंद के पीछे दौड़ते हुए पार्क में पहुँचे। उन्नत स्लाइड पर फिसलने चला गया और आशी मूलचंद को वहाँ रखे पिंजरों के पास ले गई। मूलचंद को पिंजरे में बैठे खरगोश को दिखाते हुए बताने लगी

"ये देखो रैबिट, प्यारा है न?"

मूलचंद खरगोश को देखकर भौंकने लगा, वह डर से सिकुड़कर अपने पैरों को समेंटता हुआ, पिंजरे में पीछे की तरफ जाकर चिपक गया। आशी बोली

"मूलचंद तुमने उसको डरा दिया, बुरी बात"

मूलचंद को पता नहीं क्या समझ आया कि वह आशी के गाल चाटने लगा। उधर उन्नत स्लाइड से नीचे फिसलता हुआ आया और फिर दौड़कर चढ़ने लगा। जैसे ही वह सीढ़ियों से स्लाइड के ऊपर चढ़ रहा था उसने दायीं तरफ फूलों के गमलों के पास एक लड़की को देखा। वह गुलाब के पेड़ों के बीच झुककर जमीन पर कुछ खोज रही थी। उन्नत उतरकर उसके पास गया। वह पूछा

"क्या खोज रही हो, मैं कुछ मदद करूँ?"

वह लड़की आवाज सुनकर हड़बड़ा गई और उठ खड़ी हुई। वह बोली

"तुमने मुझे डरा दिया"

"सॉरी, तुम क्या खोज रही हो?"

"मेरे कान के बूंदे"

"कान के बूंदे?"

"हाँ, कान में पहनते है ना"

लड़की ने अपना हाथ खोलकर दिखाया, जिसमें दूसरे कान का बूंदा था। वह बोली

"ये भी ना खो जाए, इसलिए निकालकर रख लिया है"

"किधर गिरा, कुछ पता है"

"यहाँ पार्क में खेल रही थी तो गिर गया, मिल नहीं रहा। मम्मी बहुत नाराज होगी"

"मैं हेल्प करुँ?"

"प्लीज"

उन्नत ने मुँह को गोल किया और हल्की सी सुरसुराती हुई सीटी की आवाज निकाली। वह लड़की उसको गौर से देखने लगी और उन्नत ने हाथ बढ़ाते हुए खुद को इंट्रोड्यूस किया

"उन्नत"

"आर्या"

तभी मूलचंद वहाँ दौड़ता हुआ आ गया और पीछे से उसको रोकती हुई आशी। मूलचंद आकर उन्नत के कमर पर पैर रख कर खड़ा हो गया। आर्या बोली

"ये तुम्हारा कुत्ता है?"

आशी गुस्सा होते हुए बोली

"मूलचंद नाम है इसका"

"सॉरी, लेकिन ये तो रोड का कुत्ता है"

आशी को इतना सुनना था कि वह गुस्से में बोली

"मैं मम्मी पापा के पास जा रहा हूँ, मूलचंद चलो"

वह मूलचंद के गले में हाथ डालकर झुकते हुए साथ ले जाने लगी लेकिन मूलचंद ने जमीन पर पैरों को चिपका दिया। वह नहीं

जाना चाहता था, आशी को उसपर भी गुस्सा आया और वह अकेले ही चली गई। उन्नत और आर्या उसको जाते हुए देख रहे थे। फिर उन्नत ने बताया

"हाँ, ये हमारे बिल्डिंग के बाहर रहता है। लेकिन हमारा अच्छा दोस्त है और देखना तुम्हारे कान के बूंदे ये कैसे अभी ढूँढ़ देगा"

उन्नत ने आर्या से, उसके कान का दूसरा बूंदा लेकर, मूलचंद को दिखाया और उसके कान में बोला

"ऐसा ही एक और बूंदा यहाँ खो गया है, उसको ढूँढ दो"

आर्या गौर से, उन्नत को मूलचंद के कान में बोलते हुए देख रही थी। उन्नत ने जो कहा वह सुन नहीं पायी पर उसको ताज्जुब हुआ कि मूलचंद बहुत ध्यान से उन्नत की बातें सुन रहा है। उन्नत ने फिर उसके गले को सहलाकर जाने को कहा और मूलचंद आसपास सूंघने लगा। उन्नत उठकर मूलचंद के पीछे जाने लगा और आर्या भी उसके साथ हो ली। मूलचंद पार्क की घास को सूंघते हुये चल रहा था और उसके पीछे पीछे उन्नत और आर्या। वह बोला

"तुम किस स्टैण्डर्ड में पढ़ती हो?"

"2, तुम?"

"1, कौन सा स्कूल?"

"होली फैमिली, तुम?"

"क्या? मैं भी होली फैमिली में पढ़ता हूँ, तुम्हे कभी देखा नहीं?"

"लेकिन मैंने तुम्हे देखा हुआ है। पहले ही मुझे तुम्हारा चेहरा जाना पहचाना सा लग रहा था"

"ये कुत्ता। सॉरी मूलचंद। इनको तो कोई नहीं पालता?"

"मैं जब सीनियर केजी में था तो पापा के साथ बिल्डिंग के बाहर बस का इंतजार करता था। वहाँ कचड़े के डब्बे के पास मूलचंद अपने 7 भाइयों और बहनों के साथ खेलता हुआ मुझे मिला था"

"तुम्हारे पापा उसके साथ खेलने से रोकते नहीं थे"

"कभी नहीं, बल्कि मेरे कहने पर मूलचंद के लिए बिस्कुट भी लाते हैं"

"मेरे पापा मम्मी तो रोड के कुत्तों के पास नहीं जाने देते"

"मेरी मम्मी को भी पसंद नहीं"

"ये काटेगा तो नहीं?"

"नहीं! वैसे मैंने इसको रेबीज का इंजेक्शन भी लगवाया है"

मूलचंद आर्या के पैरों के आसपास घूमने लगा और आर्या डरकर उछल गई। वह बोला

"डरो मत, ये फटाक से दोस्ती कर लेता है, बहुत मस्तीखोर है"

आर्या ने देखा की मूलचंद उसके पैरों के पास घास सूंघता हुआ घूम रहा है और उसको ये अच्छा लगने लगा। आर्या का टेंशन कम हो गया, जो उन्नत को अच्छा लगा। वह जब किसी को परेशान देखता तो उसे बहुत बुरा लगता, वह बोला

"इसने एक बार मुझे बचाया भी है"

"कैसे?"

आर्या के पास से मूलचंद भाग गया और "सी–सॉ" के पास जाकर जमीन सूंघने लगा। उन्नत हँसने लगा और उसको देखकर आर्या बोली

"हँसने वाली क्या बात हुई"

"मूलचंद, शरमा कर भागा है"

"अच्छा, क्यूँ?"

"मैं उसकी बहादुरी वाली बात बताने वाला हूँ ना"

"ओह हाँ, तो बताओ क्या हुआ था"

"एक बार मेरी बॉल उछलकर बिल्डिंग से बाहर सड़क पर चली गई। मैंने सोचा की कितना समय लगेगा बॉल लाने में, यूँ रोड पर जाऊँगा और फटाक से लेकर आ जाऊँगा। गार्ड अंकल की नजरों से बचकर मैं सड़क पर बॉल लाने चला गया। तभी मुझे ध्यान नहीं रहा और पीछे से मेरी तरफ एक कार आ रही थी जिसको मैंने देखा ही नहीं"

"ओह, फिर!"

"फिर क्या, कार से मेरी ठोकर होने वाली थी। मुझे तो पता भी

नहीं था कि कार मेरी तरफ आ रही है। वो तो पता नहीं कहाँ से मूलचंद भौंकता हुआ वहाँ पहुँच गया। वह मेरे और कार के बीच में आ गया। मैं तो बच गया पर इसे बहुत चोट आयी थी"

"वॉऊ, बहुत होशियार और बहादुर है। क्या नाम बताया तुमने?"

"मूलचंद"

"हाँ मूलचंद और तुमसे बहुत प्यार करता है"

"बहुत ज्यादा, इसके सामने मुझे कोई डांट या मार नहीं सकता। सीधा झपट्टा मारता है"

उन्नत और आर्या मूलचंद को पार्क में इधर उधर सूँघते हुए देख रहे थे कि तभी उसने भूँकना शुरू किया। उन्नत बोला

"लगता है मूलचंद को बूंदा मिल गया"

उन्नत और आर्या मूलचंद की तरफ दौड़कर गए। उन्होंने पास जाकर देखा कि मूलचंद जमीन पर पड़ी किसी चीज को देखकर भौंक रहा है। उन्नत ने उस जगह देखा तो आर्या के कान का बूंदा गिरा हुआ था। वह बोला

"मिल गया, ये तुम्हारा ही है"

आर्या ने कान का बूंदा उठाकर अपनी जेब में रख लिया और मूलचंद के गले में बाँह डालकर उसके गाल पर "किस" करने वाली थी लेकिन उससे पहले वह आर्या के पास से भागकर पार्क में दौड़ने लगा। उन्नत बोला

"मूलचंद को लड़कियों से किस करवाना बिल्कुल पसंद नहीं"

आर्या हँसने लगी और बोली

"ओह, थैंक गॉड कि मेरा बूंदा मिल गया। बूंदा यहाँ गिरा हुआ था और मैं इसको गमले के पास खोज रही थी। अभी अगर मूलचंद नहीं होता तो बूंदा मुझे नहीं मिलता"

उन्नत ने ध्यान दिया कि आर्या के सामने के 2 दाँत टूटे हुए हैं। उसने जैसे ही देखा कि उन्नत उसके दांतों की तरफ देख रहा है उसने मुँह बंद कर लिया।

उन्नत की मम्मी पुकारी

"उन्नत यहाँ कमरे में आओ, जल्दी"

उन्नत समझ गया कि जरूर आशी ने मम्मी से झूठ बोला है, वह बोला

"ये आशी सुधर नहीं सकती"

उन्नत ने आर्या को बाद में मिलने का बोलकर, सीटी बजाते हुए मम्मी की तरफ दौड़ पड़ा। सीटी की आवाज सुनकर मूलचंद भागकर उसके पास आ गया। दोनों मम्मी के पास पहुँचे। उन्नत बोला

"मम्मी मैंने आशी को नहीं रुलाया, उसने झूठ बोला है"

"पहले कमरे में चलो"

मम्मी के पीछे पीछे उन्नत और मूलचंद कमरे की तरफ चल दिए।

***

कमरे में पहुँचकर उन्नत ने देखा कि आशी पापा के गोद में मुँह छिपाये हुए, सुबक–सुबक कर रो रही है। उन्नत समझ गया कि आशी ने क्या क्या चुगली की होगी और उसके पास जवाब तैयार थे। वह बोलने ही वाला था कि मम्मी ने उसको चुप करवाया। आशी तभी पापा की गोद से कूदकर मूलचंद के पास पहुँच गई और उससे लिपट गई। मम्मी बोली

"उन्नत और आशी, मूलचंद को यहाँ एक शर्त पर रुकने दिया गया है। तुम लोग इसको कमरे से बाहर लेकर नहीं जा सकते। समझ गए?"

"क्या, मगर हमलोग मूलचंद के साथ यहाँ खेलना चाहते हैं"

"अगर मूलचंद ने किसी को काट लिया तो बहुत मुसीबत होगी"

"पर मम्मा?"

मम्मी ने रियेक्ट किया कि अब कुछ नहीं हो सकता है। आशी गुस्से में मूलचंद को बिस्कुट के पैकेट से बिस्कुट निकाल निकालकर खिलाने लगी। वह बोली

"मुझे मम्मा बिल्कुल पसंद नहीं"

"तुम दोनों भाई बहन चाहे जितनी भी मुझसे नफरत करो लेकिन मूलचंद कमरे से बाहर नहीं निकलना चाहिए"

उन्नत को समझ आ गया कि बहस करने का कोई फायदा नहीं और उसका मन उदास हो गया। वह जाकर पापा के गोद में बैठने की कोशिश करने लगा। क्योंकि अब वह बड़ा हो गया है तो पापा के गोद में समा नहीं पाता। ऊपर से पापा अपने मोबाइल पर काम रहे थे तो उन्होंने हाथ का सहारा देकर उन्नत को गोद में लपेटा नहीं। उन्नत उनके पेट के चारो तरफ हाथ डालकर सीने में सिर घुसा कर चिपक गया। उन्नत बताना चाहता था कि कैसे मूलचंद ने उसके स्कूल की सीनिअर का खोया हुया बूंदा खोज दिया लेकिन वह नाराज हो गया था और उसका बोलने का मन नहीं कर रहा था। तभी मम्मी बोली

"आप भी तैयार हो जाओ। बच्चों तुम सब भी तैयार हो जाओ"

इतना कहकर मम्मी तैयार होने चली गई। उन्नत को समझ नहीं आया कि उनको कहाँ जाने के लिए तैयार होना है तो उसने पापा की तरफ देखा मगर पापा मोबाइल में खोये हुए थे। उन्नत ने धीरे से पूछा

"पापा हमें कहाँ जाना है?"

"शाम को यहाँ एक थीम पार्टी है, वहीं जाना है"

"कैसी थीम पार्टी?"

"सुपरहीरो वाली"

"पर हमारे पास तो कॉस्टयूम नहीं है"

"मैनेजर के कमरे से ले आओ, मेरे लिए स्टार वार और मम्मी के लिए पायरेट का मास्क ले आना"

उन्नत को ध्यान आया कि मूलचंद नहीं जा पायेगा। वह बोला

"और मूलचंद? वो कमरे में अकेला रहेगा?"

"हाँ, क्या दिक्कत है?"

"वो भी घूमने आया है न? अगर आप घूमने जाओ और आपको कमरे में बंद कर दिया जाए तो अच्छा लगेगा?"

"नहीं, मगर ये वहाँ नहीं जा सकता है"

"अगर इसको वहाँ कोई नहीं पहचान पाए तो?"

"तो तुम कोशिश कर सकते हो"

"कुछ गड़बड़ हुई तो आप बचा लोगे न?"

"मूलचंद पार्टी में है, बस ये किसी को पता नहीं चलना चाहिए"

"किसी को पता नहीं चलेगा"

उन्नत का दिमाग तेजी से उपाय सोचने लगा कि वह कैसे मूलचंद को लेकर पार्टी में जाएगा। वह जल्दी से पापा के गोद से उछलकर नीचे कूद गया और तेजी से आशी के पास गया लेकिन वह जैसे ही उसके पास पहुँचा, आशी मूलचंद को लेकर दूसरी तरफ मुड़ गई। उन्नत आशी के बगल में बैठ गया और उससे बोला

"आशी शाम को रिसोर्ट में पार्टी है। मूलचंद को ले जाना है?"

"मम्मी ने कहा है कि मूलचंद पार्टी में नहीं जाएगा, तो मैं भी नहीं जा रहा"

"ओके, लेकिन मूलचंद जाएगा तब तो जाओगी?"

"सुना नहीं, मम्मी ने मना किया है"

"मेरे पास एक तरीका है"

आशी ने मुड़कर उन्नत की तरफ देखा और उसको यकीन नहीं हो रहा था। वह बोली

"तुम फिर फंसाओगे"

"नहीं, बढ़िया प्लान है मेरे पास, तुम साथ दोगी?"

आशी ने उन्नत को थोड़ी देर देखा और धीरे से अपना सिर हिलायी। उन्नत ने उसको कुछ समझाया और फिर कमरे से निकलकर भाग गया। आशी को समझ नहीं आ रहा था कि उन्नत जो बात अभी बोल कर गया है वो कैसे करेगा। उसको उन्नत के प्लान में शामिल होने में डर लग रहा था। उसने 2 बार सोचा कि मैं उन्नत के प्लान में शामिल हो जाउं या नहीं। वह सोची

"अगर प्लान काम कर गया तो पार्टी में बहुत मजा आएगा, कभी कभी तो उन्नत भैया का प्लान सफल भी होता ही है। शायद इस

बार भी हो जाए"

आशी दौड़ती हुई कमरे में गई जहाँ मम्मी ने दरवाजे को सिर्फ सटा रखा था। आशी तेजी से अंदर घुसी तो मम्मी चौंक गई। वो मेकअप कर रही थी और उनको लगा पता नहीं कौन आ गया। उन्होंने चौंककर देखा तो आशी थी। मम्मी बोली

"जल्दी से तैयार हो जाओ आशी"

"मैं तैयार हूँ मम्मा। बस शूज पहनना है"

मम्मी का हाथ होठों पर लिपस्टिक लगाते लगाते रुक गया और उसको देखने लगी। उन्होंने आशी को ऊपर से नीचे देखा और फिर बोली।

"बाल भी बना लो"

"ठीक है"

आशी आईने के पास जाकर कंघी उठाकर बाल बनाने लगी लेकिन उसकी नजर मम्मी पर टिकी हुई थी। जैसे ही मम्मी मेकअप करने में बिजी हो गई वैसे ही आशी टेबल से 6 सेफ्टी पिन उठाकर पॉकेट में डाल ली। फिर वह कमरे में रखे हुए बैग के पास गई, उसने जल्दी से बैग खोला। उसका पूरा ध्यान मम्मी पर था और दिल में प्रार्थना कर रही थी कि मम्मी ऐसे ही मन लगाकर मेकअप करती रहें। आशी ने जल्दी से बैग के अंदर से उन्नत का एक टी शर्ट और अपना एक पैंट निकाल लिया। सबको हाथ में लपेट कर वह धीरे से दरवाजे की तरफ बढ़ने लगी तभी मम्मी बोली

"आशी"

आशी रुक गई और उसका दिल जोर जोर से धड़कने लगा कि मम्मी ने उसको पकड़ लिया है। वो मुड़कर देखी तो मम्मी अभी भी खुद को शीशे में देखते हुए चेहरे पर फाउंडेशन लगा रही थी। मम्मी बोली

"उन्नत को भेजो"

मम्मी ने शीशे में देखते हुए बोला था और आशी की जान में जान लौट आयी कि मम्मी ने उसकी कारस्तानी को नहीं देखा। वह

बोली

"हाँ मम्मा भेजता हूँ"

आशी यह बोलती हुई दौड़कर कमरे से बाहर भाग गई। बाहर आकर आशी मूलचंद के पास बैठ गई और तभी वहाँ उन्नत सुपर हीरो के मास्क लेकर आया। वह बोला

"कॉस्ट्यूम में सिर्फ मास्क ही है"

आशी उसको देखकर खुशी से चुरा कर लाया हुआ सामान दिखाने लगी, उन्नत ने उसको छिपाने का इशारा किया और धीरे से बोला

"मम्मी ने देखा तो नहीं?"

"नहीं"

"वैरी गुड"

"मम्मी तुमको बुला रहा है"

"बुला रही है... रहा है नहीं..."

"हाँ वही तो बोला... मम्मी जल्दी बुलाया है"

"ओह्ह... इसको अपने पास रखो"

उन्नत ने अपने साथ लाए पॉलिथीन वाला मास्क आशी को दे दिया और खुद मम्मी से मिलने चला गया। वह पहुँच कर देखा की मम्मी तैयार है और वो बोली

"तुम्हारे कपड़े भी सही हैं बस मुँह धोकर बाल बना लो"

"ओके"

उन्नत दौड़कर बाथरूम में चला गया और मुँह धोकर बाहर आया तब तक मम्मी और पापा पार्टी में जाने के लिए तैयार थे। मम्मी पापा के चेहरे पर कोल्ड क्रीम लगा रही थी और वह मुँह सिकोड़ रहे थे क्योंकि उनको मम्मी का ऐसा करना बिल्कुल पसंद नहीं था। मम्मी बोली

"आप ही का चेहरा है। देखो क्रीम लगा लेने से कितना अच्छा लगने लगा। वरना सूख गया था"

पापा ने कुछ नहीं बोला और अपने मोजे को सूँघकर पूछे

"एक दिन और पहन सकता हूँ ना?"

मम्मी बोली

"सूँघ कर ये कैसे पता चल जाता है"

जूते पहनते हुए उन्नत आशी की तरफ देखने लगा जो सोफे पर बैठी थी और मूलचंद उसके बगल में बैठा हुआ था। आशी ने अंगूठा दिखाते हुए इशारा किया कि सब सही है। उन्नत ने भी मुस्कुराकर जवाब में अंगूठा दिखा कर ओके किया। मम्मी बोली

"बच्चों जल्दी चलो, मुझे कमरा भी बंद करना है"

पापा ने स्टार वार के "डार्थ वेडर" का मास्क पहन लिया और मम्मी ने जोम्बी का क्योंकि पायरेट का मास्क नहीं मिला तो उन्नत जोम्बी का मास्क लेकर आ गया था। उन्नत ने जूते पहनते हुए पापा की तरफ इशारा किया और पापा ने मम्मी से कहा

"हमलोग पार्टी में चलते हैं, ये लोग आ जाएंगे"

"क्यूँ? साथ, क्यूँ नहीं चल रहे?"

उन्नत बोला

"मैं थोड़ी देर पढ़ लेता हूँ"

उन्नत की इस बात पर मम्मी को यकीन नहीं हुआ। वह बोली

"बाद में पढ़ लेना"

"थोड़ा पढ़ लेता हूँ न, पार्टी वैसे भी बड़े लोगों की है"

मम्मी को ताज्जुब हुआ और वो थोड़ी देर सोचकर बोली

"अच्छे से दरवाजा बंद करके आना और मूलचंद देखना बाहर ना निकल जाए"

"ओके मम्मी"

मम्मी और पापा चले गये, उन्नत बोला

"आशी तुम दरवाजे पर जाकर देखो कि मम्मी पापा लौट ना आये। तब तक मैं मूलचंद को तैयार करता हूँ"

आशी का जाने का मन नहीं था लेकिन यह जरूरी था। वरना वो दोनों अगर पकड़े जाते तो आज पिटाई होनी तय थी। आशी जाकर दरवाजे के पास खड़े होकर बाहर देखने लगी। उन्नत ने टी शर्ट पहले

मूलचंद के आगे वाले हाथों में डाल कर पहनाया और फिर उसके पीछे वाले पैरों में आशी का पैंट घुसाते हुए पहना दिया। उन्नत के पैंट छोड़ते ही नीचे सरक कर जमीन पर गिर गया और उसने आशी का लाया हुआ सेफ्टी पिन लगाकर कपड़ों को मूलचंद के शरीर पर टाइट करने लगा। आशी ने दरवाजे से देखते हुए कहा

"लेकिन इसके हाथ पैर को देखकर लोग पहचान लेंगे?

"हाँ, इसको ऐसे नहीं ले जा सकते"

उन्नत सोचने लगा और उसके दिमाग में एक आईडिया आया। उसने आशी का एक्स्ट्रा जूता मूलचंद के पैरों में पहना दिया। और उसके हाथों पर सफेद कपड़ा बाँध दिया, फिर बोला

"अब सही है ना आशी?"

आशी ने मुड़कर देखा तो उन्नत मूलचंद का हाथ पकड़कर खड़ा किये हुआ है। आशी को मूलचंद टी शर्ट, पैंट और जूतों में बिल्कुल बच्चे जैसा लग रहा था। वह बोली

"अरे वाह, मूलचंद तो हीरो लग रहा है"

"बिल्कुल, अब हमें मूलचंद का हाथ ऐसे ही पकड़ कर ले चलना है"

आशी भागकर आयी और मूलचंद को गले लगाते हुए बोली

"मेरा एक और भईया, मूलचंद भईया"

उन्नत को ये अच्छा नहीं लगा लेकिन क्यूँ ये समझ नहीं आया"

उसने सोचा बाद में पापा से पूछूँगा फिर वह अपने साथ लाई हुई पॉलिथीन को खोलकर उसमें से 3 मास्क निकाला। आशी मास्क देखकर छीनने लगी। उन्नत बोला

"आशी मैं दे रहा हूँ न"

"मुझे मास्क दो"

"दे रहा हूँ, चुप"

आशी चुप हो गई और उन्नत ने उसको तीनों मास्क दिखाए। स्पाइडरमैन, कैटगर्ल और मिक्की माउस, वह बोला

"कौन सा चाहिए?"

उन्नत आशी की नजरें घूमता हुआ देख रहा था, वह एक एक करके सभी मास्क को देख रही थी। उन्नत का दिल धड़कने लगा की कहीं वह स्पाइडरमैन वाला मास्क ना मांग ले। उसने जल्दी से खुद स्पाइडरमैन वाला मास्क पहन लिया और बाकी दोनों मास्क दिखाता हुआ बोला

"इन दोनों में से चुनना है, आशी"

आशी को वैसे भी स्पाइडरमैन का मास्क पसंद नहीं था। उसको स्पाइडरमैन और उसके फैन बेवकूफ लगते थे। वो कैटगर्ल वाला मास्क लेकर पहनने लगी। उन्नत ने मूलचंद के सिर के चारो तरफ मिक्की माउस का मास्क पहना दिया।

"अच्छा हुआ इसका सिर आगे और पीछे से ढ़क गया"

उसके बाद उन्नत और आशी मूलचंद के दोनों तरफ, उसके आगे वाले पैरों को पकड़कर, खड़े हो गये। फिर वो चलने लगे और मूलचंद का पैर कभी हवा में उड़ता तो कभी एक पैर दूसरे पैर के ऊपर आ जाता। उन्नत और आशी को मजा आ रहा था कि वह मूलचंद को बच्चे की तरह चलना सिखा रहे हैं।

अध्याय 8
फंस गया मूलचंद

रिसोर्ट के बड़े पार्क में तेज गाना चल रहा था और बैठने के लिए टेबल चेअर लगे हुए थे। मेहमान तरह–तरह के मास्क लगाए नाच रहे थे, कुछ आपस में बातें कर रहे थे और कुछ मोबाइल पर तस्वीरें ले रहे थे। वेटर अंकल लोग खाने के प्लेट लेकर मेहमानों के बीच घूम कर सर्व कर रहे थे, उन्नत और आशी को ऐसा लग रहा था जैसे हर कोई उनको घूर–घूरकर देख रहा है। उन्हें डर लग रहा था कि अब पकड़े गये या तब पकड़े गये। एक वेटर अंकल उनके पास कोल्ड ड्रिंक का प्लेट लेकर आए जिसे देखकर आशी के मुँह में पानी आने लगा, उन्नत बोला

"नो आशी"

वह उन्नत के बोलने से पहले मूलचंद का हाथ छोड़ कर कोल्ड ड्रिंक का ग्लास उठाने के लिए उछलने लगी। मूलचंद का जो पैर उन्नत ने पकड़ रखा था उसपर वह चारो तरफ घूमकर उन्नत के पैर से चिपक गया। उन्नत ने मूलचंद के आगे वाले दूसरे पैर को जल्दी से पकड़ लिया और डर गया की मूलचंद को अब हर कोई पहचान लेगा। उसने मूलचंद का खिसका हुआ मास्क सही किया और वह सोचने लगा

"जैसे ही नजरें उठाऊँगा तो सभी मेरी तरफ ही देख रहे होंगे"

उसने नजर उठायी तो देखा सामने खड़े वेटर अंकल उसको गौर से देख रहे हैं जबकी आशी अभी भी कूद–कूदकर कोल्ड ड्रिंक के ग्लास के पास पहुँचने की कोशिश कर रही है। आशी ने वेटर अंकल की पतलून खींचकर अपनी तरफ ध्यान खींचा। वेटर अंकल से उसने 3 कोल्ड ड्रिंक ग्लास ले लिया और वेटर आगे बढ़ गया। आशी बोली

"भैया ये लो कोल्ड ड्रिंक"

"जल्दी चलो, कोई देख लेगा"

उन्नत ने अपना और मूलचंद वाला कोल्ड ड्रिंक ले लिया फिर दोनों जल्दी जल्दी मूलचंद को लेकर पार्टी में कोने की तरफ जाकर खड़े हो गये। आशी कोल्ड ड्रिंक पीने लगी और बहुत खुश थी, वह बोली

"भैया, पार्टी में किसी को पता नहीं चला कि हमारे साथ चलता हुआ मिक्की माउस एक बच्चा नहीं बल्कि मूलचंद है"

उन्नत ने मूलचंद का मास्क उठा कर उसे कोल्ड ड्रिंक पिला दिया, मूलचंद झनझना गया, उसके साथ ही उन्नत और आशी गटाक गटाक कोल्ड ड्रिंक का ग्लास खाली कर दिए। आशी ने मूलचंद को बोला

"यहाँ का चिकन बहुत यम्मी है"

तभी पापा उनके पास आये, उन्होंने आसपास देखकर यकीन कर लिया कि मूलचंद वहाँ मौजूद नहीं है। वो बोले

"अच्छा हुआ तुम लोग मूलचंद को यहाँ लेकर नहीं आये"

आशी और उन्नत ने एक दूसरे को देखा और हल्का सा मुस्कुराने लगे। पापा बोले

"मम्मी और मैं वहाँ टेबल पर बैठे हैं, तुम लोग भी आ जाओ"

"नहीं पापा हमलोग यहीं ठीक हैं"

पापा ने ताज्जुब भरी नजरों से उनको देखा और उनके साथ खड़े मिक्की माउस को देखकर पूछा

"तुम लोगों ने यहाँ दोस्त भी बना लिया!"

आशी और उन्नत दोनों हँसने लगे और पापा ने उनको ऐसे हँसते हुए देखकर पूछा

"इसमें इतना हँसने वाली क्या बात है?"

उन्नत बोला

"आप हमारे दोस्त से हाथ मिला लो आपको समझ आ जाएगा"

पापा ने मिक्की माउस को ताज्जुब से देखते हुए, हाथ मिलाने के लिए बढ़ाया। उन्नत ने मूलचंद का हाथ लेकर पापा के हाथ में रख दिया। पापा चौंक गए और आसपास देखकर उन्होंने वापस मिक्की

माउस के चेहरे की तरफ देखा फिर उन्नत और आशी की तरफ। वह बोले

"तुम लोग यहीं रहो"

पापा चले गए और उन्नत ने आर्या को आता हुआ देख आवाज दिया

"आर्या"

वह नहीं सुनी, उन्नत फिर बोला

"आर्या"

वो अभी भी नहीं सुनी, तो उन्नत अपने कुर्सी से उठकर उसके पास गया, और उसको अपना मास्क हटाकर पूछा

"आर्या! तुमने मास्क नहीं पहना, क्यूँ"

वह उसको देख कर खुश हो गई, बोली

"मेरे पसंद का मास्क नहीं है"

आर्या उसके साथ बैठने वाले जगह पर आ गई, उसने भी मूलचंद को देखकर पहले बच्चा ही समझा फिर उन्नत ने बताया कि ये मूलचंद है। आर्या बोली

"अच्छा हुआ तुम लोग आ गए, ये पार्टी बहुत बोरिंग है"

उन्नत बोला

"हाँ, स्विमिंग पूल की तरफ चले? वहाँ खेलेंगे और किसी ने बुलाया तो फौरन आ भी जाएंगे"

आशी वहाँ से नहीं जाना चाहती थी। वह बोली

"मम्मी बहुत गुस्सा होगा"

"हाँ, मेरी मम्मा भी बहुत गुस्सा होगी। क्या हमलोग यहीं कोई गेम खेल सकते हैं?"

आर्या ने बोला तो उन्नत वहीं आसपास देखने लगा। वह बोला

"हमलोग चोर पुलिस खेल सकते हैं"

आशी और आर्या खुश हो गए। उन्नत बोला

"लेकिन मूलचंद कभी पुलिस नहीं बन पायेगा, सॉरी मूलचंद, और एक चोर उसको सँभालने की जिम्मेदारी लेगा"

उन्नत की बात से आर्या और आशी दोनों सहमत थे। आशी बोली

"पहले पुलिस कौन बनेगा?"

उन्नत बोला

"चलो मैं बन जाता हूँ"

आर्या ने रोक दिया

"ऐसे किसी का पुलिस बनना ठीक नहीं, हमलोग आदा–पादा करके पुलिस का फैसला करेंगे"

आशी को आर्या की ये दादागिरी पसंद नहीं आयी, वह बोली

"जब भैया ने बोला तो क्या दिक्कत है, उन्नत ही पुलिस बनेगा जैसे वो हमेशा बनता है"

आर्या कुछ बोलना चाहती थी लेकिन उसको उन्नत ने हाथ पकड़कर रोक दिया। आर्या ने उसकी तरफ देखा तो उन्नत ने उसको इशारे में समझाया कि आशी से बहस करने का कोई फायदा नहीं। वह बोला

"तुम लोग जाकर छिप जाओ, मैं 10 तक गिनूँगा"

उन्नत आँखे बंद करके दूसरी तरफ मुड़ गया। आशी मूलचंद का हाथ पकड़कर एक तरफ लगे टेंट के पीछे छिप गई और आर्या एक टेबल के नीचे। उन्नत ने 10 तक गिना और फिर सबको ढूँढने चल दिया। उसने सबसे पहले सारे टेबल के नीचे ढूँढा और उसको आर्या मिल गई। आर्या टेबल के नीचे से बाहर निकल आयी फिर उन्नत आशी को ढूँढने लगा। उसको टेंट के नीचे आशी का सैंडल दिखा और वह वहाँ जाकर आशी को धप्पा दिया लेकिन मूलचंद उसके साथ नहीं था। वह बोला

"मूलचंद कहाँ है, आशी?"

आशी अपने अगल बगल ढूँढने लगी। वह बोली

"यहीं पर तो था, कहाँ गया!"

उन्नत और आर्या भी आसपास ढूँढने लगे लेकिन मूलचंद कहीं नहीं था। उनको डर लगने लगा कि कहीं मूलचंद पार्टी में ना चला

गया हो। तीनों ने पार्टी में मूलचंद को बहुत खोजा लेकिन वह वहाँ भी नहीं मिला। उन्नत बोला

"यहाँ पार्टी में तो मूलचंद नहीं है, किधर चला गया?"

उन्नत ने दौड़कर बगल वाले गार्डन में मूलचंद को ढूँढा लेकिन मूलचंद वहाँ भी नहीं था। तीनों धीरे धीरे फुस्फुसाते हुए मूलचंद को पुकारने लगे। लेकिन मूलचंद नहीं भौंका और ना दिखा।

कलूटा कौवा स्विमिंग पूल के पास छज्जे पर बैठा बच्चों को इधर उधर ढूंढता देख रहा था, उन्नत पुकारा

"मूलचंद? मूलचंद?"

"भैया, मूलचंद को पानी बहुत पसंद है, हो सकता है वो स्विमिंग पूल की तरफ छिपने चला गया हो?"

उन्नत को भी याद आया कि कैसे मूलचंद छिपकर बिल्डिंग के स्विमिंग पूल में घुस जाता है। आर्या उनको मूलचंद के लिए परेशान होता देख कर भावुक हो गई, वह भी उनके साथ मूलचंद को ढूँढने के लिए स्विमिंग पूल तक जाने का मन बना ली। उन्नत और आशी को बोलता देखकर, वह भी बोली

"मूलचंद? मूलचंद?"

तीनों मूलचंद को आवाज लगाते हुए स्विमिंग पूल की तरफ आ गए। आशी बोली

"भईया मूलचंद तो हमारी आवाज सुनते ही भागता हुआ आता है"

उन्होंने हर तरफ देखा सामान रखने वाले जगह पर और मोटर के पास, लेकिन मूलचंद कहीं नहीं दिखा। उन्नत ने ध्यान दिया की थोड़ी दूरी पर अँधेरे में डूबे हुए एक पेड़ पर कौवे बैठे हुए हैं। वह सोचा

"कौवे, यहाँ भी! ये वो कौवे नहीं हो सकते"

उसको महसूस होने लगा कि मूलचंद किसी मुसीबत में है। वह पुकारा

"मूलचंद, मूलचंद...मूलचंद कहीं नजर क्यों नहीं आ रहा और ना ही भौंककर हमेशा की तरह जवाब दे रहा है"

आशी बोली

"भैया मूलचंद चोर पुलिस का खेल खेल रहा है, वह नहीं बोलेगा"

"नहीं आशी, वह मुसीबत में है"

"मूलचंद तुम खेल रहे हो क्या? एक बार भूँक कर बताओ"

"शायद वो यहाँ नहीं है"

उन्नत, आर्या और आशी स्विमिंग पूल एरिया से बाहर निकल आये।

पीछे से सरदार, कलूटा और काकोर बाकी कौवों के साथ पेड़ से उड़कर स्विमिंग पूल के पास आ गये। वो बच्चों पर नजर रखे हुए थे। कलूटा बोला

"काँव काँव, (इनसे भी बदला लेना है)"

"काँव काँव, (बदला लेंगे। अभी सिर्फ कुत्ते पर ध्यान दो)"

उन्नत, आर्या और आशी इधर उधर खोज रहे थे, तभी उन्नत और आर्या को आवाज सुनाई दी

"आर्या? आर्या? कहाँ हो तुम?"

"उन्नत, उन्नत, आशी"

उन्नत को पापा की आवाज की आवाज सुनाई दी और उसने देखा कि पापा डार्थ वार्डर के मास्क में और उनके साथ एक आन्टी हैं पेंगुइन के मास्क में, वो आर्या को ऐसे बिना बताये आने के लिए डाँटने लगी। पापा ने आशी और उन्नत को बोला

"चलो, यहाँ कहाँ घूम रहे हो... डिनर टाइम!"

"पापा हमलोग थोड़ी देर में आये तो चलेगा? 5 मिनट"

"प्लीज प्लीज पापा, मूलचंद खो गया है"

पापा चौंक गए और बोले

"कहाँ, हे भगवान तुमलोग संभालने का बोले थे ना"

आर्य की मम्मी ने डांटना बंद करके ये सब सुनने लगी, उन्नत बोला

"बस 5 मिनट, वो यही कहीं आसपास है"

"अच्छा, ठीक है, 5 मिनट में आ जाओ"

उन्नत आर्या की तरफ देखने लगा और वो बोली

"मम्मी मैं भी जाऊँ?"

मम्मी ने बच्चों की तरफ देखा और उन्नत के पापा की तरफ, फिर बोली

"5 मिनट का मतलब 5 मिनट"

इतना बोलकर आर्या की मम्मी और उन्नत के पापा बात करते हुए चले गए। उन्नत ने सुना की आर्या की मम्मी बोली

"आप बच्चों को कुछ ज्यादा ही छूट दे रखे हैं"

तभी आशी ने उन्नत का शर्ट पकड़कर खींचा, उन्नत को ये पसंद नहीं था लेकिन वह गुस्सा नहीं हुआ। वह अभी मूलचंद के लिए बहुत परेशान था और आशी की तरफ मुड़ते हुए पूछा

"क्या हुआ?"

आशी गार्ड अंकल की तरफ इशारा करते हुए बोली

"गार्ड अंकल से पूछो भैया"

उन्नत को ये आईडिया इतना अच्छा लगा की वह जल्दी से दौड़कर गार्ड अंकल के पास पहुँचा

"अंकल"

गार्ड अंकल आवाज सुनकर रुक गए और उन्नत की तरफ मुड़कर उसके पास आए। उन्होंने पूछा

"क्या हुआ बाबू?"

"आपने हमारे मूलचंद को देखा है?"

गार्ड अंकल को समझ नहीं आया, वह बोले

"मूलचंद कौन है?"

आर्या और आशी भी तब तक वहाँ पहुँच गए और आशी समझाते हुए बोली

"हमारा मूलचंद"

गार्ड अंकल जो उनको प्यार से देख रहे थे, उनको समझ आया कि मूलचंद कोई छोटा बच्चा है जो खो गया है। वह थोड़ा

परेशान हो कर उसके डिटेल्स पूछने लगे। आर्या बोली

"अंकल, मूलचंद एक कुत्ता है कोई इन्सान का बच्चा नहीं"

"अच्छा! ये कुत्ते का नाम है"

"आपने देखा उसको"

"पता नहीं, ध्यान नहीं दिया। यहीं कहीं होगा"

इतना कहकर गार्ड अंकल वहाँ से चले गये, उन्नत बोला

"आशी, तुम मूलचंद के साथ छिपी हुई थी तुम्हे कैसे पता नहीं चला"

आर्या बोली

"हाँ आशी, याद करो, वो किस तरफ गया था अगर यह पता चल जाए तो ढूँढने में आसानी होगी"

आशी चेहरा सिकोड़ने लगी और उसकी आँखों में आँसू छलकने लगे। उन्नत को समझ आ गया

"अब ये रोने वाली है और अगर ये रोई तो मेरी पिटाई ना सही पर डाँट लगना तो तय है"

उन्नत ने जल्दी से उसको अपने से चिपका लिया और बोला

"मैं तो सिर्फ पूछ रहा था, जिससे हम मूलचंद को जल्दी खोज सकें। तुम पर गुस्सा नहीं हो रहा था"

"मुझे पता होता तो मैं बता नहीं देती, भैया। वो मेरे बगल में बैठा हुआ था"

आशी अपना हाथ फैलाते हुए उस जगह की तरफ इशारा करने लगी, जहाँ दोनों छिपे हुए थे, वह बोली

"उसके बाद वो कहाँ चला गया मुझे पता ही नहीं चला"

आशी आँखों से आँसू पोंछते हुए बोली

"भैया मूलचंद मुसीबत में है क्या?"

तभी काँव–काँव की आवाज आयी। बहुत तेज। उन्नत और आशी आवाज की तरफ मुड़े। उन्नत ने कहा

"कौवे, स्विमिंग पूल की तरफ"

आर्या ने कहा

"लगता है बहुत सारे कौवे हैं"

उन्नत और आशी स्विमिंग पूल की तरफ दौड़ पड़े। बहुत जोर से कौवों के चिल्लाने और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। दौड़ते–दौड़ते उन्नत बोला

"कौवे यहाँ तक पहुँच गए हैं"

"इसका मतलब मूलचंद! भैया"

"हाँ जरूर कौवों ने उसको पकड़ रखा है"

आर्या को बातें समझ नहीं आयी और वह जवाब की उम्मीद में उनका पीछा कर रही थी। वह बोली

"कौन कौवे? और हमलोग तो मूलचंद को स्विमिंग पूल के पास चेक कर चुके हैं"

थोड़ा आगे पहुँचने पर स्विमिंग पूल दिखाई देने लगा। उन्होंने देखा कि बहुत सारे कौवे स्विमिंग पूल के पानी के ऊपर जमा हैं। आर्या इतने कौवों को एक साथ देखकर डर गई। उसकी रफ्तार धीमी हो गई तभी उन्नत ने देखा कि कौवे पानी से ऊपर की तरफ उड़ते हुये उठ रहे हैं। पूल के ऊपर पानी में हलचल हो रही थी मगर साफ दिख नहीं रहा था। उन्नत को ताज्जुब हुआ कि कौवे इतना धीरे धीरे पानी से क्या निकाल रहे हैं। वह सोचा

"क्या, मूलचंद?"

इतना सोचते ही उसका चेहरा सफेद हो गया। वह जल्दी से आगे बढ़ा और देखा कौवे पानी से एक रस्सी ऊपर की तरफ खींच रहे हैं। उन्नत पूल की तरफ दौड़ा जो करीब 10 मीटर दूर था। उसकी नजरें पूल के उस रस्सी के छोर पर टिकी हुई थी जिसको कौवे धीरे–धीरे पानी से बाहर खींच रहे थे। आशी हड़बड़ाई हुई उसके पीछे–पीछे स्विमिंग पूल की तरफ भागी।

आर्या रुक गई, वह पहले ही इतने कौवों को देखकर डर गई थी और उसको लगा कि बड़े लोगों को इस बारे में बताना चाहिए। वह आशी और उन्नत को अपने फैसले के बारे में बताना चाहती थी लेकिन वो दोनों काफी आगे निकल गए थे। आर्या मुड़कर पार्टी वाले एरिया

की तरफ दौड़ गई।

उन्नत और आशी स्विमिंग पूल की तरफ भाग रहे थे। कौवे रस्सी को खींचे और उसमें बंधा जाल निकला और उस जाल में मूलचंद फंसा हुआ था। वह हवा में लटक रहे जाल से बाहर निकलने के लिए छटपटा रहा था मगर वह उतना ही उलझ कर रह जाता। सभी कौवे मूलचंद को चोंच मारने लगे और वो दर्द से भूँकने लगा

"भौं भौं"

उन्नत और आशी भागते हुए स्विमिंग पूल के एंट्रेंस से होते हुए पूल एरिया में गए। वहाँ पहुँचते ही, आशी चिल्ला–चिल्लाकर कौवों को भगाने लगी। उन्नत, कौवों पर हमला करने के लिए, आसपास कुछ हथियार खोजने लगा। उसको पास में लकड़ी का एक टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया, उसने झपटकर वह लकड़ी का टुकड़ा उठा लिया, हवा में लकड़ी का टुकड़ा लहराता हुआ कौवों की तरफ दौड़ा। आशी तब तक कौवों के पास "भागो–भागो" बोलती हुई बहुत करीब पहुँच गई। उन्नत भी डंडे से कौवों को मारने की कोशिश कर रहा था लेकिन कौवे दूर थे, जिस कारण डंडा कौवों तक पहुँच नहीं पा रहा था।

कलूटा और काकोर उड़कर दोनों पर हमला करने लगे। उन्नत ने अपने दाहिने हाथ से उनको मारकर अपने से दूर किया और डंडे से जाल उठा रहे कौवों को मारने के लिए पानी के ऊपर झुक गया और जैसे ही डंडा कौवों पर लहराया, खुद का संतुलन खो दिया और पानी के अंदर गिर गया। वो जल्दी से खुद को सम्भालते हुए पूल में खड़ा हुआ और कौवों को डंडे से मारने लगा। मूलचंद उसके बहुत पास था, जाल में छटपटाता हुआ। उन्नत जोर से उछला, लेकिन उम्मीद से कम ऊपर पहुँच पाया और उसने दिमाग में नोट किया की पानी के अन्दर उछलने से आप उम्मीद से कम ऊपर जाते हैं, उसने सोचा

"ये मैं डायरी में लिख लूँगा"

यह सोचता हुआ उन्नत जाल को पकड़ने के लिए हवा में जितनी ऊपर पहुँच पाए हाथ मारने लगा मगर जाल दूर होता जा रहा

था। तभी कौवों के सरदार ने काँव–काँव करना शुरू किया। सारे कौवों ने और जोर जोर से पंख फड़फड़ाना शुरू किया। उन्नत उछलकर मूलचंद तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था मगर पानी में उछलकर बहुत ऊपर नहीं जा पाया। कौवे मूलचंद को जाल के साथ धीरे–धीरे स्वीमिंग पूल से दूर ले जाने लगे। आशी और उन्नत की घबराहट बढ़ गई। उन्नत ने डंडे को जाल की तरफ फेंककर फंसाने की कोशिश करी लेकिन सफल नहीं हुआ। उन्नत जाल को पकड़ने के लिए पानी में दौड़ा जा रहा था। पानी का स्तर बढ़ने लगा और उसने तैरना शुरु कर दिया मगर कौवे मूलचंद को जाल सहित पूल एरिया से बाहर उड़ा कर ले जा चुके थे। मूलचंद जाल में फंसा हुआ "भावँ–भावँ" कर छटपटा रहा था। आशी बोली

"मूलचंद भूँक रहा है, बोल रहा है बचाओ। भैया प्लीज उसको बचा लो"

उन्नत समझ गया कि वह कौवों तक नहीं पहुँच पायेगा। उन्नत ने मूलचंद को बचाने की एक आखिरी कोशिश की। अपने हाथ में पकड़ा हुआ डंडा घुमाकर कौवों की तरफ फेंका मगर डंडा कौवों तक पहुँच नहीं पाया। उन्नत और आशी कौवों को जाल में बंधे मूलचंद को उड़ाकर ले जाते हुए देख रहे थे। आशी परेशान कौवों पर जोर जोर से चिल्ला रही थी। उन्नत समय गँवाये बिना पूल से बाहर निकला। वह रिसोर्ट से बाहर, कौवों के पीछे जाना चाहता था लेकिन तभी सामने से पापा आ गए। वह बोले

"तुम लोग ठीक हो ना?"

"पापा! आपने देखा कौवे मूलचंद को उठाकर ले गए"

"हाँ देखा मैंने, और आर्या ने मुझे सब कुछ बता दिया है"

"पापा ये गंदे कौवे, मूलचंद को लेकर कहाँ गए हैं?"

"पता करना पड़ेगा, उन्नत"

"कुछ पता नहीं करना है, कमरे से बाहर निकालने को मना किया था न"

उन्नत और आशी मम्मी की आवाज सुनकर मुड़े। मम्मी बच्चों

को गोद में लेकर उनकी चोट देखने गई तो आशी बोली

"मैं आपसे गुस्सा हूँ"

"हाँ मम्मा आपको उसकी बिल्कुल चिंता नहीं"

उन्नत और आशी के ऐसा बोलने से मम्मी को बुरा लगा और उन्होंने बच्चों को गले लगा लिया, वह बोली

"सॉरी, मैं तुम लोगों के लिए डर गई थी, तुम लोग ठीक हो ना"

दोनों ने एक साथ बोला

"हाँ मम्मा हम ठीक हैं, हमें इन कौवों से मूलचंद को बचाना है"

"नहीं। यानी कैसे बचाओगे वो कौवे उसको लेकर यहाँ से चले गए हैं"

तब तक वहाँ आर्या, उसके पेरेंट्स और रिसोर्ट के गेस्ट जमा होने लगे। उन सभी को कौवों की हरकत का पता चला तो उन्हें ताज्जुब हुआ, किसी को यकीन नहीं हो रहा था कि कौवे ऐसे हमला कर सकते हैं। उन्नत और आशी मूलचंद को बचाने के लिये वहाँ से जल्दी निकलना चाहते थे। उन्नत ने मम्मी को बोला

"मम्मा प्लीज, मूलचंद को बचाने जाना है"

मम्मी उन दोनों का मुँह देखती रह गई। आशी को बार–बार मूलचंद का उदास चेहरा याद आ रहा था, जिस कारण उसने रोना शुरु कर दिया। मम्मी और पापा को बच्चों का यूँ मूलचंद के लिए परेशान होना देखकर अच्छा भी लगा और चिंता भी होने लगी। मम्मी बोली

"मूलचंद से तो ये बहुत जुड़ चुके हैं, उसको कुछ हो गया तो ये क्या करेंगे!"

"ये दोनों मूलचंद से बहुत प्यार करते हैं"

पापा ने समझाया और फिर बच्चों की तरफ मुड़ते हुए बोले

"ठीक है हमलोग मूलचंद को बचाने जायेंगे"

"मूलचंद को बचाने जायेंगे, ये क्या पागलपन है!"

"पापा वाला पागलपन"

उन्नत और आशी खुश हो गए। आर्या उन्नत के पास आयी और बाकी लोग भी इस परिवार की बातें सुनकर दंग थे। उन्नत ने पास

में आर्या को देखकर बोला

”आर्या अभी मूलचंद को बचाने जा रहे हैं, हमलोग। तुम्हे सब कुछ मैं बाद में बताता हूँ“

आर्या ने धीरे से हाँ कहा। वह भी उनके साथ जाना चाहती थी लेकिन संभव नहीं था। उन्नत पापा का हाथ पकड़कर खींचने लगा। पापा उसके साथ चलने लगे। आशी तो उन्नत से पहले ही चलने को तैयार थी और वह जल्दी से दौड़कर उन्नत और पापा के पास पहुँच गई। उन्नत ने सुना कि मम्मी वहाँ मौजूद लोगों को बता रही हैं की कौवों ने कैसे परेशान कर रखा है।

अध्याय 9
जासूसी किताब

उन्नत पापा के साथ दौड़ता हुआ बातें कर रहा था। वह बोला

"पापा कार की चाभी आपके पास है?"

"नहीं, कमरे में"

"ठीक है, मैं फौरन कार की चाभी लेकर आता हूँ"

उन्नत कमरे की तरफ दौड़ता हुआ अपने पॉकेट से कमरे की चाभी निकाल लिया, वह एक भी सेकंड बर्बाद नहीं करना चाहता था। उसने आशी को पीछा करते हुए सुना लेकिन फिर वह रुककर पापा के पास चली गई। उन्नत कमरे तक पहुँचा और एक झटके में कमरे का दरवाजा खोलकर अंदर गया। उसको याद था कि पापा कमरे में बैठे हुए चाय पी रहे थे तो उनके चाय के कप के पास टेबल पर चाभी रखी थी। उसने टेबल के पास जाकर देखा तो वहाँ चाभी वैसे ही रखी हुई थी। उसने चाभी उठाई और सोफा पर रखा हुआ अपना बैग कंधे पर डालकर दरवाजे की तरफ भागा। धाड़ से दरवाजा बंद करके, वह दौड़ता हुआ पापा को दूर से ही कार की चाभी उछाल कर फेंका। पापा चाभी नहीं पकड़ पाए, आशी जो उनके पास खड़ी थी उसके सिर पर चाभी जाकर गिरी। वह रोने लगी और बोली

"पापा, उन्नत ने मुझे मारा"

उन्नत ने जल्दी से अपना कान पकड़कर आशी को सॉरी बोला और वह चुप हो गई। उन्नत ने चाभी उठाकर पापा को दिया तभी पापा उसके पीठ पर लटकते हुए बैग को देखकर पूछे

"ये बैग क्यों?"

"इसमें डिटेक्टिव किट है"

"क्या? तुम इसको रिसोर्ट में लेकर आये थे"

"मैं जहाँ भी जाता हूँ, इसे ले जाता हूँ"

"हाँ भैया सब जगह इसको लेकर जाता है"

पापा ने लम्बी साँस ली और उन्नत ने उनको बोला

"आप बाद में परेशान होते रहना, मूलचंद कौवों के कब्जे में है"

"ओके उन्नत जी"

ये बोल कर पापा जल्दी से कार लाने के लिए चले गए। उन्नत वहीं खड़ा पापा के पीछे जाती हुई आशी का फ्रॉक पकड़कर रोक दिया। वह बोली

"भैया छोड़ो मुझे"

"तुम नहीं जा रही"

"क्यों?"

"मामला खतरनाक है, कौवे कुछ भी कर सकते हैं"

"मुझे भी मूलचंद को बचाने जाना है"

"सिर्फ मैं और पापा जाएँगे"

तभी उनके ऊपर हेडलाइट की रौशनी गिरी जिसमें दोनों की आँखे चौंधिया गई। उन्होंने अपने आँखों पर हाथ रख लिया। पापा कार लाए और हेडलाइट की रौशनी दाहिने तरफ हो गई, कार उनके बिल्कुल बगल में खड़ी थी। पापा ने कार का दरवाजा खोल दिया, वह बोले

"आ जाओ"

आशी जल्दी से उन्नत के हाथ से फ्रॉक छुड़ाकर कार में बैठने वाली थी लेकिन उन्नत ने उसको नहीं जाने दिया। आशी जोर से उन्नत पर चिल्लाई

"उन्नत छोड़ो मुझे"

इतना कहकर आशी पापा की तरफ मुड़ गई। वह बोली

"पापा मुझे भी जाना है"

"पापा इसको कौवों ने परेशान किया तो"

"ये भी जायेगी"

"ठीक है, कौवों ने हमला किया तो आशी मुझसे मत बोलना"

उन्नत ने इतना कह कर आशी का फ्रॉक छोड़ दिया और कार के पीछे वाला दरवाजा खोलने लगा। आशी कूदकर पापा के बगल वाले पैसेंजर सीट पर बैठते हुए बोली

"मैं कौवों का चटनी बना दूँगा"

आशी ने जोर से दरवाजा बंद कर लिया, साथ में पीछे वाली सीट पर उन्नत बैठ चुका था। कार का इंजन बंद हो गया और पापा कार स्टार्ट करने में लग गए। उन्नत बोला

"पापा ये कार खटारा हो गई है, नयी खरीद लो"

"हाँ"

आशी आराम से सीट पर पीछे की तरफ बैठकर पैर को हवा में हिलाते हुए पूछी

"पापा, कौवे सच में हमपर हमला करेंगे"

पापा कुछ कहते उसके पहले ही उन्नत आगे झुककर आशी के पास आकर समझाने लगा

"आशी, प्यारी बहन, अब डरकर क्या फायदा, वहाँ इतना खतरा है जो तुमने सोचा नहीं होगा"

उन्नत डरावनी आवाज में धीरे धीरे यह बोल रहा था। आशी अपने कान बंद करते हुए बोली

"मुझे मत डराओ"

"वो कौवे बहुत खतरनाक हैं, मूलचंद को उठाकर ले गए। तुम मूलचंद से हल्की हो, तुम्हे भी उठा ले जाएंगे"

आशी ने उन्नत की तरफ देखा भी नहीं, कान बंद करके चिल्लाती रही और पापा जो पहले ही बहुत परेशान थे। वह बोले

"आशी चुप रहो... उन्नत बंद करो डराना"

"ठीक है लेकिन पापा आप इसको समझा दो कि ज्यादा हीरोइन ना बने। मैं और आप जैसा कहेंगे ये वैसा ही करेगी"

पापा ने मुड़कर आशी की तरफ देखा और आशी ने सिर हिलाकर मंजूरी दे दी। उन्नत ने फिर कहा

"और आशी तुम खिड़की के बाहर हाथ भी मत निकालना, ओके?"

"ओके भैया! मुझे मूलचंद की बहुत चिंता हो रही है"

"तो फिर जल्दी से आकर पीछे बैठ जाओ"

"नहीं, मैं आगे बैठूँगा न"

उन्नत तब तक अपने एक हाथ में ड्रोन और रिमोट पकड़े, दूसरे हाँथ से सीट का सहारा लेता हुआ, आगे वाले पैसेंजर सीट पर पहुँचने की कोशिश करने लगा। आशी उसको धक्का देकर पीछे कर रही थी। वह बोली

"पापा देखो उन्नत मुझे यहाँ बैठने नहीं दे रहा है"

पापा इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने सोचा

"एक का पक्ष लूँगा तो दूसरा नाराज हो जायेगा"

वह बोले

"जल्दी फैसला करो, कार चलने वाली है"

"पापा आप कार चलाओ, हमलोग चलती कार में फैसला कर लेंगे"

उन्नत सीट पर पैर रखता हुआ आशी के आगे आकर खड़ा हो गया। पापा ने कार स्टार्ट कर दी तभी मम्मी पापा के साइड वाले विंडो के पास आकर बोली

"मुझे कॉल करके बताते रहना, ये दोनों जा रहे है?"

उन्नत और आशी, मम्मी के आते ही, झगड़ा छोड़कर शरीफ बन कर बैठ गये। पापा बोले

"हाँ, दोनों जा रहे हैं, अब तुम रोकना मत"

मम्मी ने लम्बी सांस छोड़ते हुए सबको देखा जैसे इनका कुछ नहीं हो सकता। वह बोली

"मुझे कॉल करना मत भूलना और किसी मुसीबत में पड़ने की जरूरत नहीं है"

"हाँ हाँ, तुम चिंता मत करो। कौए ही तो हैं। बाय"

पापा ने कार चला दी। उन्नत चढ़कर आशी के ऊपर बैठ गया और दोनों में गुथ्थमगुत्थी होने लगी, उन्नत उम्र में बड़ा होने के कारण आशी पर भारी पर रहा था लेकिन आशी ने भी अपने नाखून से उन्नत के हाथों पर चिमटी काट ली। उन्नत ने चिल्लाकर उसको छोड़ दिया और थप्पड़ मारने वाला था जब पापा ने उसको रोक दिया और बोले

"नहीं, तुम भी तो उसको धक्का दे रहे थे"

उन्नत वापस आशी से झगड़ने लगा, वह बोला

"तुम लास्ट टाइम बैठी थी!"

"मैं नहीं बैठा था। मेरे हाथ में आइस क्रीम था। याद आया? मम्मा ने मुझे पीछे बैठाया था। याद है?"

"आइस क्रीम लेकर तुम आगे बैठी थी। सही से याद करो"

पापा कार चलाते हुए रिसोर्ट के बाहर निकल आये। वह बोले

"मूलचंद को बचाने जाना है और अगर झगड़ा करते रहे तो हमें मूलचंद को ढूँढने में टाइम लगेगा। हमें जितना टाइम लगेगा कौवे उतना ज्यादा टाइम तक मूलचंद को परेशान करेंगे"

पापा एक सांस में उनको समझाने के लिए बोल गए। मूलचंद को कितना दर्द होगा, ये सोचते हुए दोनों एक साथ पीछे वाले सीट पर बैठने के लिए दौड़े। ठक्क से दोनों का सिर टकराया और उन्नत अपना सिर पकड़कर सीट पर बैठ गया और आशी दोनों सीट के बीच में पापा के हाथ के ऊपर बैठ गई। पापा ने घूमकर दोनों को देखा और आशी पीछे वाले सीट पर जाते हुए बोली

"तुम बैठो, मैं पीछे जाता हूँ"

वह पीछे वाले सीट पर मुँह फुलाकर बैठ गई। उन्नत आगे वाली सीट पर आराम से बैठ गया और पापा से बातें करने लगा। वह बोला

"पापा हम लोगों को सबसे पहले पता करना है कि कौवे मूलचंद को लेकर कहाँ गए हैं"

"पर ये कैसे पता चलेगा?"

"उस जगह को पता करने का मेरे पास एक आईडिया है"

"कैसा आईडिया"

आशी गुस्सा छोड़कर ध्यान से सुनते हुए बोली

"जल्दी बताओ भैया"

उन्नत अपना रैबिट दाँत उंगलियों से ठोकने लगा, आशी बोली

"भैया का दिमाग दौड़ रहा है"

पापा ने उन्नत को देखा और बोले

"उन्नत क्या प्लान है?"

"प्लान र–2 और टी–4 से काम हो जायेगा, क्यूँ?"

उन्नत अपने जासूसी किताब की भाषा बोल रहा था। ये किताब उसने खुद बनाई थी, जो सीखता वो लिख लेता, उसको गर्व था अपनी इस किताब पर। उसका ऐसा मानना था की इस किताब में हर मुसीबत से बचने का उपाय है। पापा बोले

"हाँ"

पापा ने हाँ तो बोल दिया था लेकिन उनको "र–2" और "टी–4" का मतलब याद नहीं था। उन्नत डैशबोर्ड से जासूसी किताब निकाला और नोट करने लगा

पेज 10

ल–6, पानी के अन्दर उछलने से आप उम्मीद से कम ऊपर जाते हैं

उन्नत ने लिखने के बाद पापा को देखकर पूछा

"पापा आपको याद नहीं है, "र–2" और "टी–4" का मतलब?"

"याद है, याद है, बिल्कुल याद है"

पापा उसके हाथ से जासूसी किताब लेने की कोशिश करने लग गए लेकिन नहीं ले पाए। आशी दिमाग पर जोर डाल कर याद करने लगी की उन्नत ने क्या लिखा था, उसकी फोटोग्राफिक मेमोरी थी और उसने जो देखा वो नीचे लिखा है

पेज 3

र–2 – हेलीकॉप्टर से हम उस जगह को देख सकते हैं, जो हमारी नजरों से दूर है।

र–3 – गीली माचिस जलाने से पहले हाथ पर रगड़ कर नहीं बल्की फूँक कर सुखायें।

र–4 – बिजली से चिपके जानवर को बचाने के लिए लकड़ी का इस्तमाल करें।

पेज 5

टी–1 – कटहल के साथ पान नहीं खायें।

टी–2 – ट्रेन को रोकने के लिए लाल कपड़े या रौशनी का इस्तमाल करें।

टी–3 – रात में आवाज दूर तक जाती है।

टी–4 – अँधेरे में कैमरा इस्तमाल करने के लिए शटर स्पीड कम कर दें।

पापा ने उन्नत को बोला

"मूलचंद की जान खतरे में है, मुझे सोचने में थोड़ा टाइम लगेगा, आज तुम बता दो"

आशी जल्दी–जल्दी दिमाग में जासूसी किताब के पन्नों में ढूँढ रही थी और बोली

"हाँ भईया, ये दोनों का मतलब तो मुझे पता है लेकिन इससे प्लान क्या बन रहा है वो समझ नहीं आ रहा"

उन्नत ने ड्रोन को पैरों के पास से उठाकर पापा को दिखाया और पिछले सीट पर रखा कैमरा उठाते हुये बोला

"कैमरे को ड्रोन में जोड़ देता हूँ"

उन्नत ड्रोन में कैमरा जोड़ने वाले क्लिप से कैमरा जोड़ दिया। आशी और पापा, उन्नत को बहुत गौर से ऐसा करते हुए देख रहे थे। कार चलाते हुए पापा बोले

"अब समझे पढ़ाई का फायदा, ये सब चीजें अविष्कार करने के लिए पढ़ाई की जरूरत है"

उन्नत ने सिर हाँ में हिलाया और आशी बोली

"मैं भी आता हूँ, मदद करने के लिए"

"वहीं बैठो, बैठो"

"हुम्म्म"

"पापा आप सीधा चलो। कौवे उधर ही गए है, साईं बाबा मंदिर की तरफ"

पापा ने सीधा साईं बाबा मंदिर की तरफ कार बढ़ा दी। रास्ता चढ़ाई वाला था, उन्नत हाथ में ड्रोन पकड़े बोला

"पापा हम तैयार हैं"

"ओके, मोबाइल स्क्रीन पर रिकार्डिंग आ रहा है?"

"आशी पापा का मोबाइल उठाओ?"

"उठाता हूँ"

आशी डैशबोर्ड की तरफ पहुँचते हुए, जहाँ पापा का मोबाइल रखा हुआ था, उठाकर स्टार्ट कर दी। तब तक उन्नत ने कैमरा और ड्रोन का स्विच ऑन किया। ड्रोन के पंखे घूमने लगे, जिससे उन्नत के मुँह पर हवा का तेज झोंका पड़ा और उसके बाल उड़ने लगे। उन्नत ने हाथ में ड्रोन का रिमोट पकड़ा और ड्रोन को कार की खिड़की से बाहर छोड़ दिया। उन्नत रिमोट से ड्रोन को बैलेंस करने लगा। पूर्णिमा के चाँद में ड्रोन, कार के आगे, बड़े से चमगादर की तरह तेजी से उड़ रहा था। उन्नत खिड़की से बाहर निकलकर ड्रोन को देखता हुआ रिमोट कंट्रोल से उड़ाने लगा। हवा में उन्नत के बाल उड़ रहे थे और साथ में छोटे–छोटे कीड़े उसकी आँखों में घुसने लगे। आँख मलता हुआ, उसने अपनी पॉकेट से चश्मा निकालकर पहन लिया। वह बोला

"पापा इस ड्रोन का बैलेंस सही में बहुत बढ़िया है"

"ड्रोन को चारो तरफ घुमा कर देखो"

उन्नत ड्रोन को कण्ट्रोल करता हुआ चारो तरफ घुमाने लगा। आशी पीछे बैठी हुई उन्नत की तरफ मोबाइल घुमाकर दिखा रही थी। उन्नत बीच बीच में मुड़कर मोबाइल में देखता जिसमें आसपास का पूरा इलाका दूर दूर तक दिख रहा था। वह वापस खिड़की से बाहर सिर निकालकर ड्रोन को देखने लगता कि किसी पेड़ से ना टकरा जाये या बिजली के तार से उलझ जाये। आशी ने बोला

"उन्नत कार से बाहर सिर मत निकालो"

इस अचानक हुई आवाज से, उन्नत का ध्यान भटक गया और वापस बैलेंस बनाता हुआ, बोला

"मैं सिर्फ हल्का सा बाहर हूँ और ध्यान दे रहा हूँ। तुम हीरोइन

मत बनो। तुम्हारे चक्कर में अभी ड्रोन पेड़ से टकराने वाला था। आशी मोबाइल थोड़ा ऊपर करो। मेरी तरफ"

आशी जो सीट के बीच में मोबाइल पकड़कर बैठी हुई थी, जल्दी से सीधा बैठ गई। वह मोबाइल का स्क्रीन उन्नत की तरफ करते हुये बोली

"अब दिख रहा है, भैया?"

"हाँ"

पापा कार धीरे–धीरे चलाते हुए, चौराहे पर पहुँचे। यहाँ से रास्ता 3 तरफ जाता था। उन्होंने एक पानवाले दुकानदार की तरफ इशारा करते हुए पूछा

"भाई, कौवों को एक कुत्ते को उठाकर ले जाते हुए देखा है?"

वह पान वाला बहुत परेशान सा दुकान बंद करके जाने ही वाला था मगर रुक गया। उसने पापा से दोबारा बोलने को कहा। पापा ने फिर से अपना सवाल दोहराया और पापा की आवाज थोड़ी कमजोर हो गई थी, जैसे वह जो बात पूछ रहे हों वह बहुत ही बचकानी हो। उस पान दुकानदार का चेहरा खिल गया। वह दौड़कर कार के पास पहुँचा और कार के शीशे पर हाथ रखकर खड़ा हो गया। वह बोला

"आपने भी उन कौवों को देखा है न?"

पापा ने अटकते हुए कहा

"हाँ"

वह अपने माथे से पसीने को पोछा और बोलने लगा

"कोई मेरा यकीन ही नहीं कर रहा था, मैंने भी देखा है उन कौवों को"

उन्नत और आशी जल्दी से मुड़कर कार के अंदर ही उस दुकानदार की तरफ झुक गए। उन्नत पूछा

"अंकल वो किधर गए हैं?"

पान दुकानदार कार के अंदर दोनों बच्चों और पापा को अचरज भरी नजरों से देखता हुआ पूछा

"सिनेमा हॉल की तरफ लेकिन आप लोग उसको क्यों खोज

रहे हैं, बात क्या है?"

पापा बोले

"थैंक यू, अभी थोड़ी जल्दी है कभी विस्तार से बताऊँगा"

पापा ने कार सिनेमा हॉल की तरफ बढ़ा दिया और उन्नत को बोले

"उन्नत"

"समझ गया, मैं ड्रोन सिनेमा हॉल की तरफ ले चलता हूँ"

"वैरी गुड उन्नत"

उन्नत अपने जीभ को होठों पर फिराते हुए, ड्रोन को बिजली के तारों से बचाता हुआ, पेड़ के ऊपर की तरफ ले जाने लगा। उसको डर था कि कहीं ड्रोन का सिग्नल ना छूट जाए। मगर ऐसा नहीं हुआ, ड्रोन सिनेमा हॉल की तरफ उड़ा जा रहा था। उसने आशी से पूछा

"कौवे दिखे कहीं?"

"नहीं उन्नत"

"भैया बोलो"

"भैया"

"आशी तुम ध्यान से देख रही हो न?"

"भैया, मैं भी मूलचंद से बहुत प्यार करता हूँ"

आशी गुस्सा होकर बोली, लेकिन सच में इतने समय तक उसने एक पल के लिए भी नजरें मोबाइल से नहीं हटाई थी। पापा भी कार से बाहर झाँक कर ऊपर आसमान की तरफ कौवों को ढूँढने की कोशिश कर रहे थे लेकिन कौवे कहीं नहीं दिखे। उन्होंने सोचते हुए बोला

"इतने कौवों का छिप पाना भी संभव नहीं है"

"हाँ पापा, लेकिन कौवे मूलचंद को कहाँ ले गए?"

पापा के पास जवाब नहीं था और उन्होंने देखा उन्नत मोबाइल में देखता हुआ ड्रोन के रिमोट का बटन दबा रहा है। आशी परेशान एक टक मोबाइल में आँखें गड़ाये है। दोनों का ध्यान मूलचंद या उन कौवों को दिखने की उम्मीद कर रहा था। आशी बोली

"भैया ना तो मूलचंद दिख रहा है और ना कौवे"

पापा बोले

"कहीं कौवों के जाल से मूलचंद गिर तो नहीं गया?"

"नहीं पापा वरना वो वापस रिसोर्ट आ जाता"

"शायद उसको रास्ता न पता चल रहा हो?"

पापा के इस बात का जवाब उन्नत के पास नहीं था। पापा भी सोचने लगे कि क्या मूलचंद वापस रिसोर्ट तक का रास्ता खोज पायेगा। वह बोलते हुए सोचे

"रास्ता भटका हुआ कुत्ता। बढ़ियाँ कहानी बन सकती है"

"पापा आपको कहानी लिखने की पड़ी है। यहाँ मूलचंद की जान खतरे में है"

"सॉरी, वैसे सिनेमा हॉल तक तो आ गए"

"पापा मूलचंद ठीक तो होगा?"

पापा को उम्मीद कम थी लेकिन उन्होंने ये बात जाहिर होने नहीं दी। पापा ने कार के बाहर देखते हुए कहा

"बिल्कुल ठीक होगा, कौवे कहीं नहीं दिखाई दे रहे"

कार सिनेमा हॉल के सामने खड़ी थी। वहाँ से फिर 3 रास्ते बँटते थे। पापा ने सिनेमा हॉल के कैंपस से निकल रहे पिज्जा डिलीवरी वाले अंकल से पूछा

"भैया वो, कुत्ते को कुछ कौवे उठाकर ले जा रहे थे, आपने देखा वो किधर गए?"

"क्या भाई साहब, बच्चों को ये कहानी सुनाइए। मैं थोड़े ना बच्चा हूँ"

"सॉरी भाई"

उन्नत को बहुत गुस्सा आया उस पिज्जा वाले अंकल पर और उसने फैसला किया कि अब वह कभी पिज्जा नहीं खायेगा। पापा ने कार को आगे बढ़ा दिया और दूसरे आदमी को सड़क पर ढूँढने लगे जिससे वो पूछ सके। उन्नत बोला

"पापा मैं पूछूँगा अब, आप सिर्फ बताना किससे पूछना है?"

"क्या हुआ?"

"मुझे अच्छा नहीं लगा जैसे उस अंकल ने आपका मजाक उड़ाया"

"कोई नहीं, परेशान नहीं होते"

पापा को सड़क किनारे सिक्यूरिटी गार्ड अंकल कुर्सी लगाकर बैठे दिखाई दिए। पापा कार उसके पास ले गये। उन्नत बोला

"गार्ड अंकल से पूछना है पापा?"

"हाँ"

उन्नत खिड़की से मुँह निकालकर गार्ड अंकल को पुकारने लगा

"अंकल? अंकल?"

उन्होंने नहीं सुना और पापा कार को गार्ड अंकल के बिल्कुल पास ले जाकर रोक दिए। उन्नत ने पूछा

"अंकल आपने कौवों को हमारे मूलचंद को ले जाते हुए देखा"

गार्ड अंकल जमीन से नजर उठाकर उनकी तरफ देखने लगे मगर कुछ बोले नहीं, पापा बोले

"वो जाल में बँधा हुआ कुत्ता, उसका नाम मूलचंद है"

गार्ड अंकल ने कुछ नहीं बोला बस अपनी कुर्सी को कार के पास खिसका लाए। उन्नत बोला

"हाँ, उसका नाम मूलचंद है"

उसने हाथ के इशारे से दाहिनी तरफ दिखाते हुए बोला

"वो उधर गए"

"अंकल, मूलचंद भी था?"

"हाँ वो कुत्ता जाल में फंसा हुआ था, आप लोगों का कुत्ता है?"

आशी ने बोला

"उसका नाम मूलचंद है"

"ठीक है आशी, उनको नहीं पता। पापा दाहिने। थैंक्स अंकल"

उन्नत जो खिड़की से बाहर निकला हुआ था वापस कार में घुसकर बैठ गया और ड्रोन का कण्ट्रोल संभाल लिया। पापा ने कार

आगे दाहिने तरफ घुमा दी। उन्नत और आशी मोबाइल में कैमरे का वीडियो फीड देख रहे थे। कार नुक्कड़ से गुजरी, जहाँ बहुत से लड़के लड़कियाँ बाइक पर बैठे हुए थे, ऑटो आ जा रहे थे। सड़क के दोनों तरफ बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स थी। वहाँ कौवे दिखाई नहीं दे रहे थे। उन्नत बोला

"पापा इतनी भीड़ वाली जगह तो कौवे नहीं बैठेंगे"

"सही बात"

"मैं ड्रोन आगे ले जाता हूँ"

उन्नत को थोड़ी दूर पर मोटर के चलने की तेज आवाज और बच्चों का शोर सुनाई दिया। उन्होंने विडियो फीड में देखा एक बड़े से मैदान में मेला लगा हुआ है। वो इलाका रौशनी से चमक रहा था। ड्रोन मेले के ऊपर से होकर गुजरा। आशी और उन्नत को मोबाइल पर बड़े बड़े झूले घूमते दिखे, जिसपर बैठे बच्चे खुशी से चिल्ला रहे थे। आशी और उन्नत का आज मेला जाने का मन नहीं हुआ, उनको मूलचंद की बहुत चिंता हो रही थी। समय बहुत बीत चुका था और अभी तक उसका कुछ पता नहीं चल पाया था। उन्नत बोला

"मेले के पीछे नमक के खेत हैं"

उन्नत और आशी को, मोबाइल पर, दूर दूर तक चाँद की रोशनी में चमकते हुए नमक के खेत दिख रहे थे, जिसमें नमक के छोटे छोटे टीले बने हुए थे। पापा बोले

"उन्नत यहाँ कौवे आ सकते हैं, हर तरफ देखो"

उन्नत ड्रोन को नमक के खेतों के ऊपर घुमाने लगा, ड्रोन को उसने थोड़ा तिरछा किया और मोबाइल स्क्रीन पर दिख रहे नमक के खेतों में कौवे नहीं दिखे। उन्नत बोला

"पापा यहाँ कौवे नहीं दिख रहे"

"यहाँ नहीं तो फिर कहाँ"

ये कहते हुए पापा ने कार को आगे बढ़ा लिया और उन्नत को ड्रोन में बार–बार वही नमक के खेत दिख रहे थे। धीरे धीरे कार इंडस्ट्रियल एरिया में घुस गई और बायें रेलवे ट्रैक था। बहुत जोर से

सुपरफास्ट ट्रेन गुजरने लगी। उन्नत और आशी के कान ट्रेन की खटरपटर आवाज से भर गए, हाथ में मोबाइल और रिमोट होने से दोनों ने कंधों को उचकाकर कान बंद कर लिया। पूरा इलाका रात अँधेरे में डूबा हुआ, ट्रेन की आवाज से गूँजने लगा। उन्नत ने देखा कि पापा नजरें घुमाकर सड़क पर किसी आदमी को खोज रहे हैं लेकिन वहाँ कोई नहीं था। वह बोले

"यहाँ तो कोई नहीं दिख रहा जो कुछ बता सके"

"अरे हाँ पापा आज तो फ्राइडे है, यहाँ सारी फैक्ट्री फ्राइडे को बंद होती है"

"यस यस। याद आ गया फिर किससे पूछा जाए"

"पापा, वहाँ चाय की दुकान"

पापा अधिकतर पान सिगरेट वालों से अड्रेस पूछते थे। उनका यकीन था कि पान वाले अड्रेस हमेशा सही बताते हैं लेकिन पान सिगरेट की दुकानें बंद थी। पापा ने देखा थोड़ी दूर एक मोड़ पर चाय की दुकान खुली हुई है। दुकान पर न दुकानदार था और ना ही कोई ग्राहक तभी आशी को ऐसा लगा जैसे उसने मोबाइल स्क्रीन पर कौवों को देखा। वह चिल्लाई

"कौवे"

जब उन्नत और पापा ने मोबाइल स्क्रीन पर देखा एक फैक्ट्री की छत्त दिखाई दे रही थी, जिसके ऊपर बहुत बड़े बड़े एग्जॉस्ट फैन से सफेद धुँआ बाहर निकल रहा था। उन्नत स्क्रीन पर कौवों को खोजने लगा लेकिन कौवे नहीं दिखे। आशी बोली

"भैया अभी कौवे दिखे थे, ड्रोन पीछे ले जाओ भैया"

"पीछे किधर ले जाऊँ, रेलवे ट्रैक की तरफ?"

आशी बिना कोई जवाब दिए कभी कार की खिड़की से बाहर देखती, कभी मोबाइल पर, वह अपना सिर खुजाते हुए अंदाज लगा रही थी की उसने कौवों को किधर देखा है। उसको कुछ समझ नहीं आया। वह बोली

"भैया ड्रोन को धीरे–धीरे आसपास घुमाकर देखो"

पापा ने भी कार रोक दी। उन्नत खिड़की से सिर निकालकर बाहर देखने लगा और आशी से पूछा

"कितनी देर पहले तुमने कौवों को देखा?"

"जब कौवा बोला मैंने"

उन्नत ड्रोन को आसपास घुमाने लगा। आशी मोबाइल स्क्रीन से चिपक गई और करीब–करीब अपना मुँह खोले हुई थी कि जैसे ही उसको कौवे दिखेंगे वैसे ही वह चिल्ला देगी। उन्नत ड्रोन को घुमाता हुआ, कार का दरवाजा खोलकर नीचे उतर गया। आशी भी उन्नत के पीछे–पीछे मोबाइल लेकर चलने लगी। वह मॉनिटर में देखते हुए उन्नत के पास पहुँच गई और उससे टकरायी। वह बोली

"सॉरी भैया, वो उधर, भैया ड्रोन को पीछे लो। उस लाल वाली कांच की बिल्डिंग के पीछे"

उन्नत ड्रोन को उड़ाता हुआ काँच की बिल्डिंग के ऊपर ले जाने लगा। मोबाइल पर बिल्डिंग की छत्त दिख रही थी और उसपर रखी टूटी फूटी कुर्सियाँ। वह बोली

"हाँ बस भैया इधर ही, पीछे की तरफ"

"बहुत हीरोइन मत बनो"

आशी को उन्नत की धमकी सुनाई भी नहीं दी। उन्नत को ताज्जुब हुआ कि आशी ने उसकी बात पर रियेक्ट नहीं किया, मगर उसने आँखों के कोने से देखा, आशी की आँखें मोबाइल पर जमी हुई है। वो आशी की बात मानता हुआ ड्रोन को उड़ाकर बिल्डिंग के पीछे ले गया। पापा भी आशी के पास आकर, उसके साथ खड़े होकर मोबाइल स्क्रीन पर देखने लगे। बिल्डिंग की दीवार खत्म हो गई और स्क्रीन पर कुछ कौवे हवा में चक्कर लगाते हुए दिखाई दिए। आशी और पापा दोनों एक साथ चिल्लाये

"बस उन्नत"

"भैया मूलचंद! कौवे"

उन्नत ने ड्रोन को उसी जगह रोक दिया और मोबाइल स्क्रीन पर देखने लगा। काँच की बिल्डिंग के पीछे रेलवे का यार्ड था। उसने

गौर से देखा की मूलचंद, उन्नत के टी शर्ट और आशी के पेंट पहने हुए, जाल में बंधा हुआ, रेलवे ट्रैक पर छटपटा रहा है। उन्नत बोला

"वो रहा मूलचंद, मूलचंद!"

"कौवों ने मूलचंद का मास्क भी छीन लिया"

उन्नत को समझ नहीं आया की आशी को मास्क की पड़ी है, उधर कौवे मूलचंद को लगातार चोंच मार रहे है। वह बोला

"मूलचंद कौवों को भौंककर भगाने की कोशिश कर रहा है लेकिन वो नहीं भाग रहे"

आशी बोली

"मूलचंद बहुत दर्द में है, वो रो रहा है"

आशी और उन्नत की परेशानी बढ़ गई। उन्नत को कौवों पर बहुत गुस्सा आया और वह बिल्डिंग की तरफ भागने को हुआ तभी पापा ने बोला

"कहाँ जा रहे हो उन्नत?"

"मूलचंद को बचाने, पापा"

"रुको"

उन्नत रुक गया

"मूलचंद रेलवे ट्रैक पर बंधा हुआ है, ट्रेन आ गई तो?"

"उन्नत ये यार्ड है यहाँ ट्रेन कम आती है"

"लेकिन आती तो है"

"हाँ आ तो सकती है"

"पापा यहाँ ट्रेन कम क्यों आती है?"

आशी ने पूछा और उन्नत को लगा कि इस सवाल का अभी कोई मतलब नहीं है। पापा जवाब देने लगे

"यहाँ ट्रेन की साफ सफाई और मेंटेनेंस का काम होता है"

उन्नत ने पापा को टोका

"पापा जल्दी मूलचंद को बचा लो, वरना ट्रेन साफ सफाई के लिए आ जायेगी"

"उसके पहले हमलोग मूलचंद को बचा लेंगे बेटे"

"पापा हमलोग पत्थर उठा लेते हैं, कौवों को भगाने में मदद मिलेगी"

"डरेंगे क्या ये कौवे, हमपर भी हमला कर देंगे"

"हमलोग छिपकर फेंकेंगे न?"

"तुम पर पहले कौवे हमला कर चुके हैं, याद है?"

"फिर हम मूलचंद को कैसे बचायेंगे?"

"थोड़ा दिमाग लगाना पड़ेगा"

आशी ने कहा

"पापा, प्लीज मूलचंद को बचा लो"

कलूटे ने हवा में उड़ते हुए ड्रोन को देखा। वह उड़ता हुआ ड्रोन के पास पहुँच गया, उसको ड्रोन के पंखे से जोर का झटका लगा और वह हवा में दूर उड़ गया। अपनी बेकार किस्मत को कोसता हुआ वह वापस ड्रोन के पास पहुँचा। ध्यान से देखने पर उसको समझ आ गया कि ये कोई पंछी नहीं बल्की मशीन है। वो हवा में उड़कर आसपास ढूँढने लगा और उसको तुरन्त ही उन्नत और आशी दिखाई दिए, जो बिल्डिंग की दूसरी तरफ कार के बाहर खड़े थे। कलूटा उनको देखकर गुस्से से भर गया और हवा में नीचे गोता लगाते हुए सीधा सरदार के पास आकर रुका। सरदार कौवों को मूलचंद से बदला लेने के लिए प्रेरित कर रहा था, कलूटा बोला

"काँव काँव, (सरदार आपने सही कहा था, वो बच्चे आ गए हैं)"

"काँव काँव, (अब इन्हें पता चलेगा। पहले हम इस कुत्ते को मारेंगे और फिर... इनकी बारी)"

सारे कौवे जोर–जोर से मूलचंद को चोंच मारने लगे, वह जाल में उलझा हुआ अधमरा सा हो गया था।

उन्नत और आशी कलूटा के ड्रोन से टकराने के बाद सोच रहे थे कि क्या उनके बारे में कौवों को पता चल गया है। पापा बोले

"ऐसा होता तो अभी तक कौवे हमपर हमला कर चुके होते"

उन्नत और आशी मोबाइल स्क्रीन पर देख रहे थे कि मूलचंद जाल से निकलने के लिए हाथ पैर मार रहा है। आशी के तो मूलचंद

की ये हालत देखकर आँसू बहने लगे। उन्नत के दिमाग में एक आईडिया आया। वह ड्रोन को नीचे रेलवे ट्रैक की तरफ उतारते हुए बोला

"पापा मैं ये ड्रोन कौवों के पास ले जाता हूँ, वो डरकर भाग जायेंगे"

"नहीं उन्नत"

तभी मोबाइल स्क्रीन पर वीडियो हिलने लगा। आशी और उन्नत ने पापा की तरफ देखा, जो मोबाइल से नजरें हटाकर उनकी ही तरफ देख रहे थे। वह बोला

"पापा ड्रोन कण्ट्रोल से बाहर हो गया है"

उन्नत ने ड्रोन को कण्ट्रोल करने की कोशिश की लेकिन ड्रोन हवा में कलाबाजियाँ खाता हुआ कभी एक तरफ जाता तो तुरंत घूमकर दूसरी तरफ। आशी और उन्नत मुँह खोले हुए यह देख रहे थे तभी उनको मोबाइल स्क्रीन पर ड्रोन के पंखे से चोट खाकर 1 कौवा हवा में नीचे गिरता हुआ दिखा। कौवा थोड़ा नीचे गिरने के बाद संभला और वापस उड़कर ड्रोन की तरफ बढ़ा, पहुँचकर ड्रोन को पंजे से पकड़ लिया। एक और कौवा था जो ड्रोन से चिपका हुआ चोंच मार रहा था। उन्नत बोला

"ये ड्रोन तोड़ रहे हैं"

उन्नत ड्रोन को वापस लाना चाहता था लेकिन कलूटा और उसके साथी ड्रोन को आगे बढ़ने नहीं दे रहे थे। उन्नत कैमरा को घुमाकर देखने लगा की कौवे क्या कर रहे हैं। उसने देखा ड्रोन से चिपके हुए कलूटे कौवे ने, अपने एक डैने को ड्रोन के घूमते पंखे में फँसा दिया और मोबाइल स्क्रीन पर कलूटे के काले पंखों के छोटे छोटे टुकड़े गिरते हुए दिखने लगे। उन्नत और आशी चौंक गए। ड्रोन नीचे गिरने लगा। मोबाइल पर कभी आसमान दिखता, तो कभी बिल्डिंग का कोई हिस्सा। ड्रोन तेजी से घूमता हुआ नीचे की तरफ बढ़ रहा था और जमीन से टकराकर रुक गया।

मोबाइल स्क्रीन पर मूलचंद साफ दिखाई दे रहा था, दर्द से वह

रो रहा था। उसकी ये हालत देखकर, उन्नत और आशी दोनों का मन हुआ कि कौवों की बहुत पिटाई करें। उन्नत ड्रोन का रिमोट–कण्ट्रोल आशी को देते हुए बोला

"रिमोट कार में रख दो आशी"

आशी ने लगातार मोबाइल स्क्रीन पर मूलचंद की हालत को देखते हुए, ड्रोन का रिमोट लेकर कार के अंदर उछाल दी। उन्नत को डर लगा की कहीं रिमोट गिर कर टूट न जाए लेकिन रिमोट सीधा अगली सीट पर जाकर गिरा। पापा घबराते हुए बोले

"कौवों को हमारे यहाँ आने का पता चल गया है, वो हमारी तरफ आने ही वाले हैं"

आशी मोबाइल स्क्रीन पर देखते हुये बोली

"पापा कौवे मूलचंद को कितनी जोर से चोंच मार रहे हैं"

"पापा आपने कुछ सोचा कैसे बचाना है"

"उन्नत उस तरफ जाना खतरनाक है वो भी इस रात के वक्त। हमें लौट चलना चाहिए"

उन्नत और आशी ने घूर कर पापा को देखा, उन्नत बोला

"पापा मूलचंद को ऐसे छोड़ दें?"

"उस तरफ साँप भी हो सकते हैं"

"प्लीज पापा, सब कहते हैं कि पार्क में साँप है पर आप तो मुझे वहाँ खेलने देते हैं"

आशी ने रोना शुरु कर दिया और रोते हुए कार में जाकर बैठ गई। पापा ने उन्नत की तरफ देखा जो वापस लौटने के मूड में नहीं दिख रहा था। वह बोला

"पापा मेरे पास एक आईडिया है"

पापा उसकी तरफ लम्बी साँस लेते हुए गौर से देखने लगे फिर उन्होंने कहा

"आईडिया बाद में बताना लेकिन पहले प्रॉमिस करो की मम्मी को तुम दोनों कुछ नहीं बोलोगे"

उन्नत ने फटाक से हाँ कहते हुए जोर से गर्दन हिलाई। पापा

बोले

"अब बताओ अपना आईडिया"

"हमलोग कौवों का ध्यान बटायेंगे और आप मूलचंद को तब तक बचा लेना"

"पर ध्यान कैसे बटाओगे?"

"क्या आप कार को ट्रेन की पटरी के पास ले जा सकते हैं?"

"हाँ, आगे से रास्ता है पर इससे क्या होगा?"

"जहाँ मूलचंद बँधा है, उससे कितनी दूर?"

"करीब 10 कदम की दूरी तक, पर कौवे हमें देख लेंगे, पूरा प्लान बताओ"

"आप पहले कार वहाँ ले चलिए, फिर मैं बताता हूँ"

"तुम्हारे पास कोई आईडिया है ना! या वहाँ जाकर आगे का सोचने वाले हो"

"आपके पास कोई आईडिया है?"

पापा जल्दी से कार में बैठ गए और कार स्टार्ट किया। उन्नत पीछे वाली सीट पर, रोती हुई आशी के पास बैठ गया। वह बोला

"मैं तुम्हारे दूसरे भैया मूलचंद को कुछ नहीं होने दूँगा"

"मुझे मूलचंद की बहुत चिंता हो रही है"

उन्नत ने आशी को गले लगा लिया तभी पापा कार को बिल्डिंग के बगल वाले संकरे रास्ते में ले जाने लगे। कार के करीब करीब चिपकी दीवारों को देखकर उन्नत सोचने लगा कि वो लोग कार का दरवाजा खोलकर उतरेंगे कैसे तभी कार एक जगह फँस गई। उन्नत ने पूछा

"सड़क इतनी पतली हो गई क्या?"

"नहीं, टायर नीचे गड्ढे में फँस गया है"

पापा ने कार को आगे बढ़ाया और थोड़ी दूर पर रेलवे ट्रैक के बगल वाले बिजली के खम्भे और रेलवे शेड दिखने लगे, साथ में कौवों की आवाज और नजदीक सुनाई देने लगी। कार थोड़ी दूर आगे बढ़ी तो वहाँ छोटी सी पार्किंग थी। साइकिल और बाइक रखने के लिये,

पापा ने कार रोक दी। उन्नत ने पूछा

"पापा इससे आगे नहीं जा सकते?"

"नहीं"

पापा ने उन्नत की तरफ देखा

"अब?"

"मैं सारा प्लान आपको नहीं बताने वाला, आप बस कौवों के जितना पास जा सकते हैं जाइये, जैसे ही कौवे हटेंगे, आप मूलचंद को उठा लेना। आपके पास बहुत समय नहीं होगा"

"कौवे कैसे हटेंगे?"

"पता चल जायेगा"

पापा उन्नत की बड़ी बड़ी बातें सुनकर, उसे ताज्जुब से देख रहे थे। वह बोले

"मुझे तुम्हारी बात सुनकर कुछ गड़बड़ होने की संभावना लग रही है"

"कुछ गड़बड़ नहीं होगी पापा, आप जाओ"

उन्नत ने देखा कि पापा घूर कर उसे देख रहे हैं। वह बोला

"पापा जाओ, ऐसे क्यों देख रहे हो?"

"सोच रहा हूँ, तुम्हारे दिमाग में चल क्या रहा है"

उन्नत उनको एक टक देख रहा था, साथ में उसके गोद में चिपकी आशी भी। पापा समझ गए दोनों ने गैंग बना लिया है। पापा बोले

"तुम कुछ भी करो लेकिन कार से बाहर मत निकलना"

"मैं थोड़ी देर के लिए निकलूँगा फिर अंदर आ जाऊँगा"

"बाहर क्यूँ निकलोगे? क्या करोगे?"

"बोला ना, नहीं बता सकता"

पापा समझ गए कि उन्नत नहीं बताने वाला और उससे बहस करने का कोई फायदा नहीं है। पापा कार की चाभी निकालकर अपने पॉकेट में रखते हुए कार से उतर गए। फैक्ट्री की खिड़कियों से हल्की–हल्की रौशनी और दूर में लगे स्ट्रीट लाइट की पीली रौशनी में

सब कुछ पीला, हल्का सफेद दिख रहा था। बहुत डरावना। पापा को भी डर लगने लगा लेकिन वह बच्चों के सामने नहीं बोल सकते थे। वो हिम्मत बांधते हुए रेलवे यार्ड की तरफ जाने लगे।

उन्नत और आशी ने देखा की पापा सामने टूटी हुई दीवार की तरफ जा रहे हैं, दीवार की ईंटें गिरने से एक आदमी के गुजरने जैसी जगह बनी हुई है। पापा उससे निकलते हुए दीवार की दूसरी तरफ रेलवे ट्रैक पर पहुँच कर मुड़ गए। वो अब दिखाई नहीं पड़ रहे थे और आशी मोबाइल पर देखने लगी, उसको इन्तजार था की पापा जल्दी पहुँचकर मूलचंद को कौवों से बचा लेंगे लेकिन वो मोबाइल स्क्रीन पर नहीं दिखे। वह बोली

"भैया पापा अभी तक वहाँ क्यों नहीं पहुँचे?"

"वो कौवों के हटने का इन्तजार कर रहे हैं"

उन्नत अपने बैग से गुलेल निकालकर पैंट के पॉकेट में खोंस लिया फिर वह कार का दरवाजा खोलकर नीचे उतरा, जमीन से छोटे–छोटे पत्थर उठाने लगा। आशी मोबाइल स्क्रीन पर कौवों को मूलचंद को चोंच मारते देख रही थी, वह भी उन्नत के पीछे पीछे उतरी और जमीन से ३ बड़े बड़े पत्थर उठाकर उन्नत के तरफ बढ़ाते हुए बोली

"ये लो भैया"

उन्नत ने पत्थर उसके हाथ से ले लिया और आशी को बोला

"बैग से वो हवा में फूटने वाले पटाखे निकालकर दो"

आशी जल्दी से कार के अंदर गई तब तक उन्नत ने पॉकेट में पत्थर भर लिए। आशी हाथ में एक कार्डबोर्ड का पैकेट लेकर उन्नत के पास आयी। उन्नत ने पैकेट से निकालकर छोटे–छोटे दो मुँह वाले सफेद गोलों को अपने शर्ट के पॉकेट में रख लिया और पैकेट आशी को वापस दिया। उन्नत ने दिवाली में ये पटाखा खरीदा था जिसको फेंकने पर वह हवा में फट जाता था। उसकी जोर से आवाज होती और हल्की चिंगारी निकलती। उन्नत को किताब में पढ़ी बात याद आयी की जानवरों को परेशान नहीं करना चाहिए, वो बहुत प्यारे होते हैं। उन्नत

बोला

"सॉरी बुक, ये कौवे बहुत बदमाश हैं"

आशी और उन्नत टूटी हुई दीवार के पास धीरे–धीरे जाने लगे। उन्नत ने अपने पीछे आशी को छिपा रखा था, दोनों ने टूटी दीवार से झाँककर देखा की मूलचंद पटरियों पर गिरा हुआ है और सारे कौवे उसको चोंच मार रहे हैं, कौवों की काँव के बीच मूलचंद का हल्का हल्का भौंकना सुनाई दे रहा है। उन्नत पापा को ढूँढने लगा और उसने देखा की मूलचंद जिस पटरी पर गिरा हुआ है उसके बगल वाली पटरी पर बिल्कुल पास खड़े ट्रेन के डब्बे के पीछे पापा छिपे हुए हैं। वो मौके का इंतजार कर रहे थे, उन्नत ने धीरे से हवा में हाथ हिलाया और पापा ने देख लिया। आशी बोली

"उन्नत भैया पापा मूलचंद के पास पहुँच गए हैं और वो रेडी हैं"

आशी ने बहुत धीरे से फुसफुसाते हुए कहा था लेकिन उन्नत ने जल्दी से उसके मुँह पर हाथ रख दिया फिर उसके चेहरे के बिल्कुल करीब आकर बोला

"बोलने को मना किया था न"

आशी का चेहरा उन्नत के हाँथ से दबा हुआ था और उसकी आँखें जरूरत से ज्यादा बड़ी दिख रही थी। आशी ने सिर ऊपर नीचे हिलाया और उन्नत ने अपना हाथ उसके चेहरे से हटा दिया और पॉकेट से निकाल कर उसको एक छोटी सी सीटी देता हुआ बोला

"सीटी को जोर से बजाना शुरू करना, जब मैं इशारा करूँ"

आशी ने सीटी को मुँह में दबाकर सिर को हाँ में हिलाया। उन्नत दीवार से छिपकर खड़े होते हुए पीछे वाले पॉकेट से गुलेल निकाला और आशी की तरफ इशारा किया। आशी ने जोर से सीटी बजाना शुरू कर दिया।

रेलवे यार्ड में सीटी की आवाज गूँजने लगी। कौवे इस तेज आवाज के कारण बेचैन हो गये, वो इधर उधर उड़कर देखने लगे। उन्नत भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि जल्दी से कौवे मूलचंद के पास से हटें तो पापा मूलचंद को जाल से आजाद करवाए। उन्नत

गुलेल में पत्थर लगाकर तैयार होते हुए अपनी छिपने वाली जगह से यार्ड में घुस गया, मूलचंद को चोंच मार रहे कौवों पर पत्थर चलाने लगा। एक के बाद एक, कुछ सेकंड में उसने 5 पत्थर मार दिए जिससे कौवे मूलचंद के ऊपर से बिखर गए और तब तक उन्नत ने जल्दी–जल्दी 3 पत्थर और उनकी तरफ मारे। सरदार और कलूटा को उन्नत दिख गया, सरदार ने बोला

"काँव, काँव, (जाओ कलूटा, तुम उनको संभालो)"

कलूटा और काकोर, कुछ कौवों को लेकर उन्नत की तरफ उड़ने लगे। कौवों को यूँ बच्चों की तरफ उड़कर जाते देख, पापा डर गए। उन्नत को अपना प्लान काम करता हुआ दिख रहा था और वह कौवों पर पत्थर मारता जा रहा था। कौवे उसके पास पहुँचने वाले थे। इसी बीच उन्नत को ध्यान नहीं रहा की कब आशी ने सीटी बजाना बंद कर दिया है। वो डरी हुई वहाँ खड़ी थी और उन्नत ने बोला

"आशी, सीटी"

आशी फिर से सीटी बजाने लगी तब तक उन्नत उसके पास पहुँच गया और उसका हाथ पकड़कर कार की तरफ दौड़ा। कौवे उनके बिल्कुल पास पहुँच चुके थे। उन्नत इसके लिए तैयार था, उसने पॉकेट से हवा बम निकाला और कौवों की तरफ उछाल दिया। उन्नत ने वापस मुड़कर नहीं देखा। उसने बम फटने की आवाज सुनी और जो कौवे अब तक उसके पास पहुँच जाने चाहिए थे वह नहीं पहुँचे थे। इसका मतलब उन्नत का बम वाला प्लान काम कर गया था। बाकी कौवों के विपरीत कलूटा कार के ऊपर पहले से ही घात लगाए उड़ रहा था। वह उन्नत के सिर पर अपना पंजा गड़ाने वाला था जब उन्नत ने उसको मारकर हवा में उछाल दिया। फिर वह आशी को लेकर कार के अंदर घुस गया और दरवाजा बंद कर दिया। अगले ही पल, कौवे उड़कर पहुँच गए और कार की खिड़कियों, दरवाजों और छत्त पर चोंच मारकर अंदर घुसने का रास्ता बनाने लगे। उन्नत को ये तो पता था कि कौवे कार के अंदर नहीं आ पाएंगे। आशी मोबाइल स्क्रीन पर देख रही थी की कौवे अभी भी मूलचंद को चोंच मार रहे हैं। आशी बोली

"भैया, पापा ने अभी तक मूलचंद को नहीं छुड़ाया"

उन्नत बोला

"मेरा प्लान काम नहीं किया, हम यहाँ फंसे हैं और पापा वहाँ"

"भैया, पापा मुसीबत में हैं क्या?"

"कैसी मुसीबत?"

उन्नत को कौवों के चोंच शीशे पर टकराते हुए दिख रहे थे, वह सोचने लगा

"कहीं शीशा टूट न जाये, कौवे फिर कार के अंदर घुस जाएंगे। इस छोटी सी जगह में कौवे हम दोनों को नोच डालेंगे, यहाँ तो हाथ हिलाकर मारने की जगह भी नहीं है"

उन्नत ने अपने सिर पर हाथ मारकर खुद को ऐसा ऊट पटांग सोचने से रोका। वह बोला

"आशी मैं बाहर जा रहा हूँ, पापा की मदद करने"

आशी उसको ताज्जुब से देखकर पूछी

"उन्नत, बाहर कैसे जाओगे, कौवे हैं"

"उन्नत नहीं, उन्नत भैया, मैं खुद को ढँक कर जाऊँगा"

उन्नत पीछे वाले सीट से कार की डिक्की में झुकते हुए बोला

"अच्छा हुआ पापा ने स्पीकर नहीं लगवाया"

वह कार कवर निकालकर उठा और खुद को ढँकने लगा। कार कवर बहुत बड़ा होने के कारण उससे समेटा नहीं जा रहा था। वह कार की छत्त से टकराया और सँभलने की कोशिश में पैर कवर में फंस गया, वह सीट के बीच में गिरने लगा। उसने गिरते हुए, हाथ कवर से बाहर निकालकर, खुद को बचाने की कोशिश किया तो हाथ कवर की बेल्ट में फंस गया। उन्नत का चेहरा सीधा कार की फर्श पर टकराया। उसके पैर हवा में लहराने लगे, वह अपने पैरों को सीट पर रखकर, कोहनियों से धक्का देता हुआ खुद को उठाता फर्श पर बैठ गया। आशी उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोली

"भैया, तुम्हारे दाँत से खून बह रहा है"

उन्नत को भी मुँह में कुछ पानी जैसा महसूस हो रहा था और

उसने अपने शर्ट के बाजू से होठों को पोछा। उसने बाजू पर खून का धब्बा देखा और बोला

"कोई बात नहीं, ठीक हो जाएगा"

उन्नत अपने जीभ से खून रिसते हुए दाँत के आसपास के मसूड़ों को सहलाता हुआ कार कवर को अपने ऊपर लपेटने लगा। उन्नत ने महसूस किया कि अब वो खुद को इस कार कवर के अंदर छिपाकर आराम से बिना उलझे हुए चल सकता है तभी आशी के हाथ में रखे मोबाइल से विडियो गायब होकर "मम्मी कौलिंग" दिखने लगा और मोबाइल की रिंगटोन कार में गूँजने लगी। आशी ने जल्दी से मोबाइल को म्यूट कर दिया। उन्नत सीट के बीच में खड़ा कार का दरवाजा खोलने ही वाला था। वह रूककर बोला

"आशी डरना मत, मैं अभी आया"

उन्नत ने दरवाजे को जोर से धक्का देकर खोला, जिससे दरवाजे पर चिपके हुए कौवे दूर उछल गये। उन्नत दरवाजे से अभी आधा बाहर निकला था तभी कुछ कौवे उसके ऊपर हमला करने लगे तो कुछ उसके अगल बगल से कार के अंदर घुसने की कोशिश करने लगे। उन्नत ने कौवों को अपने हाथों और सिर से धक्का देकर पीछे हटाया और कार का दरवाजा जल्दी से बंद कर दिया। उन्नत ने सीट कवर से अपने चेहरे को ढँककर टूटी दीवार की तरफ भागने लगा।

कलूटा बोला

"काँव काँव, (काकोर तुम कार में घुसने का रास्ता देखो मैं इस बच्चे के पीछे जाता हूँ)"

कलूटा उन्नत के पीछे उड़ा और पंजे से कार कवर नोचने लगा जिससे उन्नत थोड़ा डर गया। वह रुका नहीं, टूटी दीवार से होता हुआ रेलवे यार्ड में पहुँच गया। चेहरे पर ढँके कार कवर के बीच से, उसने देखा पापा मूलचंद से थोड़ी दूर दूसरी पटरी पर बैठे हुए अपने ऊपर से कौवों को भगा रहे हैं। उन्नत बोला

"ये पापा क्यों बैठे हैं?"

उन्नत दौड़ते हुए, अपने ऊपर से कार कवर उतारकर हाथ में

हेलीकाप्टर की तरह घुमाने लगा। कलूटा को मौका मिल गया और वह उन्नत के चेहरे और सिर पर चोंच मारने लगा, उसके पीठ और हाथों पर पंजे गड़ाये। उन्नत पापा के पास पहुँच गया और वो बोले

"उन्नत मेरे पाँव में मोच आ गई है, उठा नहीं जा रहा है"

उन्नत कार कवर से पापा के ऊपर चोंच मारते कौवों को हटाने लगा। उसने देखा एक कौवा कार कवर में फंसकर छटपटा रहा है। उसे दया आयी और कौवे का पंख पकड़कर बाहर निकाल दिया, कौवा उड़कर चला गया। उन्नत को पता था कि वह ऐसे बहुत देर तक कौवों को नहीं रोक पायेगा। उसे बचने का कोई आईडिया नहीं समझ आ रहा था क्योंकि पापा से उठा नहीं जा रहा था और मूलचंद जाल में बेहोश था।

***

कार के अन्दर, आशी मोबाइल स्क्रीन पर उन्नत को कौवों की पिटाई करते देख रही थी, वो शीशे पर चोंच मारते कौवों को जीभ दिखायी और बोली

"उन्नत भैया तुम्हारी भी पिटाई करेगा"

तभी आशी ने देखा की मोबाइल पर विडियो दिखना बंद हो गया, वह समझ गई

"सिग्नल चला गया, लगता है ड्रोन की बैटरी खत्म हो गई"

जहाँ अब तक वो मोबाइल पर विडियो देखकर कौवों के डर को भुलाए हुये थी, विडियो बंद होते ही उसका डर जागने लगा और उसके कानों में कौवों के काँव–काँव की आवाज गूँजने लगी और साथ में सामने शीशे पर कौवों के चोंच गिरते हुये दिखाई दे रहे थे, वह डरकर काँपती हुई दुबककर सीट के बीच वाली जगह में बैठ गई, आँखें बंद करके बोली

"हे भगवान पापा और उन्नत को जल्दी ले आओ"

उन्नत रेलवे यार्ड में कौवों को कार कवर से मारकर हटाता हुआ पापा से बोला

"पापा निकलने का कोई तरीका बताओ"

पापा कौवों को अपने हाथों से मारते हुए आसपास देख रहे थे, उन्नत समझ गया की पापा भी बचने की तरकीब सोच रहे हैं। तभी उसके ऊपर से चोंच मारते हुए कौवे हट गए, उसने देखा की पापा और मूलचंद के ऊपर से भी कौवे उड़ने लगे हैं, कौवों का काँव काँव चिल्लाना बढ़ने लगा। उन्नत हवा में घूमाता हुआ कार कवर रोककर कौवों को देखने लगा। उसने देखा कौवे उड़कर दूर जा रहे हैं और उसे चैन मिला मगर कौवों को दूर जाता देखकर, वह सोचने लगा

"कौवे कहाँ जा रहे हैं!"

उन्नत का ताज्जुब और बढ़ा जब कौवे कार वाली दिशा में भी नहीं गये। उसको पूरा यकीन हो गया कि कुछ गड़बड़ है, वह बोला

"कौवे क्या चले गए"

अध्याय 10

आखिरी वार

कलूटा और सरदार सभी कौवों के साथ, रेल की पटरियों के बीच बने ट्रैक चेंज करने वाले लीवर पर जाकर बैठ गये, उनके वजन से लीवर नीचे आने लगा। कलूटा और सरदार कौवों के साथ उड़कर उन्नत और उसके पापा को देखने लगे, कलूटा बोला

"काँव काँव, (अब बैठ के तमाशा देखा जाए)"

उन्नत मूलचंद को जाल सहित उठाने की कोशिश किया लेकिन जाल पटरियों के नट बोल्ट में उलझा होने के कारण निकल नहीं पाया। उसने जाल को सुलझा कर निकालने की कोशिश की मगर जाल और उलझता जा रहा था। उसे समझ आया की मूलचंद को जाल से निकालने के सिवाये और कोई रास्ता नहीं है। वह मूलचंद को जाल से निकालने लगा तभी पापा ने रेलवे का सिग्नल देखा जो हरा था और कुछ सेकंड में ही उनको ट्रेन के आने की आवाज सुनाई देने लगी। पापा बोले

"ट्रेन इसी ट्रैक पर आने वाली है, कौवों ने ट्रैक चेंज कर दिया है, उन्नत"

उन्नत ने नहीं सुना और पापा ने देखा ट्रेन मूलचंद और उन्नत की तरफ बढ़ रही है। पापा उठने की कोशिश करने लगे और उन्नत को बोले

"उन्नत पटरी से नीचे उतरो, उन्नत"

उन्नत को सुनाई नहीं दिया, पापा जोर से चिल्ला कर बोले

"उन्नत रेल की पटरी से नीचे उतरो"

उन्नत मुड़ा तो उसको पापा का घबराया हुआ चेहरा दिखा और वो बार बार जिस दिशा में देख रहे थे, उधर नजर घुमाया तो उसकी साँस अटक गई, ट्रेन को अपनी तरफ बढ़ता हुआ देख कर, वह बोला

"पापा मूलचंद जाल से नहीं निकल रहा"

उन्नत अपने हाथ से जाल को फाड़ने की कोशिश किया, जाल नहीं फटने पर दाँत से काटने लगा। तब तक पापा खुद को उठाते हुए हवा में हाथ हिलाकर ट्रेन ड्राइवर को ट्रेन रोकने का इशारा करने लगे। उन्नत इधर मूलचंद को जाल से आजाद नहीं कर पाया और ट्रेन उसके पास पहुँचने लगी। ट्रेन का हॉर्न बजना शुरु हुआ और पूरा रेलवे यार्ड इस आवाज से भर गया, कौवे ट्रेन की आवाज से इधर उधर तितर बितर होने लगे, थोड़ी देर में ट्रेन उन्नत के पास पहुँच जाती। पापा डर गये। समय कम था। उन्नत जैसे ट्रेन को भूल गया था और मूलचंद को जाल सहित उठाकर खींचने लगा। मूलचंद उन्नत के गोद में था। पापा बोले

"उन्नत उन्नत"

पापा बहुत मुश्किल से खड़े होते हुए, मोच के दर्द से लड़खड़ाकर चलते हुए उन्नत के पास पहुँचे और उसको पकड़ लिया। ट्रेन की तेज रोशनी में तीनों नहा गये और उनके कान ट्रेन की सीटी के आवाज से भर गई, ट्रेन उनसे 2 कदम की दूरी पर थी। पापा उन्नत को पकड़कर ट्रेन की पटरी से बाहर की तरफ पलट गये। उन्नत के गोद में मूलचंद जाल में उलझा हुआ उससे चिपका हुआ था। पापा बुरी तरह कांपते हुए, आँखें बंद किये थे तभी मूलचंद धीरे धीरे भौंकने लगा और उसकी आवाज सुनकर उन्होंने उन्नत और मूलचंद दोनों को अपने बाहों के घेरे में दबा लिया। पास में ही ट्रेन का इंजन जोर जोर से साँस ले रहा था। ट्रेन रुक चुकी थी। ट्रेन का हॉर्न बंद हो गया था, ये एक माल गाड़ी थी और ट्रेन ड्राइवर अंकल उतरकर उनके पास आये। वह पापा पर बहुत गुस्सा होते हुए बोले

"ये क्या मजाक चल रहा है, पता है अभी क्या हो सकता था"

पापा और उन्नत के कान बज रहे थे, ड्राईवर अंकल के 2–3 बार पूछने पर बात समझ आयी। पापा कुछ बोलते उसके पहले उन्नत ने ड्राइवर अंकल को थोड़ी दूर पर उड़ रहे कौवों की तरफ दिखाया। ड्राइवर अंकल को कौवे और उन्नत के हाथ में जाल में फंसे जख्मी मूलचंद को देखकर कुछ कुछ समझ आया कि यहाँ क्या हुआ है। पापा

ने उन्नत से पूछा

"आशी कहाँ है?"

"कार में"

"अकेले, वो डर रही होगी"

इतना कहकर वह उठने को हुए लेकिन उनको खड़ा नहीं हुआ जा रहा था। उन्नत और ड्राइवर अंकल ने उनको सहारा देकर उठाया। पापा ने उठते उठते कार कवर उठा कर लपेटने लगे, उन्नत बोला

"क्या आप हमें कार में पहुँचने तक, वो ट्रेन हॉर्न बजा सकते हैं?"

ड्राइवर अंकल ने सिर हिलाया और इंजन में जाकर हॉर्न के बटन को दबा कर एक पत्थर रख दिया, ट्रेन हॉर्न लगातार बजने लगा, जिससे कौवे परेशान हो गए । ड्राइवर अंकल, पापा और उन्नत के पास आकर बोले

"आपको मैं कार तक पहुँचा देता हूँ"

"थैंक्स"

उन्नत ने तब तक मूलचंद को जाल से निकाल दिया था और पास में गिरा हुआ ड्रोन भी उठा लिया, पापा ट्रेन ड्राइवर के कंधे पर हाथ रखे टूटी हुई दीवार की तरफ जा रहे थे। पीछे से उन्नत मूलचंद को गोद में लेकर और हाथ में ड्रोन पकड़े चल रहा था। कौवे कार पर भी नहीं थे और पापा को आशी भी कार में नहीं दिखी। वो परेशान हो गए तभी आशी कार सीट के पीछे से सिर निकालकर देखने लगी और खुश हो गई। उन्नत मूलचंद को लेकर कार की तरफ भागा और थोड़ी देर में पापा भी उसके पीछे ड्राईवर अंकल का सहारा लेकर आए और कार में बैठ गए। आशी जोर–जोर से रोती हुई पापा और उन्नत के गले लग गई। वह बोली

"मैं डर गया था, कौवे बुरे हैं, बहुत बुरे"

सभी कुछ देर तक शाँत रहे और फिर पापा का ध्यान ड्राईवर अंकल पर गया, जो कार के दरवाजे के पास खड़े थे, पापा ने उनसे

हाथ मिलाया और बोले

"थैंक यू"

ड्राईवर अंकल वापस रेलवे यार्ड की तरफ चले गए। थोड़ी देर बाद उन्नत ने मूलचंद को कार की पिछली सीट पर लिटा दिया। मूलचंद हल्का हल्का कराह रहा था। आशी ने मूलचंद का टी–शर्ट उठाकर देखा। शरीर पर बहुत सारे चोट के निशान थे। आशी मूलचंद के चोट को देखकर अपने हाथों से सहलाने लगी। वह बोली

"तुम ठीक हो मूलचंद, पापा मूलचंद को बहुत चोट लगी है, इसको डॉक्टर के पास जाना है"

"बेटा, रिसोर्ट पहुँचकर वहीं के डॉक्टर को दिखाएँगे"

तभी पापा का फोन हल्की सी हम्म हम्म आवाज करने लगा। पापा ने इधर उधर ढूँढा और पीछे वाली सीट पर रखे फोन को उठा लिया। फोन मम्मी का था और उनका चेहरा सूख गया, पापा ने फोन उठाया और मम्मी की आवाज आयी

"फोन क्यूँ नहीं उठा रहे थे?"

"तुम सही कहती थी"

"मक्खन पालिश नहीं, तुम लोग कर क्या रहे हो?"

"आ ही रहे हैं"

"जल्दी आओ, बच्चे ठीक हैं?"

"हाँ"

"उन्होंने कुछ खाया भी नहीं है, जल्दी आओ"

"आता हूँ"

पापा ने फोन कट किया, उन्होंने देखा मम्मी के 27 मिस कॉल पड़े हुए हैं। वो बोले

"आशी तुमने मम्मी का कॉल क्यूँ नहीं उठाया? ऊपर से म्यूट कर रखी थी"

"मुझे डर लग रहा था"

पापा ने उसको उठाकर गोद में बिठा लिया और बोले

"मेरा बच्चा डर गया था! तुम्हे अभी मूलचंद का ध्यान रखना

पड़ेगा, इसको चोट लगी हुई है"

उन्नत बोला

"हाँ पापा और कौवे फिर से इसपर हमला कर सकते हैं"

सबने देखा कि आकाश में कौवे मंडरा रहे थे, आशी को लगा कौवे फिर से हमला करने के मौके की तलाश में हैं, वह बोली

"पापा कौवों ने अभी तक हार नहीं मानी!"

"तो हमने कौन सी मान ली है"

आशी भरोसे से जगमगा कर हँसने लगी। उन्नत ने मूलचंद का सिर गोद में रख लिया और दोनों हाथों से सहलाने लगा तभी आशी भी आकर मूलचंद के बगल में बैठ गई, उसका सिर सहलाती हुये। पापा उसी सँकरे रास्ते से रिवर्स में कार ले जाने लगे। कार 2 बार बुरी तरह बगल के दीवारों में खरोंच खायी।

***

कौवों का सरदार इस हार से शर्मिन्दा था, उसने देखा कलूटा अपने टूटे पैर को सीधा करने की कोशिश कर रहा है। कुछ कौवे बेहोश पड़े हुए हैं। वह बोला

"काँव काँव, (सुनो, एक जरूरी बात कहनी है)"

कलूटा और सारे कौवों का ध्यान सरदार की तरफ जम गया। कलूटा बोला

"काँव काँव, (सरदार अभी हमला नहीं हो पायेगा, पैर पूरा डैमेज हो गया है)"

"काँव काँव, (नहीं, कुछ और बात है, सुन तो लो)"

"काँव काँव, (बोलो सरदार)"

"काँव काँव, (मेरे कारण कलूटा तुम्हारा एक पैर टूट गया है)"

"काँव काँव, (आपके कारण, क्या बात कर रहे हो सरदार, ये सब उनका किया...)"

"काँव काँव, (चुप रहो कलूटा, मेरी बात खत्म होने दो)"

"काँव काँव, (आप बोलो, लेकिन अपने को गुनाहगार मत मानों)"

"काँव काँव, (ठीक है, इस लड़ाई झगड़े में, हमारे प्यारे दोस्त काकोर और 2 साथी कौवे मारे गये। 13 साथी कौवे बेहोश हैं। बाकी साथी कौवे इतने थक गए हैं कि उनको खाना भी अब चोंच में डालकर खिलाना होगा। ये मेरे लिए बहुत बेइज्जती वाली बात है)"

"काँव काँव, (नहीं सरदार ऐसा नहीं है, आप बेइज्जती जैसा महसूस मत करो! लड़ाई झगड़े में तो ये होता रहता है)"

"काँव काँव, (नहीं, हम जानवर होकर दूसरे जानवर को परेशान कर रहे थे और वो इन्सान मूलचंद के लिये)"

"काँव काँव, (सरदार कुत्ता)"

"काँव काँव, (नहीं मूलचंद, नाम खराब नहीं करना चाहिए, मूलचंद को बचाने के लिये वो बच्चा जान पर खेल गया। ये है बड़ी बात)"

"काँव काँव, (सरदार आप दिल छोटा कर दिये, मैं तो सोच रहा था आप बोलोगे की फिर हमला करना है)"

"काँव काँव, (नहीं, और कोई हमला नहीं... कसम खाओ की कोई उनको तंग नहीं करेगा)"

"काँव काँव, (ठीक है, हम नहीं करेंगे)"

"काँव काँव, (मैंने तुम लोगों से भी पाप करवाया, मैं सरदार के लायक नहीं। मैंने सरदार बदलने का फैसला किया है)"

कलूटा और बाकी सभी कौवे, एक साथ "काँव–काँव, (ना ना)' बोले, मगर सरदार ने तय कर लिया था। उसने घूरकर सभी कौवों को देखा।

"काँव काँव, (मैं प्रायश्चित करूँगा, घूम घूम कर ये कहानी सभी कौवों को सुनाऊँगा)"

कलूटा बोला

"काँव काँव, (सरदार आप समझ नहीं रहे, हममें से कोई तैयार नहीं है इतना पेंचीदा सरदार का काम संभालने के लिये)"

"काँव काँव, (नहीं कलूटा, तुम समझदार भी हो और तैयार भी, कलूटा होगा आज से तुम्हारा नया सरदार)"

सभी कौवे काँव काँव करने लगे, जबकी कलूटा को ताज्जुब हुआ और दुःख भी, लेकिन सरदार को देखकर समझ गया की अब कुछ बोलने का फायदा नहीं। फिर भी वह बोला

"काँव काँव, (सरदार आप ये क्या बोल रहे हो?)"

"काँव काँव, (सबने मुझे चुना, उसकी इज्जत की। आज मैंने तुम्हें चुना। उसकी इज्जत करो)"

सरदार इतना बोल कर वहाँ से उड़कर चला गया। सारे कौवों ने काँव–काँव करके उसको विदा किया। कलूटा सारे कौवों के ईलाज और खाने पीने के इंतजाम में लग गया।

समाप्त